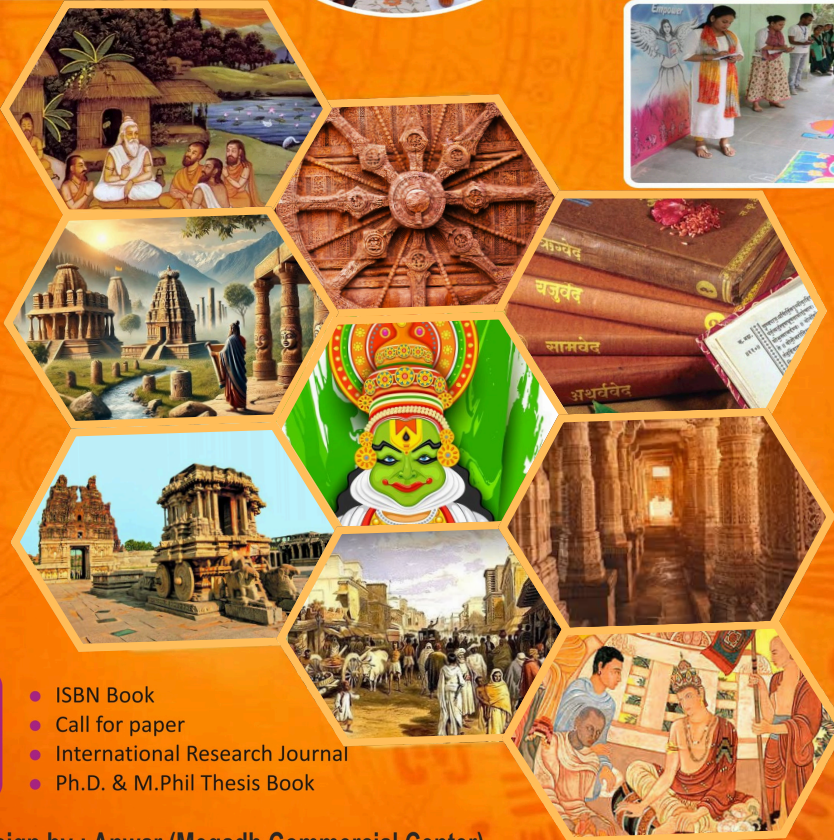




OUR SERVICES

- ISBN Book
- Call for paper
- International Research Journal
- Ph.D. & M.Phil Thesis Book

Design by : Anwar (Megadh Commercial Center)



**Worldwide International Inter
Disciplinary Research Journal**
Website : www.wildrj.com

Menoffice Address: Director : Mr. Tejas Rampurkar, Hyderabad.

Tuljai Niwas Ramkrishna Nagar, Near Ganpati Mandir

Vasmat Road Parbhani, Maharashtra (India)

Email : shrishprakashan2009@gmail.com / siddhiprakashan674@gmail.com

Mob : +91-9623979067



9 772454 790004 >

Quarterly Research Journal

(Arts - Humanities - Social Sciences - Sports, Commerce, Science, Education, Agriculture, Management,
Law, Engineering, Medical, Ayurveda, Pharmaceutical, Journalism, Mass Communication, Library Science Faculty's)

Worldwide International Inter Disciplinary Research Journal (A Peer Reviewed)

Vol. I ISSUE - CXVIII Year - 10, Jan. 2025

“शैक्षणिक संस्थाओं के परिवेश में भारतीयता”

एक दिवसीय राष्ट्रीय वेबिनार

शोध पत्र पुस्तिका

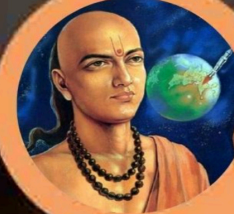
सत्र : 2024 - 25

ISSN : 2454-7905 MAH/NAN/10936/2015 SJIF 2025 - Impact Factor : 8.542

**Worldwide International
Inter Disciplinary Research Journal**

(A Peer Reviewed)

Vol. I ISSUE - CXVIII Year - 10, Jan. 2025



:: संपादक ::

ज्योति अलूने

आयोजक

शासकीय कन्या महाविद्यालय सीधी, म.प्र.

विशिष्ट वक्ता



विषय - भारतीय मूल्य, जैव विविधता और प्रकृति प्रेम
डॉ. विकास दवे
निदेशक, साहित्य अकादमी,
मध्य प्रदेश शासन



विषय - शिक्षा को लेकर भारत का विचार
डॉ. हर्षवर्धन सिंह तोमर
प्राध्यापक एवं इतिहासकार
राष्ट्रीय इंदिरा गांधी मुक्त विश्वविद्यालय, नई दिल्ली



विषय - नई संसद और भावी पीढ़ी को भारतीयता के संदेश
पवन कुमार शर्मा
कंसल्टेंट/ सीनियर जर्नलिस्ट,
संसद टीवी संसद भवन, नई दिल्ली



विषय - नवीन राष्ट्रीय शिक्षा नीति और समर्थ भारत की परिकल्पना
प्रो. जी. आर. गंगुले
अर्थशास्त्री
विशेष कर्तव्यस्थ अधिकारी
मंत्रालय, भोपाल



मुख्य संरक्षक
डॉ. आर.पी. सिंह
अतिरिक्त संचालक, रीवा



संरक्षक
डॉ. पी. के. सिंह
संजय गाँधी स्मृति शासकीय
स्वशासी स्नातकोत्तर
महाविद्यालय, सीधी



प्राचार्य
प्रो. ओ.पी. नामदेव
शासकीय कन्या
महाविद्यालय, सीधी

आयोजन समिति -



संयोजक
प्रो. ज्योति अलूरे
8962265063



सह संयोजक
डॉ. के.बी. रॉय
8085011304



आयोजन सचिव
प्रो. पुष्पेन्द्र कुमार शाह
7582065689



आयोजन सह-सचिव
प्रो. प्रतिमा कौल
8349672513

परामर्शदात्री समिति -



डॉ. राजेश कुमार साहू
IQAC समन्वयक



प्रो. प्रशान्त कुमार चौरसिया
प्रशासनिक अधिकारी



प्रो. देवेन्द्र कुमार सोनी
जनभागीदारी प्रभारी



ISSN: 2454 - 7905

SJIF Impact Factor: 8.542

**Worldwide International
Inter Disciplinary Research Journal**
A Peer Reviewed Referred Journal

Quarterly Research Journal

(Arts-Humanities-Social Sciences- Sports, Commerce, Science, Education, Agriculture, Management, Law, Engineering,
Medical-Ayurveda, Pharmaceutical, MSW, Journalism, Mass Communication, Library sci., Faculty's)

www.wiidrj.com

Vol. I ISSUE – CXVIII Year – 10 Jan. 2025

“शैक्षणिक संस्थाओं के परिवेश में भारतीयता”

एक दिवसीय राष्ट्रीय वेबिनार

शोध पत्र पुस्तिका

सत्र : 2024 - 25

प्रायोजक

उच्च शिक्षा विभाग भोपाल, मध्य प्रदेश



विद्या ददाति विनयं

आयोजक



शासकीय कन्या महाविद्यालय सीधी, (म.प्र.)

:: सह - संपादक ::

प्रशांत कुमार चौरसिया

विभागाध्यक्ष अर्थशास्त्र विभाग

शासकीय कन्या महाविद्यालय सीधी, म.प्र.

:: संपादक ::

ज्योति अलूने

विभागाध्यक्ष गृहविज्ञान विभाग

शासकीय कन्या महाविद्यालय सीधी, म.प्र.

Address for Correspondence

Editor in Chief : Mrs. Pallavi Laxman Shete

House No.624 - Belanagar, Near Maruti Temple, Taroda (KH), Nanded – 431605 (India - Maharashtra) **Email:** Shrishprakashan2009@gmail.com / umbarkar.rajesh@yahoo.com

Mob. No: +91-9623979067

Director : Mr. Tejas Rampurkar (For International contact only +91-8857894082)

Website: www.wiidrj.com

Worldwide International Inter Disciplinary Research (A Peer Reviewed Referred)

Worldwide International Inter Disciplinary Research (A Peer Reviewed Referred) is quarterly published journal for Research scholars, teachers, businessman and scientists to integrate disciplines in an attempt to understand the complexities in the current affairs.

We also believe that both researchers and practitioners can contribute their knowledge by translating understanding into action and by linking theory and practice. This would enhance the relevance and thought in various related fields.

This Journal expected to bring together specialists in the field of commerce, economics, management and industry from different part of the world to address important issues regarding commerce, management and economics. One of the objectives of the journal is to create dialogue between scholars of various disciplines.

The editor, editorial team and the publisher do not hold any responsibility for the views expressed in **Worldwide International Inter Disciplinary Research (A Peer Reviewed Referred)** or for any error or omission arising from it.

The journal will cover the following Faculties for All Subject:

• Arts/ Humanities / Soc. Sci. / Sports	• Engineering
• Commerce	• Medical /Ayurveda
• Science	• Law
• Education	• Journalism
• Agriculture	• Mass Communication- Library sci.
• Pharmaceutical	• Social Work
• Management	• Any Other

Director : Mr. Tejas Rampurkar (For International contact only +91-8857894082)

Printed by

Anupam Printers, Nanded.

Cost: Rs. 400/-

Editors of Worldwide International Peer Reviewed Journal are not responsible for opinions expressed in literature published by journal.

The views expressed in the journal are those of author(s) and not the publisher or the Editorial Board. The readers are informed, authors, editor or the publisher do not owe any responsibility for any damage or loss to any person for the result of any action taken on the basis of the work (c) The articles/papers published in the journal are subject to copyright of the publisher. No part of the publication can be copied or reproduced without the permission of the publisher.

Editorial Board

Principal Dr. Vasant Bhosle M.C. Member S.R.T.M.U.Nanded Ki.Kamaltai Jamkar Mahila Mahavidyalaya, Prbhani	Dr. Ashok Tiparse M.C. Member S.R.T.M.U. Nanded, Deglur Mahavidyalaya, Deglur
Dr. Rana Bora Assistant Professor, Deptt. Of Geography, Borholla College, Affiliated to Dibrugarh University, Assam	Dr. Ravindra M. Shinde Associate professor BOS Member, Savitribai Phule Pune University Head, Department of Geography, Dr. D. Y. Patil ACS College, Pimpri Pune
Dr. Dipak Gurav Assistant Professor, Deptt. Of Geography Arts and Commerce College, Nagthane Tq & Dist. Satara 415519 Maharashtra	Dr. M. P. Mankari BOS Chairman S.R.T.M.U.Nanded Head, Department of Geography, Maharashtra Udaygiri Mahavidyalaya, Udgir
Principal Dr. H.B. Rathod Gramin Mahavidyalaya Vasant Nagar, Mukhed	Dr. A. A. Kalgapure Head, Department of Geography, Shri Hawgiswami Mahavidyalaya, Udgir

Peer-Reviewed Committee

Dr. D. N. Mane Asst.Prof. & Head, Dept. of Geography, Mahatma Phule Mahvidyalaya, Ahmedpur	Dr. P. D. Chilgar Asst.Prof. & Dept. of Hindi, Mahatma Phule Mahvidyalaya, Ahmedpur
Dr. M. D. Kasab Asso.Prof. & Dept. of Marathi, Mahatma Phule Mahvidyalaya, Ahmedpur	Dr. P. B. Biradar Asst.Prof. & Head, Dept. of Sanskrit, Mahatma Phule Mahvidyalaya, Ahmedpur
Dr. P. P. Choukate Asst.Prof. & Head,Dept. of Pol.Science, Mahatma Phule Mahvidyalaya, Ahmedpur	Dr. S. G. Sasane Asst.Prof. & Head,Dept. of Sociology, Mahatma Phule Mahvidyalaya, Ahmedpur
Dr. B. K. More Asst.Prof. & Head,Dept. of History, Mahatma Phule Mahvidyalaya, Ahmedpur	Mr. A. C. Akade Asst.Prof. & Head Dept. of English, Mahatma Phule Mahvidyalaya, Ahmedpur
Dr. A. S. More Sports Director, Mahatma Phule Mahvidyalaya, Ahmedpur	Mr. P. M. Ingle Librarian Mahatma Phule Mahvidyalaya, Ahmedpur

Advisor Committee

Dr. D. D. Chaudhari Professor & Head Dept. of Economics, Mahatma Phule Mahvidyalaya, Ahmedpur	Dr. A. V. Mundhe Professor & Dept. of Marathi, Mahatma Phule Mahvidyalaya, Ahmedpur
--	--

शासकीय कन्या महाविद्यालय सीधी, (म.प्र.)



***** शुभकामना संदेश *****

महाविद्यालय द्वारा “शैक्षणिक संस्थानों के परिवेश में भारतीयता” विषय पर वेबिनार वर्तमान समय में शैक्षणिक संस्थानों एवं उसके माध्यम से पूरे समाज व देश में व्याप्त पश्चिमी सभ्यता के अंधानुकरण को रोकने एवं निजी सामाजिक, धार्मिक, सांस्कृतिक मान्यताओं को बरकरार रखते हुए भारतीय संस्कृति एवं भारतीय ज्ञान परम्पराओं की ओर मोड़ने का सार्थक एवं सराहनीय प्रयास है जिसकी मैं भूरी - भूरी प्रशंसा करता हूँ तथा आयोजकों एवं सम्पूर्ण महाविद्यालय परिवार को साधुवाद अर्पित करता हूँ। आशा करता हूँ कि महाविद्यालय परिवार के इस प्रयास के दूरगामी परिणाम होंगे और भविष्य में शैक्षणिक संस्थानों में भारतीयता से सुशिक्षित, सुसंस्कृत, भारतीय परम्पराओं में पारंगत नागरिक समाज व देश को समर्पित कर सकेगा।

विद्या ददाति विनयं

प्रो. ओमप्रकाश नामदेव

(प्राचार्य)

शासकीय कन्या महाविद्यालय सीधी, (म.प्र.)

शासकीय कन्या महाविद्यालय सीधी, (म.प्र.)



***** शुभकामना संदेश *****

शैक्षणिक संस्थान न केवल ज्ञान के मंदिर होते हैं बल्कि मूल्यों व संस्कृति को समृद्ध भी करते हैं। मध्यप्रदेश शासन उच्च शिक्षा विभाग से प्रकाशित वह “शैक्षणिक संस्थानों के परिवेश में भारतीयता” पर आधारित विशेषांक पाठकों को भारतीयता के मूलभूत तत्वों को समझने के साथ ही उन्हें राष्ट्रीय शिक्षा नीति - 2020 जैसी नवाचारी व आधुनिक शिक्षा दृष्टि के साथ जोड़ने का अवसर प्रदान करता है।

आशा करता हूँ कि शैक्षणिक संस्थानों में भारतीयता पर आधारित यह विशेषांक समस्त पाठकों को भारतीयता के प्रति जहां जागरूक करेगा वहीं हमें इस दिशा में आगे बढ़ने हेतु प्रेरित करेगा। इस शोध पत्रिका के प्रकाशन हेतु उच्च शिक्षा विभाग का आभार व्यक्त करता हूँ तथा अपने महाविद्यालय की पूरी टीम को बहुत - बहुत शुभकामनाएँ।

विद्या ददाति विनयं

प्रशांत कुमार चौरसिया

प्रशासनिक अधिकारी

शासकीय कन्या महाविद्यालय सीधी, (म.प्र.)

शासकीय कन्या महाविद्यालय सीधी, (म.प्र.)



***** संपादक की कलम से *****

प्राचीन काल से ही भारतीय परंपरा यह मानती रही है कि शिक्षा या ज्ञान से मनुष्य का चरित्र और व्यक्तिवाचक उत्तम बनता है, तभी उसे सच्ची शिक्षा कहा जा सकता है। जो शिक्षा किसी व्यक्ति, शिक्षार्थी के भीतर मानवता और आध्यात्मिकता के स्तर को बढ़ाने में सक्षम नहीं है। यद्यपि वह बुद्धि और कौशल के स्तर को बढ़ा सकती है, उसे भारत में विधा या वास्तविक शिक्षा नहीं माना जाता है।

प्राचीन भारत में वैदिक शिक्षा प्रणाली महान उद्देश्य और लक्ष्य जो 'आत्म - साक्षात्कार के पर के हित है, 'पराविधा, या आध्यात्मिक ज्ञान की संस्कृति पर जोर देते हैं, लेकिन अपार विद्या या भौतिक शान की संस्कृति को बिल्कुल भी अनदेखा नहीं करते हैं। इस प्रकार राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) 2020 भारत के पारंपरिक ज्ञान को संदर्भित करती है, जो अत्यंत प्रासंगिक है। इस सदी में ज्ञान शक्ति बनने के लिए जरूरी है कि हम अपने विरासत को समझे और दुनिया को कम करने का भारतीय तरीका सिखाएं। शिक्षा मंत्रालय ने भारतीय ज्ञान प्रणाली (IKS) के सभी पहलुओं पर अनुसंधान को बढ़ावा देने तथा आने के अनुप्रयोग के लिए भारतीय ज्ञान परंपरा के ज्ञान को संरक्षित और प्रसारित करने की दृष्टि से 2020 में भारतीय ज्ञान प्रणाली प्रकोष्ठ की स्थापना भारत के स्वर्णिम भविष्य के लिए महत्वपूर्ण कदम है।

ज्योति अलूने

सहायक प्राध्यापक (गृहविज्ञान)

शासकीय कन्या महाविद्यालय सीधी, (म.प्र.)



INDEX

Sl. No.	Titles of the papers	Name of Author	Page No.
01.	Greeting Messages	प्रो. ओमप्रकाश नामदेव, प्रशांत कुमार चौरसिया, ज्योति अलूने	IV – VI
02.	New Education Policy 2020 Importance of Practical and Skills in Quality Education	Anand Bhalerao	01 – 06
03.	Agricultural development towards sustainability Agricultural and Environment	Dr. Deepika Sethe	07 – 14
04.	New Education Policy 2020 and the Future of India	Kiran Alune	15 – 20
05.	राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020 के अवसर एवं चुनौतियाँ	डॉ. के. पी. आज़ाद, डॉ. शिवबिहारी कुशवाहा	21 – 24
06.	शैक्षणिक संस्थाओं के परिवेश में भारतीयता	ज्योति अलूने, डॉ. साधना मंडलोई	25 – 35
07.	भारतीय ज्ञान परंपरा की राष्ट्रीय शिक्षा नीति में प्रासंगिकता	डॉ. प्रतिमा कौल	36 – 40
08.	नवीन राष्ट्रीय शिक्षा नीति और भारत का भविष्य	डॉ. राजेश कुमार साहू	41 – 46
09.	व्यक्तित्व विकास में माता-पिता की भूमिका का अध्ययन	डॉ. उपेन्द्र सिंह	47 – 54
10.	गुरु शिष्य मर्यादा की महान परंपरा	डॉ. गूंजा पंवार, अनवर	55 – 62
11.	प्राकृतिक संसाधन संरक्षण प्रबंध	डॉ. छाया हार्डिया, प्रियंका वर्मा	63 – 65
12.	नैतिक मूल्यों के संरक्षक हेतु आवश्यक उपायों का अध्ययन	डॉ. ममता गोयल (गौनेकर), डॉ. विजय गौनेकर	66 – 69
13.	नैतिक चरित्र का निर्माण और राष्ट्र का उत्थान	प्रो. शैलेन्द्र प्रताप लोखंडे	70 – 74
14.	राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का विश्लेषणात्मक अध्ययन (उच्च शिक्षा के लिए खास)- भारत देश के उत्थान में	मयंक कुमार जैन	75 – 80
15.	राष्ट्रीय महत्व के पर्यावरणीय मुद्दे (ENVIRONMENTAL ISSUES OF NATIONAL IMPORTANCE)	डॉ. मगनलाल एस. मोलिया	81 – 90
16.	नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति और भारत का भविष्य	प्रो. सुरेखा बड़ोले	91 – 97
17.	गुरु शिष्य मर्यादाओं की महान परम्परा (गुरुकुल)-एक अध्ययन	सुनैना बाली	98 – 101
18.	भारतीय ज्ञान परंपरा, हमारी धरोहर	विवेक कुमार पाठक	102 – 107

New Education Policy 2020: Importance of Practical and Skills in Quality Education

Anand Bhalerao

Ph.D. Research Scholer

Tata Institute of Social Sciences, Mumbai

Abstract: -

The New Education Policy 2020, introduced on July 29, 2020, is the first education policy of the twenty-first century. The Government of India introduced this policy to promote higher education and quality of education. After the country's independence, the education system and the outreach of departments were centralized in some courses, and due to this, there was a great need to change the system and the quality of education. It also emphasizes the problems and difficulties facing India's current higher education system. The higher education system in India is to be modernized as part of NEP 2020. The NEP 2020 will significantly advance Indian higher education. There is a fundamental need to develop education based on practice, and skilled-based education is needed to sustain the Global Education patterns. The NEP 2020 is a very forward-thinking document with a firm understanding of the current socioeconomic landscape and the potential to tackle future challenges—accordingly, the changes promoted in the policy and the target set by the government till 2030.

So, the government framed some fundamental changes in earlier policy and new education policy.

Keywords: New Education Policy, Higher Education

I. Introduction:

The National Policy on Education (NPE) is a policy formulated by the Government of India to promote education among India's people. The policy covers elementary education to colleges in both rural and urban India. Prime Minister Indira Gandhi promulgated the first NPE by the Government of India in 1968, the second by Prime Minister Rajiv Gandhi in 1986 and the third by Prime Minister Narendra Modi in 2020. NEP 2020 strongly emphasizes five pillars: accessibility, affordability, equity, quality, and accountability. The focus of NEP 2020 is to ensure that everyone has access to high-quality education and opportunities for lifelong learning.

The government always emphasizes the Education section of the First Five Year Plan. It fixes the amount to provide the quality of education, better facilities, and infrastructure to students. As we know, those working in the education field fix the levels of education standards; accordingly, the government sets up different boards and different types of universities and establishes the apex body for promoting education, the University Grants Commission. For the better function of the education setup up, the separate ministry is there at both levels, Central and State, though they control, execute, and promote the education. The first NPE was proposed and disseminated in 1968 by the Government of India, the second policy was in 1986, and the third central reformatory policy was in 2020; the government focuses on the promotion of education through form the different Commissions and Committees, and after that they make changes as per the suggestions of the Commissions and Committees. In 2010, the Government of India launched the Mid-day Meal as a promotional activity to increase the attendance of the students in primary School till

eighth standard. In 2009, the government came up with new acts and programs, the Right to Education Act and the University Act 2016, at the Centre and State levels.

For the Global education competition, the government came up with the National Educational Policy (NEP-2020) in India. At the international level there many changes take place in the field of education and according to the Government of India also change the policy and bring a policy called New Education 2020. At the primary level of the implementation of policy and program, there are some challenges, and hence the goal to lift the country as a developed country by supporting developmental imperatives according to the 4th goal of the United Nations Sustainable Development Goals (SDGs), which aims to "ensure inclusive and equitable quality education and promote lifelong learning opportunities for all" by 2030. On the basic formula, the government started working on education for all and started working on those issues in the country at a mass level.

The aims of NEP 2020-

The aim must be for India to have an education system by 2040 that is second to none, with equitable access to the highest-quality education for all learners regardless of social or economic background. Address the many growing developmental imperatives of our country.

The objective of NEP 2020-

To increase the gross enrolment ratio (GER) of school education enrolment and higher and professional education enrolment to increase from 28% and 05% to 50% and 20%, respectively, by 2030, using radical changes in the existing education policies and governance systems by introducing accountability in each stakeholder.

A student-centric approach will develop to replace the current teacher-centric approach, in which the students can select the subjects they want to learn. Considering India's rich culture and language reputation, Sanskrit can offer at all Schools and higher education levels. Rather than compartmentalization of humanities, art and sciences and between 1academic and vocation, education is indeed a revolutionary shift.

II. Salient Features of NEP related to Higher Education

The new higher education regulatory structure will ensure that separate, autonomous, and empowered bodies perform distinct administrative, accreditation, financing, and academic standard-setting roles. These four structures will be established as four independent verticals within a single umbrella institution, India's Higher Education Commission (HECI). There are a lot of reforms and new developments which NEP has introduced in the higher education sector. Some of the salient features are:

- ❖ **Single Regulatory Body for Higher Education:**
The NEP aims to establish the Higher Education Commission of India, which will be the single regulatory body except for legal and medical education.
- ❖ **Multiple entry and exit program:**
Multiple entry and exit options will exist for those who wish to leave the course in the middle. Their credits will transfer through the Academic Bank of Credits.
- ❖ **Tech-based option for adult learning through apps and TV channels:**
Quality technology-based options for adult learning, such as apps, online courses/modules, satellite-based TV channels, online books, ICT-equipped libraries, adult education centres, etc., will be developed.
- ❖ **E-courses to be available in regional languages:**
Technology will be part of education planning, teaching, learning, assessment, teacher, School, and student training. The e-content is to be available in regional languages, starting with eight major

languages – Kannada, Odia, and Bengali, among others to join the e-courses available in Hindi and English.

❖ **Foreign universities to set campuses in India:**

A new law will facilitate the world's top 100 foreign universities to operate in India. According to the HRD Ministry document, "such (foreign) universities will be given special dispensation regarding regulatory, governance, and content norms on par with other autonomous institutions of India."

❖ **The common entrance exam for all colleges:**

The common Entrance exam for all higher education institutes is to be held by the National Testing Agency (NTA). The exam will be optional.

A Higher Education Council of India (HECI) will be set up to regulate higher education. The council's goal will be to increase the gross enrolment ratio. The HECI will have four verticals:

a) National Higher Education Regulatory Council (NHERC), to regulate higher education, including teacher education, while excluding medical and legal education.

b) National Accreditation Council (NAC), a "meta-accrediting body."

c) The Higher Education Grants Council (HEGC) funds and finances universities and colleges. This will replace the existing National Council for Teacher Education, All India Council for Technical Education and the University Grants Commission.

d) General Education Council (GEC), to frame "graduate attributes", namely the learning outcomes expected. It will also be responsible for framing a National Higher Education Qualification Framework (NHEQF). The National Council for Teacher Education will come under the GEC as a professional standard-setting body (PSSB).

Importance of Practical and Skills Quality Education

1. Practical

During the practice, students may complete their practical's concurrently, or block based. Students will get real experience from morning to sleeping time or the end of the activity assigned to them or work hours. When the students are in the field or workplace, they realize the situation written in the books and how it takes place on an actual basis. At the time practice, they will get real experience, psychology, attitude, problems, hierarchy systems, different types of mentality of the community members, natural dissenters, artificial disasters and so many issues and problems they face and get some insights into how to tackle the situations in the present which is written in the books. From that point, they start to find the proper ways, ideas, communication skills, knowledge sharing, interpretation skills, how to handle the situations, control emotion, principles of acceptance, use of available resources, and so many ideas during the practical. So, the most practical and essential tool is supporting the promotion of NEP 2020.

2. Curricular Integration of Essential Subjects, Skills and Capacities

While students must have much flexibility in choosing their curricula, specific subjects, skills and capacities should be learned by all students to become good, successful, innovative, adaptable, and productive human beings in today's rapidly changing world. In addition to proficiency in languages, these skills include: scientific temper and evidence-based thinking; creativity and innovativeness; sense of aesthetics and art; oral and written communication; health and nutrition; physical education, fitness, wellness, and sports; collaboration and teamwork; problem-solving and logical reasoning; vocational exposure and skills; digital literacy, coding and computational thinking; ethical and moral reasoning; knowledge and practice of human and Constitutional values; gender sensitivity; Fundamental Duties; citizenship skills and values; knowledge of India; environmental awareness including water and resource

conservation, sanitation and hygiene; and current affairs and knowledge of critical issues facing local communities, States, the country and the world.

3. Experiential learning

In all stages, experiential learning will be adopted, including hands-on learning, arts-integrated and sports-integrated education, story-telling-based pedagogy, among others, as standard pedagogy within each subject, and with explorations of relations among different subjects. To close the gap in achievement of learning outcomes, classroom transactions will shift towards competency-based learning and education. The assessment tools (including assessment “as”, “of”, and “for” learning) will also be aligned with the learning outcomes, capabilities, and dispositions as specified for each subject of a given class.

Sports integration is another cross-curricular pedagogical approach that utilizes physical activities, including Indigenous sports, in pedagogical practices to help develop skills such as collaboration, self-initiative, self-direction, self-discipline, teamwork, responsibility, citizenship, etc. Sports-integrated learning will be undertaken in classroom transactions to help students adopt fitness as a lifelong attitude and achieve the related life skills and fitness levels as envisaged in the Fit India Movement.

4. Reimagining Vocational Education

The 12th Five-Year Plan (2012–2017) estimated that only a tiny percentage of the Indian workforce aged 19–24 (less than 5%) received formal vocational education. In contrast, in countries such as the USA, the number is 52%; in Germany, 75%; and in South Korea, it is as high as 96%. These numbers only underline the urgency of the need to hasten the spread of vocational education in India.

One of the primary reasons for the small number of students receiving vocational education is that vocational education has mainly focused on Grades 11–12 and dropouts in Grades 8 and upwards. Moreover, students passing out from Grades 11–12 with vocational subjects often did not have well-defined pathways to continue their chosen higher education vocations. This led to a complete lack of vertical mobility for students from the vocational education stream. This issue was only recently addressed by announcing the National Skills Qualifications Framework (NSQF) in 2013.

5. Empower students through flexibility in course choices

Students will be given increased flexibility and choice of subjects to study, particularly in secondary School - including subjects in physical education, arts and crafts, and vocational skills – to design their study paths and life plans. Holistic development and a wide choice of subjects and courses year to year will be the new distinguishing features of secondary school education. There will be no rigid separation among 'curricular,' 'extracurricular,' or 'co-curricular,' among 'arts,' 'humanities', and 'sciences,' or between 'vocational' or 'academic' streams. Subjects such as physical education, arts and crafts, and vocational skills in addition to science, humanities, and mathematics will be incorporated throughout the school curriculum, with a consideration for what is interesting and safe at each age.

6. Multilingualism and the power of language

It is well understood that young children learn and grasp nontrivial concepts more quickly in their home language/mother tongue. The home language is usually the same as the mother tongue or is spoken by local communities. However, at times, in multi-lingual families, a home language can be spoken by other family members, who may sometimes be different from the mother tongue or local language. Wherever possible, the medium of instruction until at least Grade 5, but preferably till Grade 8 and beyond, will be the home language/mother tongue/local language/regional language. After that, the home/local language shall continue to be taught as a language wherever possible. Both public and private schools will follow this. High-quality textbooks, including science textbooks, will be made available in the home

language/mother tongue. All languages will be taught with high quality to all students; a language can be something other than the medium of instruction for it to be taught and learned well.

Concerted curricular and pedagogical initiatives, including the introduction of contemporary subjects such as Artificial Intelligence, Design Thinking, Holistic Health, Organic Living, Environmental Education, Global Citizenship Education (GCED), etc. at relevant stages will be undertaken to develop these various essential skills in students at all levels.

7. Professional Education

Preparation of professionals must involve an education in the ethics and importance of public purpose, an education in the discipline, and an education for practice. It must centrally involve critical and interdisciplinary thinking, discussion, debate, research, and innovation. For this to be achieved, professional education should not take place in the isolation of one's specialty.

Professional education thus becomes an integral part of the overall higher education system. Stand-alone agricultural universities, legal universities, health science universities, technical universities, and stand-alone institutions in other fields shall aim to become multidisciplinary institutions offering holistic and multidisciplinary education. All institutions offering either professional or general education will aim to evolve organically into institutions/clusters offering a seamless and integrated manner by 2030.

8. Technology Use and Integration

India is a global leader in information and communication technology and other cutting-edge domains, such as space. The Digital India Campaign is helping to transform the entire nation into a digitally empowered society and knowledge economy. While education will play a critical role in this transformation, technology itself will play an essential role in improving educational processes and outcomes; thus, the relationship between technology and education at all levels is bi-directional. Given the explosive pace of technological development allied with the sheer creativity of tech-savvy teachers and entrepreneurs, including student entrepreneurs, it is inevitable that technology will impact education in multiple ways, only some of which can be foreseen at present. New technologies involving artificial intelligence, machine learning, blockchains, smart boards, handheld computing devices, adaptive computer testing for student development, and other forms of educational software and hardware will not just change what students learn in the classroom but how they learn, and thus these areas and beyond will require extensive research both on the technological as well as educational fronts

9. Reduce curriculum content to enhance essential learning and critical thinking

Each subject's curriculum will be reduced to its core essentials to make space for critical thinking and more holistic, inquiry-based, discovery-based, discussion-based, and analysis-based learning. The mandated content will focus on critical concepts, ideas, applications, and problem-solving. Teaching and learning will be more interactive; questions will be encouraged, and classroom sessions will regularly contain more fun, creative, collaborative and exploratory activities for students for deeper and more experiential learning.

IV. Conclusion

Overall, practical and skilled education will sustain the New Education Policy 2020. Quality education and practical and skill-based education will create self-confidence and self-motivation within the youth to get employment. The National Education Policy of 2020 is working towards this goal by implementing creative policies to raise higher education quality, affordability and supply while opening it up to the private sector and enforcing tight quality controls in all higher education institutions.

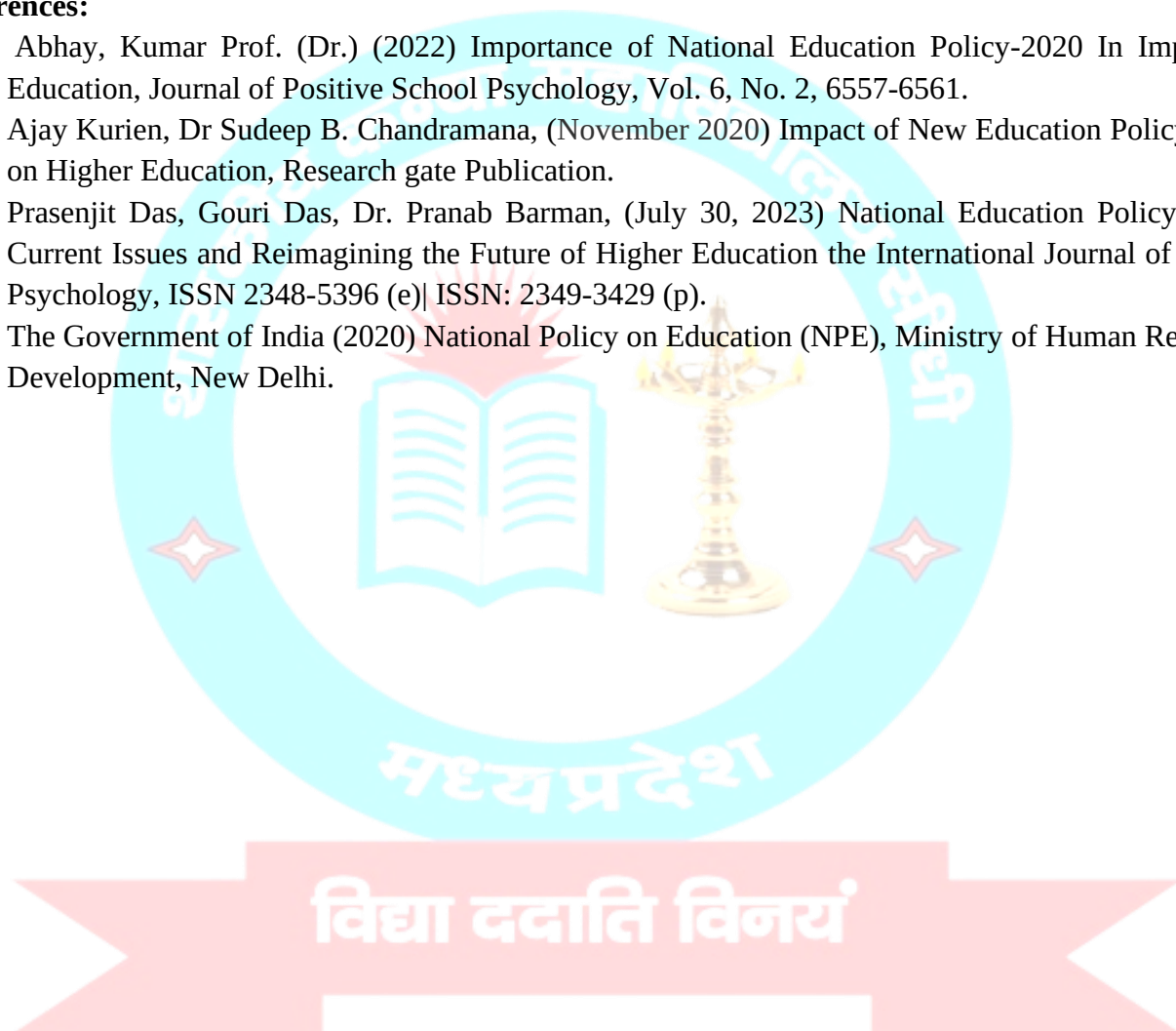
The government is trying to just come out of the mass unemployment problem and reduce the level of unemployment all over the country. During higher education, the Government could give quality

education and skilful education to the youth, and they never demand employment from the government; after getting a quality education, practical education, and skill-full education, they start some self-employment, and the number may reduce. They start small-scale businesses, start-ups, small shops, and glossary shops, and so many options will open for them after getting the education. Then, they deserve the skill to complete activities.

Overall, the NEP 2020 tackles the need to train experts in various fields, from agriculture to artificial intelligence. India needs to prepare for the future. NEP 2020 provides the door for many young aspirant pupils to have the appropriate professional skills. The NEP 2020 is a crucial turning point for higher education. It will only be revolutionary with effective and constrained implementation.

References:

1. Abhay, Kumar Prof. (Dr.) (2022) Importance of National Education Policy-2020 In Imparting Education, Journal of Positive School Psychology, Vol. 6, No. 2, 6557-6561.
2. Ajay Kurien, Dr Sudeep B. Chandramana, (November 2020) Impact of New Education Policy 2020 on Higher Education, Research gate Publication.
3. Prasenjit Das, Gouri Das, Dr. Pranab Barman, (July 30, 2023) National Education Policy 2020: Current Issues and Reimagining the Future of Higher Education the International Journal of Indian Psychology, ISSN 2348-5396 (e)| ISSN: 2349-3429 (p).
4. The Government of India (2020) National Policy on Education (NPE), Ministry of Human Resource Development, New Delhi.



Agricultural development towards sustainability Agricultural and Environment

Dr. Deepika Sethe

Assistant Professor

Hod Department of Home Science

(PMCOE), Swami Vivekananda Govt. PG College, Harda (M.P.)

Abstract: -

Capitalizing on the most recent worldwide estimates of the impacts of climate change on agricultural production, this paper assesses the socio-economic effects of climate change for India and subcontinents through 2080. The results suggest that the aggregate impacts of agricultural damages caused by climate change on the global economy are moderate. However, the uneven distribution of productivity losses across global regions would bring significant structural adjustments in worldwide agricultural production and trade, ultimately leaving the developing world as a net loser. With the anticipated declining agricultural share in the economy, a reduction in agricultural productivity would have small, but non-negligible negative impacts on India and subcontinents economic output. However, the expected increase of crop import dependence in the coming decades would make most India and subcontinents economies suffer more welfare losses through deteriorated terms of trade. For India and subcontinents to cope with the potential agricultural damages arising from the expected changes in climate the region must concentrate on reversing its current trend of declining agricultural productivity. Environment interactions and identifying key aspects that distinguish favourable agricultural practices was the first step in determining what it is needed to measure with a new set of indicators. Climate change is an increasingly significant global challenge, and its negative impacts have been already felt in some regions of the world. Agricultural productivity growth has been, and will remain to be, the most important line of defence for global food security.

Keywords: Agriculture, climate change, crop productivity, global impact, environment

1. Introduction

Recent scientific research has concluded that the increased atmospheric concentration of greenhouse gases will have significant impacts on the Earth's climate in the coming decades. Assuming no emission control policies, the Intergovernmental Panel on Climate Change (IPCC) predicted that average global surface temperatures will increase by 2.8°C on average during this century, with best guess increases ranging from 1.8 and 4.0°C (IPCC 2007a). Global warming would alter natural climate and environmental systems in many ways, leading to an increased frequency of extreme weather events, rising sea levels, a reversal of ocean currents, and changes in precipitation patterns. These changes could impact social-economic activities, with serious implications for the well-being of humans long into the future. Agriculture is one of the most vulnerable sectors to the anticipated climate change. Despite the technological advances in the second half of 20th century, including the Green Revolution, weather and climate are still key factors in determining agricultural productivity in most areas of the world. The predicted changes in temperatures and rainfall patterns, as well as their associated impacts on water availability, pests, disease, and extreme weather events are all likely to affect substantially the potential of agricultural production.

Literature on the economics of climate change suggests that although global crop production may be boosted slightly by global warming in the short term (before 2030), it will ultimately turn negative over

the longer term (Bruinsma 2003; IPCC 2007b). Moreover, the impact of climate change on agricultural production is unlikely to be evenly distributed across regions. Low latitude and developing countries are expected to suffer more from the agricultural effects of global warming, reflecting their disadvantaged geographic location, greater agricultural share in their economies, and limited ability to adapt to climate change.

In contrast, crop production in high latitude regions will generally benefit from climate change. In a recent global comprehensive estimate for over 100 countries, Cline (2007) predicted that global agricultural productivity will fall by 15.9% in the 2080s if global warming continues unabated, with developing countries experiencing a disproportionately larger decline of 19.7%. Agriculture plays an important role in India and subcontinents, contributing to more than 10% of gross domestic product (GDP) in most regional economies, and providing jobs for over one third of the working population in the region. As is the case in other developing regions of the world, nearly three fourths of the poor in India and subcontinents reside in rural areas, and a large majority of them are dependent on agriculture. Consequently, agricultural development has important implications for the reduction of poverty in India and subcontinents. Moreover, the increased exposure of India and subcontinents agriculture sector to international trade means that any climate change-related shocks in international markets for agricultural products will be easily transmitted to the region through trade channels.

This paper used a dynamic computable general equilibrium (CGE) model of the global economy to investigate the potential impacts of climate change on agriculture and the world economy, with a special focus on India and subcontinents. The CGE model is an economy-wide model that elucidates interactions among industries, consumers and governments across the global economy. The detailed region and sector disaggregation of the model makes it possible to capture the spillover effects of sector- or country-specific shocks. Climate changes impact an economy directly through the effects on that economy's agricultural outputs and indirectly through changes in the agricultural production of other countries.

The role of productivity growth in adapting to the climate change was also examined. Section 2 of this paper discusses the relationship between climate change and agricultural production by reviewing the existing literature in which various modelling approaches have been employed to estimate the impacts of climate change on agricultural productivity. We then describe the specifications of the CGE model used in this study in Section 3. Section 4 assesses the impacts of climate change-induced global agricultural productivity decline on agricultural production, trade and macro-economy. The final section offers conclusions.

2. Climate Change and Agriculture

2.1 State of the environment

Climate can affect agriculture in a variety of ways. Temperature, radiation, rainfall, soil moisture and carbon dioxide (CO₂) concentration are all important variables to determine agricultural productivity, and their relationships are not simply linear. For example, the modelling studies discussed in recent IPCC reports indicate that moderate to medium increases in mean temperature (1–3°C), along with associated CO₂ increases and rainfall changes, are expected to benefit crop yields in temperate regions. However, in low-latitude regions, moderate temperature increases (1–2°C) are likely to have negative yield impacts for major cereals. Warming of more than 3°C would have negative impacts in all regions (IPCC 2007b). The interaction of temperature increases and changing rainfall patterns determines the impact of climate change on soil moisture. With rising temperatures, both evaporation and precipitation are expected to increase. The resulting net effect on water availability would depend on which force is more dominant.

The IPCC reports project that by the middle of the 21st century, water availability will increase because of climate change at high latitudes and in some wet tropical areas and decrease over some dry regions at mid-latitudes and in the dry tropics (IPCC 2007b). Some regions that are already drought-prone may suffer more severe dry periods. Increases in atmospheric CO₂ concentration can have a positive impact on crops yields by stimulating plant photosynthesis and reducing the water loss via plant respiration. This carbon fertilization effect is strong for so-called C₃ crops, such as rice, wheat, soybeans, fine grains, legumes, and most trees, which have a lower rate of photosynthetic efficiency. For C₄ crops like maize, millet, sorghum, sugarcane, and many grasses, these effects are much smaller. Other factors such as a plant's growth stage, or the application of water and nitrogen, can also impact the effect of elevated CO₂ on plant yield. Recent research based on experiments with the free air concentration enrichment method suggests a much smaller CO₂ fertilization effect on yield for C₃ crops and little or no stimulation for C₄ crops, in comparison with past estimates from studies conducted under enclosed test conditions (Long et al. 2005, 2006).

Quantitative estimates of the agricultural impact of climate change have predominantly relied on three approaches: crop simulation models, agro-ecological zone (AEZ) models, and cross-section (Ricardian) models. Cline (2007) observed that AEZ studies tend to attribute excessive benefits to the warming of cold high-latitude regions, thereby overstating global gains from climate changes. Cline (2007) used both Ricardian statistical models and crop models to develop a set of consensus agricultural impact estimates through the 2080s for over 100 countries. He first developed geographically detailed projections for changes in temperature and precipitation through the 2080s based on a baseline emission projection from the IPCC's Emission Scenarios. Table 1 presents the major results of Cline's estimates.

Table 1: Projected Climate Changes and Their Impacts on Agricultural Productivity in the 2080s

Climate variables	Farm Land area	Farm area
Base levels		
Temperature (°C)	16.2	13.15
Precipitation (mm per day)	2.2	2.44
By 2080s		
Temperature (°C)	18.1	20.63
Precipitation (mm per day)	2.33	2.51
Impacts on agricultural productivity (%)	Without carbon fertilization effect	With carbon fertilization effect
World (output weighted)	-15.9	-3.2
Industrial countries	-6.3	-7.7
Developing countries	-21	-9.1

Africa	-27.5	-16.6
Asia	-19.3	-7.3
Middle East and North Africa	-21.2	-9.4
Latin America	-24.3	-12.9

Source: Cline (2007)

2.2 Towards a definition of sustainable agriculture

The adopted basic template for sustainable farming practices is the careful management of the organic matter to keep its content in the soil according to biological parameters of sustainability; the physical protection of the soil against erosive factors (rainfalls and wind) by a protective vegetal cover; and the copying of natural biodiversity through crop associations and crop rotations (which are in time crop associations and more compatible with mechanization). In addition, it includes the management of which would support biodiversity and ecosystem service provisions, such as pollination, pest control, microclimate regulation and scenic beauty.

3. The Model

The model used in this study was a dynamic, CGE model of the global economy. It was built on the LINKAGE model developed at the World Bank (van der Mensbrugghe 2005; Anderson, Martin, and van der Mensbrugghe 2006). This section describes the major features of the model. Production in each economic sector was modelled using nested constant elasticity of substitution (CES) functions and constant returns to scale was assumed.

In the natural resource sectors of forestry, fishing, and mining, a sector-specific factor was introduced into the production function to reflect the resource constraints. These sector-specific factors were modelled using upward sloping supply curves. For other primary factors, stocks were fixed for any given year. The numeraire of the model was defined as the manufactured export index of the high-income countries, which was held fixed. The model was recursive dynamic, beginning with the base year of 2004 and being solved annually through 2080. Dynamics of the model were driven by exogenous population and labour growth and technological progress, as well as capital accumulation, which was driven by savings.

4. Simulations and Results

A baseline scenario from 2004–2080 was constructed under the assumption that there would be no climate change impacts on economic activities. The baseline scenario provided a reference growth trajectory for examining the effects of climate change-induced agricultural damages. In the baseline, GDP growth up to 2013 was exogenous, derived from the International Monetary Fund's (IMF) medium baseline projection. For each region, an economy-wide, labour-augmented productivity grew endogenously over the simulation period of 2005–2013 to match the pre-specified GDP growth path. The share of agricultural value added, in volume terms, would decline from nearly 10% in 2004 to 3.8% in 2080 in India and subcontinents.

In the counterfactual scenario with agricultural damages, it was assumed that productivity in four crop agricultural sectors (paddy rice, wheat, other grains, and other crops) would be lower than that in the baseline scenario because of the projected changes in climate. Crop productivity shocks, which were Cline's estimates without carbon fertilization effect as reported in the second column of Table 1, were imposed gradually over 2009–2080. The crop productivity shocks were assumed to be uniform across sectors. The

impacts of climate change were assessed by a comparison of the counterfactual scenario with the baseline scenario.

5. Global Impacts

Table 2 presents the simulated impacts on global welfare, GDP, and agricultural production, which are reported as percentage deviation from the “no damage” baseline. The table indicates that global real GDP would decline by 1.4% by 2080 because of the predicted impacts of climate change on agricultural productivity. India would suffer the largest GDP loss of 6.2%, followed by Sub-Sahara Africa, other South Asian countries, and Central Asia. Although the estimated productivity losses from Cline’s study were modest for the overall Central Asia region, high agricultural shares in some of the region’s national economies account for the relatively large loss of GDP in Central Asia.

Table 2: Impact on Global Welfare and Production, 2080 (% change)

	GDP	Welfare (EV as % of GDP)	Terms of	Sectoral				Output		Livestock	Processed food
			Trade	Crop	Agriculture						
					Paddy rice	Wheat	Other grains	Other crops			
World	-1.4	-1.3		-7.4	-9.1	-6.8	-7.8	-7.3		-5.9	-4.6
Australia	-0.3	-0.6	-0.4	-42.9	-12.8	-66.7	-42.5	-40.6		7.1	-0.2
New Zealand	0.2	1.5	2.7	140.6	31.4	38.2	12	156.2		-11	-3.8
Japan	0	-0.2	-0.4	1.9	-4.7	6.8	43.7	3.5		0.5	2.2
PRC	-1.3	-1.1	-0.2	-0.1	-0.5	4.2	-0.5	-0.2		-1.9	-3.6
Korea	-0.2	-0.6	-0.5	-5.1	-4.8	0.4	-10.6	-5.6		-1.4	-0.4
Southeast Asia 6*	-1.4	-1.7	-0.4	-17.3	-16.5	-36.3	-12.6	-17.9		-1.4	-4.5
India	-6.2	-5.2	-1.8	-24	-11.5	-24.7	-36.7	-24.1		-19.1	-29.1
Rest of South Asia	-1.9	-2.7	-4.1	-19.5	-16	-29	-24.6	-19.2		-3.1	-10.8
Central Asia	-1.9	-1.5	1.8	49.7	12.8	66.9	5.1	48.9		-10.9	-0.5
Rest of Asia	-0.4	-0.7	-0.4	-18.4	-20.8	-46.9	-40.5	-14.3		1	-5.2
Canada	-0.2	0.2	0.8	22.1	0.9	17.7	5.1	34.6		-15.3	-1.6
US	-0.1	0	0.4	5.1	21.3	10.5	0.9	6.9		-7	-0.3
EU	-0.2	0	0.4	21.4	12.9	32	17	20.7		-10.1	3.6
Latin America	-1.7	-2.1	-0.8	-24.3	-12.2	-40.5	-23.4	-24.3		-2.7	-5.2
Sub-Sahara Africa	-2.2	-3.2	-1.3	-29.6	-23.6	-61.6	-22.2	-31.3		-0.8	-4.3
Rest of the world	-1	-1.2	-0.5	-10.1	-5	-16.1	-13.1	-7.9		-4.7	-2.1

*Including India and Subcontinents. Source: CGE model simulation results.

The detailed world agricultural production simulation results suggest that global crop production would shrink by 7.4% by 2080, which is less than half of Cline’s estimate. This is partly due to the declining weight of developing countries, which would be more adversely impacted by climate change than developed countries, in global agricultural production over 2004–2080. In general, the crop production expansion would come at the expense of the livestock sector, with land and other production resources being diverted toward crops sectors.

6. Impacts on India and Subcontinents

Table 3 reports the macroeconomic effects of the projected slowdown in agricultural productivity in India and subcontinents countries. Both consumption and investment would decline compared to the baseline scenario. The incorporation of agricultural productivity damage would hamper agricultural exports of countries, leading to a reduction of their aggregate exports. Consequently, aggregate imports would also decline to maintain the current account balance.

Table 3 Macro-economic Impacts of Climate Change, Agricultural Production and Trade in India and subcontinents Countries, 2080 (% change)

	India	Shri Lanka	Nepal	Bhutan	Bangladesh
Real GDP	-1.4	-0.9	-1.7	-0.3	.2.4
Welfare (EV as % of GDP	-1.7	-1.6	-1.9	-0.7	-2.7
Terms of Trade	-0.5	-0.7	-0.9	-0.2	-0.3
Consumption	-1.9	-1.8	-2.5	-0.8	-3
Investment	-0.9	-2.2	-2.4	-0.8	-2.5
Exports	-0.9	-0.7	-0.7	-0.25	-1.7
Imports	-1.5	-1.6	-0.3	-2.7	-1.7
Factor prices Capital	-2.0	-0.3	-0.2	-0.2	-0.9
Unskilled labour	-1.5	-1.6	-2	-4	-1.6
Skilled labour	-2.8	-1.8	-2.6	-1.2	-3.3
Land	9.6	4.9	0.9	-8.7	-4.3
Output					
Crop Agriculture	-13.4	-13.4	-22.5	-47.6	-29.4
Rice	-15	1.6	-11.9	36.3	-13.6
Other grain	-9.9	-52.6	-13	-26.3	-0.1
Livestock	-4.4	-2.6	-0.3	105.1	12.6
Processed Food	-6.4	5.5	-4.2	12.7	-0.9
Exports					
Crop agriculture	-25.6	-49.2	-56.7	-49.2	-59.4
Rice	17.1	-51.2	-73.2	-41.5	46.8
Other grain	-39.9	-74.6	-48.8	-52.2	-11.2
Livestock	1.9	1.9	21.9	57.5	117.5
Processed food	-7.3	4.8	-7.4	13.8	-1
Imports					
Crop Agriculture	8.7	4.7	24.3	-0.4	11.9

Rice	15	50.6	34.1	1.5	50.6
Other grain	30.8	3.3	42.8	7.4	15.4
Livestock	-9.9	-16.4	-25.6	-4.2	-24.3
Processed food	-13.6	-14	-12.4	-1.9	-16.4

7. Conclusions

Environment interactions and identifying key aspects that distinguish favourable agricultural practices was the first step in determining what it is needed to measure with a new set of indicators. It is important to establish the boundaries of what it is necessary to describe – otherwise it is difficult to justify what to include or exclude from the indicator list – and, as a result, the number of indicators typically expands to unwieldy lengths. As the condition of certain natural components – soil, water, land, and biodiversity – is at the core of the implementation of a sustainable food production system, a set of indicators was developed to particularly monitor those natural resources.

Climate change is an increasingly significant global challenge, and its negative impacts have been already felt in some regions of the world. This paper uses a global CGE model to assess the long-term economic effects of climate change. The results suggest that the aggregate impacts of agricultural damages caused by climate change on the global economy are moderate. However, the impacts are not evenly distributed across the world. Developing countries would bear disproportionately large losses arising from climate change. Some significant adjustments in global agricultural production and trade, and consequently the distribution of income, may be accompanied by the changes of climate. India and subcontinents are an important agricultural producer and consumer and plays a major role in the world market via several agricultural products. With the anticipated decline in agriculture share of GDP, the aggregate output losses from climate change-related agricultural productivity reduction would be modest for most India and subcontinents. Reversing this trend of declining agricultural productivity would be an important component for an India and subcontinents strategy to cope with the potential risks from the expected changes in climate.

References: -

1. Armington, P. S. (1969). A Theory of Demand for Products Distinguished by Place of Production. International Monetary Fund Staff Papers 16: 159–176.
2. Fischer, G., M. Shah, F. N. Tubiello, and H. van Velthuis (2005). Socio-economic and Climate Change Impacts on Agriculture: An Integrated Assessment, (1990–2080). Philosophical Transactions of the Royal Society B 360: 2067–2083.
3. Bruinsma, J., ed. (2003). World Agriculture: Towards 2015/2030: An FAO Perspective. UK: Earthscan.
4. Cline, W. (1996) The Impact of Climate Change on Agriculture: Comment. American Economic Review 86(5): 1309–1311. (2007) Global Warming and Agriculture: Impact Estimates by Country. Washington, DC: Center for Global Development and Peterson Institute for International Economics.
5. IPCC. (2007a) Climate Change 2007: The Physical Science Basis. Contribution of Work Group I to the Fourth Assessment Report of the Intergovernmental Panel on Climate. Cambridge, UK: Cambridge University Press. (2007b) Climate Change 2007: Impacts, Adaptation and Vulnerability.

Contribution of Work Group II to the Fourth Assessment Report of the Intergovernmental Panel on Climate. Cambridge, UK: Cambridge University Press.

6. United Nations Statistics Division (UNSD) 2016. Framework for the Development of Environment Statistics (FDES 2013). Available at: <http://unstats.un.org/unsd/environment/FDES/FDES-2015-supportingtools/FDES.pdf>.
7. Pulse Canada 2011 Measuring Sustainable Agriculture: Summary of Ideas and Findings. Available at www.pulsecanada.com/cgi-bin/measurewhatmattersdl.pl/msa.
8. Dumanski J., Terry E., Byerlee D. & Pieri C. (1998). Performance indicators for sustainable agriculture: Discussion Note. Washington, D.C., World Bank.



New Education Policy 2020 and the Future of India

Kiran Alune

Ph.D. Research Scholer
Vikram University, Ujjain (M.P.)

Abstract-

The New Education Policy announced by the Government of India (NEP 2020) was a welcoming change and fresh news amidst all the world's negativities. The announcement of NEP 2020 was purely unexpected by many. The changes that NEP 2020 has recommended were something that many educationists have yet to see coming. Though the education policy has impacted school and college education equally, this article mainly focuses on NEP2020 and its impact on Higher Education. This paper also outlines the salient features of NEP and analyses how they affect the existing education system.

Keywords: New Education Policy, Higher Education

I. Introduction

The National Policy on Education (NPE) is a policy formulated by the Government of India to promote education among India's people. The policy covers elementary education to colleges in both rural and urban India. The first NPE was promulgated by the Government of India by Prime Minister Indira Gandhi in 1968, the second by Prime Minister Rajiv Gandhi in 1986, and the third by Prime Minister Narendra Modi in 2020.

II. Salient Features of NEP related to Higher Education

The concern for improvement of education has been at the top of India's development (Saxena & Anu, 2019). The New Education Policy seeks to positively upgrade the present education system. It is bundled with some very innovative and contemporary proposals. The policy foresees an immersive, consistent, and appealing model of all-inclusive learning.

NEP-2020 seeks to implement both informal and formal education models. Formal learning in the classroom is through the teacher's instructions and books. The new policy endeavours to take learning beyond the classroom and inspire students to learn from practical experience. Students will be exposed to multilingualism from the preliminary stages of education, which will have a tremendous cognitive advantage. A concerted effort will be put into promoting contemporary subjects such as data analytics, artificial intelligence, and machine learning, which are being touted as future careers. A student-centric approach will be developed to replace the current teacher-centric approach, in which the students can select the subjects they want to learn. Considering the reputation of India's rich culture and languages, Sanskrit can be offered at all levels of School and higher education. Rather than compartmentalization of humanities, art, and sciences and between academic and vocation, education is indeed a revolutionary shift. The salient recommendations of NEP 2020 are-

1. The multidisciplinary system wherein subjects from different streams, i.e., Science, Humanities, and Commerce, can be chosen, which will focus on the innovativeness, creativity, and ingenuity of students.
2. The policy emphasizes skill development, notably vocational crafts and life skills training.
3. Flexibility in choosing a learning trajectory is essential for subjects from all the streams so that students can choose subjects based on their aptitude and interest.
4. Inclusive & Equitable Education System by 2030.

5. Board Exams to test core concepts and application of knowledge.
6. Every Child will come out of School adept in at least one Skill.
7. Common Standards of Learning in Public & Private Schools.

III. Impact of New Education Policy 2020 on Higher Education

A Transforming the Regulatory System of Higher Education

The regulatory framework must be revamped entirely to re-energize the higher education sector and allow its success. The higher education regulatory framework assures that different, autonomous, and empowered authorities will carry out the various duties of regulation, accreditation, financing, and academic standard setting. This is crucial for establishing checks and balances inside the system. To ensure that the four institutional organizations performing these crucial tasks operate separately while collaborating to achieve their shared objectives. These organizations are to be established as separate verticals under the control of the Higher Education Commission of India.

Internationalization at Home

NEP 2020 also enables international universities and faculties to return to Asian countries, which challenges local institutions to raise the level of education they provide. The possibility of paving the way for foreign universities to establish campuses within the nation is causing the Indian education sector to boom everywhere. The Asian country has one of the world's largest networks of higher education systems, with over 900 universities and 40,000 colleges. However, the GER (Gross Entering Ratio) of Asian countries in education is only 26.3%, which is significantly lower when compared to other BRICS nations like China (51%), Brazil (50%) and other countries in the region. It is also significantly lower when compared to European and North American countries, where the GER may be higher than 80%. Asian countries should experience substantial development in the field of global education to develop a new economic mechanism that is not based on natural resources but rather on knowledge resources. According to reports, Asian countries may need another 1,500 new higher education facilities by 2030 to accommodate a significant increase in students.

National Education Policy 2020: Current Issues and Reimagining the Future of Higher Education

For this reason, the Indian government must encourage FDI (Foreign Direct Investments) and make the ECB (External) industrial Borrowing) route available to strengthen capital investment in the education sector. Because more than seven lakh Indian students are already studying overseas, the ministry strives to improve India's reputation as a hub for education. This program aims to drastically reduce the amount of human capital that migrates to other nations for study and employment opportunities by enabling overseas universities to provide the finest education available locally at a much-reduced cost while remaining in place.

According to several international studies, cross-border education benefits the economy and fosters a greater sense of global awareness, cultural sensitivity, and combat. Foreign partnerships provide educational institutions with an additional way to hone their curriculum in line with global pedagogy and offer students a wide range of specializations and topic options (Gupta, 2020).

Towards a More Holistic and Multidisciplinary Education

A holistic and interdisciplinary education would combine the development of a person's moral, social, physical, emotional, and intellectual faculties. Even engineering Institutions like the IITs would transition to a more comprehensive, interdisciplinary curriculum emphasizing the arts and humanities. Arts and humanities students aim to study more science, including vocational and soft skill disciplines. The curriculum of all HEIS should contain credit-based courses and projects in community participation and service, environmental education, and value-based education to achieve such a comprehensive and

interdisciplinary education. The undergraduate degree would take three or four years to complete, and there would be many opportunities to graduate with the proper credentials throughout this time (Yadav & Yadav, 2023).

On the other hand, the 4-year interdisciplinary bachelor's program should be the recommended choice. The Indian government will also set up an academic bank of credit to assist in digitally storing academic results. This will make it much easier for the schools to add credit to the student's degree. A solid proposal for storing the academic credits students earn from attending classes at several reputable higher education institutions is establishing an Academic Bank of Credit (ABC) (Nithish, 2023). If a person wishes to change colleges, credits may be transferred.

Motivated, Energetic and Capable Faculty

The quality and dedication of a faculty member are critical components of a higher education Institution's success. The teachers should have access to opportunities for professional growth. Faculty who fails to uphold fundamental standards will be held responsible. To hire faculty, HEIS would have independently determined, transparent, and well-specified procedures (Batra, 2020).

Optimal Learning Environments and Support for Students

The foundations of high-quality learning include the curriculum, pedagogy, ongoing assessment, and student assistance. To ensure that every student has a stimulating and engaging learning experience, institutions and motivated professors will construct curricula and pedagogy, and ongoing formative evaluation will be employed to advance the objectives of each program. The HEI should also make decisions on all assessment processes, including those that result in final certification. Changes will be made to the Choice-Based Credit System (CBCS) to encourage creativity and adaptability (Govinda, 2020).

National Education Policy 2020: Current Issues and Reimagining the Future of Higher Education

Furthermore, each institution will include its academic plans, from curriculum enhancement to the effectiveness of classroom interactions, into its comprehensive Institutional Development Plan (IDP). Teachers would be trained with the skills and knowledge necessary to interact with students as instructors, mentors, and advisors. On the other hand, students from socioeconomically challenged families need help and encouragement to move to higher education successfully. As a result, universities and colleges would compel to establish top-notch support centres and be provided with sufficient funding and academic resources to do so successfully (Panditrao & Panditrao, 2020; Das & Barman, 2023).

The Structure Lengths of Degree Programs

Each college degree at any institution lasts three or four years in the framework of the National Education Policy 2020 theme. Any institution may be required to provide the code with a certificate after two years, a degree after three years, and a certificate for those students. United Nations agency finishes a year of study in any chosen profession or career course. The government of an Asian country will also assist in constructing a tutorial Bank of Credit for electronically keeping the educational results. This may change the establishments to count the credit at the tip and include it in the degree of code. This might be helpful for students who might need to drop out of the course in the middle. Even if students restart the course from the beginning, they will pick up where they left off in the future. According to NEP 2020, educational institutions are free to start PG programs; there might be a planning issue with A One-year PG Degree for college students.

Financial Support for Students

Financial and economic assistance may help students achieve their objectives. NEP 2020 has made the following suggestions in this regard:

- ❖ The HEIs should provide financial aid to needy students so that no student is denied the opportunity to pursue higher education (Gupta, 2020).
- ❖ To ensure students' financial assistance, the "National Scholarship Portal" will be enlarged to include publicly funded institutions' stipends, board, and lodging (Banerjee et al., 2021).

Access Equality

Entrance into a top-notch university opens doors to opportunities that may help lift people out of vicious cycles of disadvantage and help communities. Hence, one of the top priorities must be making a platform for high-quality higher education available to everyone. All pupils will have equal access to high-quality education by the year 2020, with a focus on socioeconomically disadvantaged groups (SEDGs) (Majhi, 2021).

Evaluation System

The institutions and faculty can determine the curriculum and pedagogy to ensure every student has an exciting and engaging learning experience. The HEI must also approve any evaluation programs that result in final certification. The Choice-Based Credit System (CBCS) will be redesigned to provide flexibility and change. A more constant and thorough review process will replace high-stakes exams (Banerjee et al., 2021).

Vocational Education

There is a perception that vocational education is inferior to general education and intended primarily for pupils who cannot succeed. This unfavourable perception heavily influences the decisions that students make. That is a significant issue; thus, the best approach to handle it is to reconsider how students will be provided with vocational education in the future (Wankhade, 2021).

Research and Innovation in Higher Education

Encouraging substantial research and development investments from the public and commercial sectors is one of NEP 2020's focus areas. This will promote creativity and imaginative thinking. For industry-led skilling, upskilling, and reskilling to be possible, there must be a strong industry commitment and close academic engagement. Also, developing the skills necessary to promote an understanding of "Intellectual Property Rights (IPR)" and their protection is essential to reap their advantages.

The National Education Technology Forum (NETF)

The NETF that NEP 2020 intends to create is a step in the right direction. Institutions of higher learning would be able to respond fast if quality Ed-tech tools were hosted across all delivery dimensions for teaching and learning. The focus should be on hosting local Ed Tech products on "open-source development platforms" with integrated cyber security resilience to assure "privacy & security" in addition to adherence to cyber security standards, adoption of firewalls, and Intrusion Detection Systems (IDS) against external threats and vulnerabilities. This will protect each student's "personal privacy".

IV. Conclusion

Higher education has a significant role in determining a nation's economy, social standing, level of technological adoption and healthy human behaviour. The responsibility of the country's education department is to increase the Gross Enrolment Ratio (GER) so that all citizens have access to higher education opportunities. The National Education Policy of 2020 is working towards this goal by implementing creative policies to raise higher education quality, affordability, and supply while opening it up to the private sector and enforcing tight quality controls in all higher education institutions (Aithal & Aithal, 2020). The National Education Policy has a favourable and long-lasting influence on India's higher education system. The government's decision to let international colleges establish campuses in India is laudable. This would enable students to get a high standard of education in their nation. Establishing

interdisciplinary institutions would result in a revitalized emphasis on every discipline, such as the arts and humanities. This kind of education would allow students to study and develop holistically. Hence, learners would possess a strong knowledge basis (Das & Barman, 2021). The goal of NEP 2020 is to modernize higher education in India. Overall, the NEP 2020 tackles the need to train experts in various fields, from agriculture to artificial intelligence. India needs to prepare for the future. NEP 2020 provides the door for many young aspirant pupils to have the appropriate skill set. The NEP 2020 is a crucial turning point for higher education. It will only be revolutionary with effective and constrained implementation.

References: -

- ❖ Aithal, P.S., & Aithal, S. (2019). Analysis of higher education in Indian National Education Policy proposal 2019 and its implementation challenges. *International Journal of* 2581.7000.0039.
- ❖ Banerjee, N., Das, A., & Ghosh, S. (2021). National Education Policy (2020): A critical analysis. *Towards Excellence*, 13(3), 406–420.
- ❖ Das, A.K. (2020). Understanding the changing perspectives of higher education in India. In *The Future of Higher Education in India* (pp. 226–228). <https://doi.org/10.5530/jscires.9.2.28>
- ❖ Das, K., & Barman, A. (2021). Posts of workplace competencies in management education research- A review triangulation for discerning NEP-2020 (India)'s relevance. *PSYCHOLOGY AND EDUCATION*, 58(5), 2271–2308
- ❖ Das, P. (2022). National Education Policy 2020: Role of information and communication technology (ICT) for implementing the modern education system. In A. S. B. Ishmi Rekha Handique Konwar (Ed.), *National Education Policy 2020 A Paradigm Shift in Indian Education System* (pp. 131–141).
- ❖ Goel, M.M. (2020). New Education Policy 2020: Perceptions on higher education. *Voice of*
- ❖ Govinda, R. (2020). NEP 2020: A critical examination. *Social Change*, 50(4), 603–607. <https://doi.org/10.1177/0049085720958804>
- ❖ Gupta, B. (2020). Strategies for promoting and sustaining autonomy in higher education institutions in the context of National Education Policy 2020. *International Journal of Educational Research and Studies*, 2(1), 23–27.
- ❖ Gupta, B.L., & Choubey, A.K. (2021). Higher education institutions- Some guidelines for obtaining and sustaining autonomy in the context of Nep 2020. *International Journal of All Research Education and Scientific Methods (IJARESM)*, 9(1), 2455–6211.
- ❖ Gupta, P.B., & Gupta, B.L. (2021). Strategic mentoring program for higher education institutions in the context of National Education Policy 2020. *University News, Association of Indian Universities*, pp. 22, 8–16.
- ❖ Gupta, P.B., Dubey, P., Dave, T., & Gupta, B.L. (2021). Reforms-oriented strategic human resource management in higher education institutions in the context of NEP 2020.
- ❖ Inamdar, S., & Parveen, S. (2020). The National Education Policy (NEP) 2020- Galvanising the rusting higher education in India. *Vidyawarta Interdisciplinary Multilingual Peer Reviewed Journal*, September (9).
- ❖ Kakodkar, P. (2022). Future Higher Education. *Journal of Scientific Dentistry*, 12(1).
- ❖ Kalyani, P. (2020) An Empirical Study on NEP 2020 [National Education Policy] with Special Reference to the Future of Indian Education System and Its effects on the Stakeholders. *Journal of Management Engineering and Information Technology (JMEIT)*, 7 (October), pp. 2394–8124.
- ❖ Menon, S. (2020). NEP 2020: Some searching questions. *Social Change*, 50(4), 599–602.

- ❖ Panditrao, M.M., & Panditrao, M.M. (2020). National Education Policy 2020: What is in it for a student, a parent, a teacher, or us, as a higher education Institution/University? Adesh University Journal of Medical Sciences & Research, 2(2), 70–79. https://doi.org/10.25259/aujmsr_32_2020.
- ❖ Saxena, S. (2020), Innovative teaching technology for optimum skill development; The paradigm shifts towards quality education as per NEP. International Journal of Engineering and Management Research, 10(2), 164–169.



राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अवसर एवं चुनौतियाँ

डॉ. के.पी. आजाद

प्राचार्य

शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, रामपुर नैकिन सीधी (म.प्र.)

डॉ. शिवबिहारी कुशवाहा

अतिथि विद्वान (समाजशास्त्र विभाग)

शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, रामपुर नैकिन सीधी (म.प्र.)

शोध सारांश –

नई शिक्षा नीति, 2020 के तहत 3 साल से 18 साल तक के बच्चों को शिक्षा का अधिकार कानून, 2009 के अन्तर्गत रखा गया है। नई शिक्षा नीति का उद्देश्य सभी छात्रों को उच्च शिक्षा प्रदान करना है। जिसका लक्ष्य 2025 तक पूर्व-प्राथमिक शिक्षा (3-6 वर्ष की आयु सीमा) को सार्वभौमिक बनाना है। स्नातक शिक्षा में आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस, थ्री-डी मशीन, डेटा-विश्लेषण, जैवप्रौद्योगिकी आदि क्षेत्रों के सहयोग से अत्याधुनिक क्षेत्रों में युवाओं की रोजगार क्षमता में वृद्धि होगी। उच्च शिक्षा और शोध किसी राष्ट्र के विकास और प्रगति की रीढ़ होते हैं। यह अनायास नहीं है कि दुनिया के सभी विकसित राष्ट्रों में उच्च शिक्षा को लेकर सरकारी और नियामक संस्थाएं अत्यंत सजग हैं। दुर्भाग्य से भारत में उच्च शिक्षा की नियामक एजेंसी विश्वविद्यालय अनुदान आयोग और विभिन्न सरकारों का रवैया उच्च शिक्षा को लेकर बहुत उत्साहजनक नहीं रहा है। वास्तव में भारत में उच्च शिक्षा प्रणाली की वर्तमान स्थिति जटिल और चुनौतीपूर्ण है। इसमें कोई दो राय नहीं है, कि स्वतंत्र भारत में उच्च शिक्षा का विस्तार व्यापक स्तर पर हुआ है, लेकिन क्या यह हमारे देश की उच्च शिक्षा छात्रों को जीवन दृष्टि देने में या उनकी भौतिक मानसिक आध्यात्मिक आवश्यकताओं की पूर्ति करने में सफल हुई है। हमारी शिक्षा व्यवस्था की चतुर्दिक समस्याओं में से उच्च शिक्षा की समस्या की तह में जाना ज्यादा जरूरी है। शिक्षा किसी देश के आर्थिक विकास की आधारशिला होती है।

मुख्य भाव – राष्ट्रीय, शिक्षा, नीति, अवसर, चुनौतियाँ, उच्च शिक्षा, आदि।

परिचय :-

वर्तमान समय में नई शिक्षा नीति ने शिक्षा जगत के विभिन्न आयामों को बदल दिया है, यह एक पहल है, जिसमें पुरानी बंदिशों को दरकिनार करके नए रूप से शिक्षा के हर एक पहलू को तराशा गया है। नई चुनौतियाँ भी शिक्षा जगत के सामने आ रही हैं, भारतीय शिक्षा व्यवस्था में यह परिवर्तन की एक नई शुरुआत है। डॉ० के. कस्तूरी रंजन की अध्यक्षता में नई शिक्षा नीति 2020 को बनाया गया, जिसकी घोषणा 29 जुलाई 2020 में की गई। भारत की नई शिक्षा नीति 2020 के नियम व प्रमुख बिंदु देश के विकास में वहां के निवासियों की शिक्षा महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। जिस देश में शिक्षा का स्तर मजबूत होगा, वह देश तेजी से विकास की दिशा में बढ़ेगा। आज भी भारत एक विकासशील देश बना हुआ है, इसका सबसे बड़ा कारण है शिक्षा नीति पर ध्यान न देना। देश में वर्ष 1986 में शिक्षा नीति बनाई गई थी और वर्ष 1992 में इसमें संशोधन किया गया। यह नीति कमियों से भरी हुई थी, इसके बावजूद इस पर ध्यान न देना देश के विकास में बाधक बना हुआ था। नई शिक्षा नीति 2020 को शुरू कर दिया गया है, जोकि पुरानी शिक्षा नीति से बेहतर और असरदार नजर आती है। नई शिक्षा नीति 5+3+3+4 संरचना पर आधारित है, मध्यप्रदेश, कर्नाटक के बाद एनईपी-2020 को लागू करने वाला देश का दूसरा राज्य बन गया। इस एनईपी-2020 के अनुसार विद्यार्थी रुचि के अनुसार विषयों का

चयन कर सकते हैं। नई शिक्षा नीति सभी बंधनों को तोड़ विद्यार्थियों को अपनी सीमाओं के बाहर नए अवसर तलाशने में मदद करेगी। पहले एक छात्र को एक पाठ्यक्रम के अनुसार निर्धारित विषयों का अध्ययन करना पड़ता था। लेकिन अब वे अपनी रुचि के अनुसार अपने विषयों का चयन कर सकते हैं। नई नीति में राष्ट्रीय सेवा योजना (एनएसएस), राष्ट्रीय कैडेट कॉर्प्स (एनसीसी) और कौशल आधारित विषयों पर भी ध्यान केंद्रित किया गया है। कृषि विज्ञान को भी विश्वविद्यालयों में एक विषय के रूप में जोड़ रही है। अध्ययनरत विद्यार्थियों में प्लेसमेंट बढ़ाने के लिए रचनात्मक कदम उठाए हैं। राज्य में प्रत्येक जिले के लिए एक प्लेसमेंट अधिकारी नियुक्त किया जा रहा है। नई शिक्षा नीति 2022 के अंतर्गत छात्रों को अब कोई एक स्ट्रीम नहीं चुननी होगी। छात्र आर्ट स्ट्रीम के साथ साइंस स्ट्रीम भी पढ़ सकते हैं, साइंस स्ट्रीम के साथ आर्ट्स स्ट्रीम भी पढ़ सकते हैं। प्रत्येक विषय को अतिरिक्त पाठ्यक्रम के रूप में देखा जाएगा जिसमें योग, खेल, नृत्य, मूर्तिकला, संगीत आदि शामिल है। एनसीईआरटी पाठ्यक्रमों को राष्ट्रीय पाठ्यक्रम की रूपरेखा के अनुसार तैयार करेगी। शारीरिक शिक्षा को पाठ्यक्रम में शामिल किया जाएगा। वोकेशनल तथा एकेडमिक स्ट्रीम को अलग नहीं किया जाएगा जिससे कि छात्रों को दोनों क्षमताओं को विकसित करने का मौका मिले। शिक्षा ही वह मूल आधार है, जो एक सभ्य सुशिक्षित नागरिकों का निर्माण करती है, समाज एवं देश को विकास की मुख्यधारा के साथ जोड़ना भी आवश्यक है विश्व पटल पर सामाजिक न्याय और समानता वैज्ञानिक उन्नति राष्ट्रीय एकीकरण और सांस्कृतिक संरक्षण के संदर्भ में भारत की सतत प्रगति और आर्थिक विकास की कुंजी है उच्च शिक्षा ही वह माध्यम है, जिसमें देश की समृद्धि प्रतिभा और संसाधनों का सर्वोत्तम विकास और संवर्धन व्यक्ति के समाज राष्ट्र और विश्व की भलाई के लिए किया जा सकता है।

नई शिक्षा नीति से संबंधित कुछ समस्याएँ:-

मानव संसाधन का अभाव: वर्तमान में प्रारंभिक शिक्षा के क्षेत्र में कुशल शिक्षकों का अभाव है, महँगी शिक्षा: नई शिक्षा नीति में विदेशी विश्वविद्यालयों में प्रवेश का मार्ग प्रशस्त किया गया है। विभिन्न शिक्षाविदों का मानना है कि विदेशी विश्वविद्यालयों में प्रवेश से भारतीय शिक्षण व्यवस्था मंहगी होती है। इसके फलस्वरूप निम्न वर्ग के छात्रों के लिये उच्च शिक्षा प्राप्त करना चुनौतीपूर्ण हो सकता है।

ऐसे में राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020 के तहत प्रारंभिक शिक्षा हेतु की गई व्यवस्था के क्रियान्वयन में व्यावहारिक समस्याएँ भी हैं।

वर्तमान में भारत में उच्च शिक्षा प्रणाली की कुछ समस्याएं इस प्रकार हैं।

- ❖ खंडित उच्च शैक्षिक अवस्था।
- ❖ संज्ञानात्मक कौशल के विकास और सीखने के परिणामों पर बल देना।
- ❖ विषयों का एक कठोर विभाजन विद्यार्थियों को बहुत पहले ही विशेषज्ञ और अध्ययन के संकीर्ण क्षेत्रों की ओर ढकेल देना।
- ❖ सीमित क्षेत्र विशेष रूप से सामाजिक आर्थिक रूप से वंचित क्षेत्रों में जहां कुछ ही ऐसे विश्वविद्यालय महाविद्यालय हैं जो स्थानीय भाषाओं में पढ़ाते हैं।
- ❖ सीमित शिक्षक और संस्थागत स्वायत्तता।
- ❖ अधिकांश विश्वविद्यालयों और महाविद्यालयों में शोध पर कम बल और अनुशासनों में पारदर्शिता और प्रतिस्पर्धी परीक्षा शोध निधियों की कमी।
- ❖ उच्च शिक्षा संस्थानों में गवर्नेंस और नेतृत्व क्षमता का अभाव।

नई शिक्षा नीति से संबंधित चुनौतियाँ:-

वर्तमान में नई शिक्षा नीति के अंतर्गत विभिन्न प्रकार की चुनौतियाँ हमारे समक्ष आई हैं, जिनसे शिक्षा जगत में थोड़ी कठिनाइयों का सामना करना पड़ा उच्चतर शिक्षा प्रणाली में नए बदलाव नए जोश के संचार के लिए

उपयुक्त चुनौतियों को दूर करने के लिए कहा जाता है, जिसमें सभी युवा वर्ग को उनकी आकांक्षा के अनुसार गुणवत्तापूर्ण समान अवसर देने वाली समावेशी उच्च शिक्षा मिले इस दृष्टि को ध्यान में रखते हुए उच्च शिक्षा में कुछ महत्वपूर्ण परिवर्तन किए गए जो इस प्रकार हैं :-

1. ऐसी उच्च शिक्षा की व्यवस्था करना जिसमें विशाल बहु-विश्वविद्यालय और महाविद्यालय शामिल हो जहां प्रत्येक जिले में या उसके आसपास कम से कम एक और पूरे भारत में अधिकतर एचपीआई ऐसे हैं जो स्थानीय भाषाओं में शिक्षा प्रदान करते हो।
2. बहु मिश्रित स्नातक शिक्षा की ओर बढ़ना।
3. संकाय और संस्थागत स्वायत्तता की ओर बढ़ना।
4. विद्यार्थियों के अनुभव में वृद्धि के लिए पाठ्यचर्या शिक्षण शास्त्र मूल्यांकन और विद्यार्थियों को दिए जाने वाले सहयोग में परिवर्तन करना।
5. शिक्षण अनुसंधान और सेवा के आधार पर योग्यता नियुक्तियों और कैरियर की प्रगति के माध्यम से संकाय और संस्थागत नेतृत्व की स्थिति की अखंडता की पुष्टि करना।
6. उत्तम अनुसंधान और विश्वविद्यालयों और कॉलेजों में सक्रिय रूप से अनुसंधान की नींव रखने के लिए राष्ट्रीय अनुसंधान फाउंडेशन की स्थापना करना व्यवसायिक शिक्षा सहित उच्च शिक्षा के सभी एकल नियमों को लचीला बनाना।

निष्कर्ष :-

21वीं सदी के भारत की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिये भारतीय शिक्षा प्रणाली में बदलाव हेतु नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020 का निर्माण किया गया है, अगर उसका क्रियान्वयन सफल तरीके से होता है तो यह नई प्रणाली भारत को विश्व के अग्रणी देशों के समकक्ष ले आएगी। वर्तमान में यह देखा जा रहा है कि बहुत से समस्याएं शिक्षा क्षेत्र में आ रही हैं, विशेषकर स्नातक स्तर पर क्योंकि शिक्षा नीति, 2020 का अनुसार नए पाठ्यक्रम में विद्यार्थियों विभिन्न विषयों में परिवर्तन किया गया है क्रेडिट सिस्टम को इसमें जोड़ा गया है, जिसके अनुसार स्नातक स्तर के प्रथम वर्ष को मुख्य, गौण, वैकल्पिक विषयों के साथ-साथ अन्य प्रोजेक्ट वर्क भी किया जाना है। जिसमें तकनीकी का उपयोग भी शामिल है और विभिन्न क्षेत्रों में प्रोजेक्ट वर्क करने के लिए उन्हें परिस्थितियों पर निर्भर रहना पड़ता है, क्योंकि ग्रामीण क्षेत्रों में जहां पर बिजली इंटरनेट की सुविधा नहीं होती इन कार्यों को करने में काफी कठिनाई होती है। जिस वजह से विद्यार्थी शिक्षा का लाभ नहीं ले पाते साथ ही विभिन्न प्रकार के प्रशिक्षण कार्यक्रम चलाए जाते हैं उनका भी ऑनलाइन में छात्र सुविधाओं का लाभ नहीं ले पाते, अभी भी इनमें बहुत प्रयास की जरूरत है ताकि शिक्षा को दूर-दूर तक पहुंचाया जा सके और शिक्षा को इतना लचीला बनाया गया है, ताकि शिक्षा का लाभ सभी वर्गों को समान रूप से मिल सके।

नई शिक्षा नीति, 2020 के तहत 3 साल से 18 साल तक के बच्चों को शिक्षा का अधिकार कानून, 2009 के अंतर्गत रखा गया है। नई शिक्षा नीति का उद्देश्य सभी छात्रों को उच्च शिक्षा प्रदान करना है जिसका लक्ष्य 2025 तक पूर्व-प्राथमिक शिक्षा (3-6 वर्ष की आयु सीमा) को सार्वभौमिक बनाना है। स्नातक शिक्षा में आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस, थ्री-डी मशीन, डेटा-विश्लेषण, जैवप्रौद्योगिकी आदि क्षेत्रों के सहयोग से अत्याधुनिक क्षेत्रों में युवाओं की रोजगार क्षमता में वृद्धि होगी।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची –

- ❖ राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 मानव संसाधन शवकास मंत्रालय भारत सरकार।
- ❖ प्रकाश कुमार, 21वीं सदी की मांग पूरी करेगी नई शिक्षा नीति, आउटलुक हिंदी, 24 अगस्त 2020
- ❖ राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार

- ❖ प्रो. के. एल शर्मा, दैनिक भास्कर जयपुर संस्करण, पृष्ठ संख्या 2, 24 अगस्त 2020
- ❖ गंगवाल सुभाष, नई शिक्षा नीति 21वीं सदी की चुनौतियों का करेगी मुकाबला, दैनिक नवज्योति पृष्ठ संख्या 22 अगस्त 2020
- ❖ तन्खा वरुण, सुप्रीम कोर्ट अधिवक्ता, राजस्थान पत्रिका नागौर, 26 अगस्त 2020, सम्पादकीय
- ❖ सिंह दुर्गेश, क्रॉनिकल मासिक पत्रिका, मई 2020, पृष्ठ संख्या 80–81
- ❖ <https://pmmodiyojana.in/national-education-polic/> 3
- ❖ <https://pmmodiyojanaye.in/national-education-policy-2020/>



शैक्षणिक संस्थाओं के परिवेश में भारतीयता

ज्योति अलूने

सहायक प्राध्यापक (गृहविज्ञान)
शासकीय कन्या महाविद्यालय, सीधी (म.प्र.)

डॉ० साधना मंडलोई

सहायक प्राध्यापक (गृहविज्ञान)
शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, अमरपाटन (म.प्र.)



सारांश-

किसी भी राष्ट्र की उन्नति में वहां की शिक्षा-व्यवस्था की महती भूमिका होती है। शिक्षा किसी भी देश को संस्कारित करने का काम करती है। इसका स्पष्ट प्रभाव समाज, संस्कृति, राजनीति एवं अर्थ-व्यवस्था पर परिलक्षित होता है। इसलिए यदि देश का नव-निर्माण करना है तो सबसे पहले वहां की शिक्षा-व्यवस्था को सशक्त, समर्थ एवं राष्ट्र अनुकूल बनाने की आवश्यकता होती है। यूनेस्को की डेलर्स कमेटी की रिपोर्ट के अनुसार- किसी भी देश की शिक्षा का स्वरूप उस देश की संस्कृति एवं प्रगति के अनुरूप होना चाहिए। शिक्षा-जगत के लिए यह एक बहुत ही महत्वपूर्ण रिपोर्ट है, जिसके अध्ययन के उपरान्त इस संदर्भ में हमारा स्पष्ट तौर पर मानना है कि “देश को बदलना है तो शिक्षा को बदलो।”

“राष्ट्र” केवल जमीन का टुकड़ा मात्र नहीं होता है, बल्कि इसका निर्माण एक निश्चित भू-भाग, वहां की जनसंख्या तथा उसकी संस्कृति से मिलकर होता है। ऐसे में कहना न होगा कि राष्ट्र के लिए भू-भाग, जन एवं संस्कृति के साथ-साथ अपनी संप्रभुता भी अनिवार्य होती है। जहां तक भारतवर्ष के संदर्भ में यदि कहा जाए तो यहां सांस्कृतिक एकत्व की एक मजबूत डोर है, जिसके माध्यम से अखिल भारतवर्ष की समस्त संस्कृतियां एक दूसरे के साथ परस्पर जुड़ी हुई हैं और कहीं-न-कहीं इसी एकत्व में भारत की राष्ट्रीयता का बीज-तत्व भी निहित है।

अब प्रश्न उठता है कि शिक्षा क्या है? हमारे यहां छह वेदांग बताए गए हैं- शिक्षा, कल्प, नियुक्त, व्याकरण, छंद एवं ज्योतिष। इनमें से शिक्षा को एक महत्वपूर्ण वेदांग माना गया है। हालांकि यहां शिक्षा का अर्थ

उच्चारण विज्ञान एवं श्रुति माधुर्य से है। परंतु, वैदिक साहित्य से लेकर आधुनिक समय तक हमारी मनीष परंपरा ने शिक्षा की अपनी स्पष्ट भारतीय संकल्पना प्रस्तुत की है। इस संदर्भ में स्वामी विवेकानंद जी के विचार बड़े ही प्रासंगिक हैं। उनका मानना है कि 'मनुष्य की अन्तर्निहित पूर्णता को अभिव्यक्त करना ही शिक्षा है।' स्वामी जी कहते हैं कि "एक बालक स्वयं सीखता है, यदि कोई सोचता है कि वह किसी को सिखाता है तो उसके समान कोई मूर्ख नहीं है। स्वामी जी के चरित्र - निर्माण एवं व्यक्तित्व के समग्र विकास को ही शिक्षा का लक्ष्य मानते हैं। स्वामी जी का माना है कि शिक्षा सिर्फ सिखाने की प्रक्रिया नहीं है, बल्कि वह स्वयं सीखने की भी प्रक्रिया है।

भारतीय मनीष परंपरा में शिक्षा के संदर्भ में कहा गया है कि "सा विद्या या विमुक्तये" अर्थात् विद्या या शिक्षा हमें अपनी जड़ताओं से मुक्त कर लघु से बृहत् की ओर उन्मुख करती है। वास्तव में शिक्षा मनुष्य के चरित्र - निर्माण के द्वारा उसके व्यक्तित्व के समग्र विकास का ही काम करती है। चरित्र निर्माण एवं व्यक्तित्व का समग्र विकास दोनों ही एक सिक्के के दो पहलू हैं। मूल्य विहीन शिक्षा का कोई औचित्य नहीं है। मूल्यवान एवं संस्कारयुक्त शिक्षा के द्वारा ही एक समर्थ राष्ट्र की आधारशिला रखी जा सकती है।

शिक्षा-व्यवस्था में राष्ट्रीयता का समावेश नहीं होने के कारण ही राष्ट्रीय स्तर पर कई प्रकार की विसंगतियाँ देखी जा सकती हैं। सैकड़ों वर्षों तक हम पराधीन रहे हैं। जिसका परिणाम यह हुआ कि आज पराधीनता की छाया को झेलने के लिए विवश हैं। परंतु, इसके लिए हमारी अपनी इच्छा - शक्ति का शिथिल पड़ जाना भी एक महत्वपूर्ण कारक है। जिसके कारण हम राजनीति रूप से तो स्वतंत्र हो गए परंतु सांस्कृतिक रूप से आज भी औपनिवेशिक कुड़े को ढो रहे हैं। यही कारण है कि मैकॉले शिक्षा-नीति को बारम्बार कोसने के अलावा हमारे पास कोई रास्ता नहीं दिखता है। जबकि सच तो यह है कि स्वतंत्रता के बाद भी शिक्षा में राष्ट्रीयता के समावेश हेतु कोई ठोस प्रयास दृष्टिगोचर नहीं होता है।

शिक्षा में राष्ट्रीयता का समावेश हो इस दिशा में सबसे महत्वपूर्ण कार्य है- पाठ्यक्रम में बदलाव। यह एक बुनियादी कार्य है, जिसके बिना कोई भी पहल अपूर्ण होगी। सर्वप्रथम पाठ्यक्रम का पुन-निर्माण करते वक्त इस बात का ध्यान रहना चाहिए कि उसमें पहले से पढ़ाई जा रहे तमाम अराष्ट्रीय सामग्रियों को हटाया जाना चाहिए। इतिहास, साहित्य, सामाजिक विज्ञान आदि के पाठ्यक्रमों में तमाम विसंगतियाँ देखी गई हैं, जो न केवल अनुपयोगी एवं औचित्य-विहीन हैं बल्कि राष्ट्रीयता के भाव को नष्ट कर अंततः राष्ट्र को ही नुकसान पहुँचाने वाली हैं। इसलिए यह आवश्यक है कि राष्ट्र की संकल्पना पाठ्यक्रम का हिस्सा बने। कई उदाहरणों के माध्यम से इस वैकल्पिक पाठ्यक्रमों को समझा जा सकता है। भूगोल में बृहत्-सांस्कृतिक भारत का मानचित्र पर प्रकाश डाला जाए। इतिहास एवं संस्कृति के पाठ्यक्रम में भी हमें उन महापुरुषों के योगदान को पाठ्यक्रम में शामिल करना चाहिए जिन्होंने इस राष्ट्र के निर्माण में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। अभी तो दुर्भाग्य यह है कि सरकारी संस्थानों से प्रकाशित होने वाली इतिहास

की पुस्तकों में भारतीयता स्वाधीनता आन्दोलन में शामिल क्रांतिकारी महापुरुषों को “आतंकवादी” तक लिखा गया है।

इसी प्रकार गणित एवं विज्ञान के पाठ्यक्रमों में भी भारतीय ज्ञान परंपरा के इतिहास का समावेश होना चाहिए। गणित में आर्यभट्ट, रामानुजन, भास्कराचार्य से लेकर शून्य एवं दशमलव पद्धति के विकास में भारतीय गणितज्ञों के महत्व को समावेशित करना चाहिए। विज्ञान में भी महर्षि चरक, सुश्रुत आदि के साथ-साथ अन्य आधुनिक भारतीय वैज्ञानिकों के योगदान को पाठ्यक्रम का हिस्सा बनाना चाहिए। पर्यावरण आदि विषयों के पाठ्यक्रमों में भी भारतीय दृष्टिकोण का समावेश उपयोगी है।

पाठ्यक्रम के बाद शिक्षा में सबसे महत्वपूर्ण भूमिका होती है - शिक्षा के माध्यमों की। यह बड़ा ही महत्वपूर्ण प्रश्न है कि आखिर शिक्षा को किस भाषा में संप्रेषित की जाए। इसके संदर्भ में मेरा स्पष्ट मानना है कि “माँ, मातृभूमि एवं मातृभाषा का कोई विकल्प नहीं है।” दुनिया भर में होने वाले भाषा- सम्बन्ध शोधों के परिणाम से यह तथ्य स्पष्ट हो चुका है कि मातृभाषा ही शिक्षा का सर्वश्रेष्ठ वैज्ञानिक माध्यम है। अतः भारतीय पाठ्यक्रमों का निर्माण करने के उपरान्त उन्हें संप्रेषित करने के लिए भारतीय भाषाओं का ही व्यवहार होना चाहिए। संस्कृत हमारे देश की ही नहीं बल्कि दुनिया की प्राचीनतम भाषा है। यह सर्वाधिक वैज्ञानिक होने के साथ-साथ भारत की अधिकांश भाषाओं की जननी है। सबसे बड़ी बात यह है कि इसमें एक विशाल ज्ञान राशि संचित है। इसके अलावा हिन्दी इस देश की संपर्क भाषा है जो सही अर्थों में राष्ट्रभाषा भी है। साथ-ही-साथ प्रत्येक प्रांतों में वहां की अपनी - अपनी राजभाषाएं हैं। ये सभी भारतीय भाषाएँ यहां की मातृभाषाएँ हैं। अतः वैज्ञानिक एवं राष्ट्रीयता दोनों ही बातों को ध्यान में रखते हुए शिक्षा का माध्यम भारतीय भाषाओं को बनाना चाहिए।

शिक्षा - व्यवस्था के सुदृढीकरण की दिशा में वातावरण की भूमिका भी बड़े महत्व की होती है। हमारा परिवेश जैसा होगा हमारा भौतिक एवं मानसिक संस्कार भी ठीक उसी के अनुरूप होगा। इसलिए विद्यालयों एवं महाविद्यालयों में सह-शैक्षिक गतिविधियों के माध्यम से एन.सी.सी., एन.एस.एस., सैन्य शिक्षा आदि को प्रोत्साहित कर एक राष्ट्रोन्मुखी वातावरण का सृजन करना चाहिए। भारतीय जीवन-दृष्टि को वातावरण के माध्यम से प्रतिबिंबित करने का प्रयास करना चाहिए। वातावरण निर्माण की दिशा में अनुशासन की सर्वाधिक भूमिका होती है। कहा जाता है कि ‘अनुशासन देशः महान भवति’ अर्थात् अनुशासन ही राष्ट्र को महान बनाता है। इसलिए समय-पालन, कानून-पालन, एवं नियम-पालन का सर्वाधिक ध्यान रखते हुए वातावरण को सृजित करना चाहिए। इस अनुशासन की सही तरीके से व्यवहार में लाने हेतु नैतिक शिक्षा एवं मूल्यपरक शिक्षा की अनिवार्यता होती है।

शिक्षा-संस्थानों का वातावरण पूर्णतः स्वदेशी के संस्कार से सृजित होना चाहिए, जहां स्वभाषा, स्वभूषा एवं स्व-रीति का अनुपालन हो। इन संस्थानों में पर्यावरण के प्रति जागरूकता उत्पन्न करने हेतु प्राकृतिक वातावरण एवं सजगता का ध्यान रखना चाहिए। वातावरण पूर्णतः व्यसन-मुक्त हो, इसका ख्याल

रखना चाहिए। शैक्षणिक-संस्थानों का वातावरण इस प्रकार होना चाहिए जहां राष्ट्र भक्ति का संस्कार विकसित हो सके। देव संस्कृति विश्वविद्यालय हरिद्वार, उज्जैन का सरकारी बी.एड, कालेज जैसे संस्थानों में वहां की दीवारों में कई प्रकार के महत्वपूर्ण उक्तियाँ लिखी गई हैं, जो समाज, राष्ट्र एवं पर्यावरण एवं मानवता के लिए एक सकारात्मक संदेश देती हैं। इस प्रकार का प्रयास अन्य संस्थानों में भी हो तो एक श्रेष्ठ कार्य होगा।

शिक्षा-व्यवस्था में शिक्षकों की भूमिका केवल मार्गदर्शक एवं रचनाकार की नहीं होती है। वह स्वयं का भी परिष्कार करते हुए सिर्फ दूसरों को ही गढ़ने का काम नहीं करता है, बल्कि स्वयं को भी गढ़ता है। इस प्रकार शिक्षक की भूमिका सीखने और सिखाने दोनों की होनी चाहिए। एक आदर्श शिक्षक अपने आचरण एवं व्यवहार से ही सिखाने का भी काम करता है। वह अपने आचरणों के द्वारा शिक्षार्थियों के संस्कार को गढ़ने का काम करता है। इसलिए एक शिक्षक की आचार्य बनने की ओर सदैव उन्मुख रहना चाहिए और यह अपने चरित्र-निर्माण एवं व्यक्तित्व के द्वारा ही एक शिक्षक कर सकता है। जब तक एक शिक्षक में आत्मीय भाव का विकास नहीं होगा और वह अपने कार्य को एक आध्यात्मिक कार्य नहीं मानेगा तब तक शिक्षा-व्यवस्था की एक फांक हमेशा बनी रहेगी और इसमें राष्ट्रीयता के समावेश का स्वप्न एक कल्पना ही बनी रहेगी। इसलिए एक शिक्षक को 'टीचर' बनने का मार्ग न चुनकर 'आचार्य' बनने की ओर अग्रसर होना चाहिए। यही शिक्षा के हित में भी है और समाज एवं राष्ट्र के हित में भी है।

शिक्षा मनुष्य के व्यक्तित्व के सर्वांगीण विकास का आधार है। शिक्षित व्यक्ति समाज में विभिन्न सार्थक परिवर्तनों का वाहक होता है। शिक्षा लोकमत जागरण, लोकमत संस्कार, समाज प्रबोधन एवं सामाजिक परिवर्तन का आधारभूत तत्व है। इन सभी लक्ष्यों की प्राप्ति में शिक्षण संस्थाओं की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। विद्यालय सामाजिक चेतना एवं सामाजिक परिवर्तन के केंद्र बने, वर्तमान समय में इसकी महती आवश्यकता दिखाई देती है।

शिक्षण संस्थाओं के माध्यम से विद्यार्थियों में सामाजिक चेतना का विकास किया जाना चाहिए एवं यह सामाजिक चेतना अपेक्षित सामाजिक परिवर्तन का माध्यम बन सकती हैं। सामाजिक चेतना का अर्थ व्यक्ति में समाज के प्रति आत्मीयता एवं एकात्मता का भाव है। इस भाव के साथ ही समाज के हित तथा समाज के प्रति आत्मीयता का विचार आता है और इस विचार की सात्विक परिणति समाज की भलाई के लक्षण और बुराई के निवारण में होती है। समाज के साथ आत्मीयता और एकात्मता में जीवन की पूर्णता अनुभव करना, सामाजिक चेतना का द्योतक है। इस सामाजिक चेतना का जागरण शिक्षा का मुख्य उद्देश्य है और इस नाते यह शिक्षण संस्थाओं का महत्वपूर्ण कर्तव्य है। प्राचीन काल से ही अपने देश में सामाजिक व्यवस्था को सुचारु बनाए रखने में गुरुकुलों की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। गुरुकुल ना केवल विद्यार्थियों के लिए उपयोगी अपितु संपूर्ण समाज के लिए एवं शासन के लिए भी मार्गदर्शक की भूमिका में रहते थे।

प्राचीन ग्रंथों में ऐसे अनेक उदाहरण मिलते हैं जब स्वयं राजा भी समय-समय पर मार्गदर्शन प्राप्त करने के लिए गुरुकुल के आचार्य के पास जाया करते थे।

शैक्षणिक संस्थान शिक्षा के केंद्र होते हैं। शिक्षा के द्वारा व्यक्ति के जीवन का निर्माण होता है। शिक्षा व्यक्ति की बुद्धि को प्रकाशित करती है एवं व्यक्तियों के मिलने से ही समाज का निर्माण होता है, अतः शिक्षा द्वारा समाज का निर्माण होता है। शिक्षा के प्रकाश से ही समाज को जीवन मिलता है। इस प्रकार विद्यालय समाज-निर्माण के पवित्र स्थल हैं। विद्यालय को सूर्य की उपमा दी जाती है जिससे प्रकाशित होकर समाज को चेतना प्राप्त होती है। वास्तव में शैक्षणिक संस्थान सामाजिक चेतना एवं सामाजिक परिवर्तन के केंद्र हैं, यही इनकी शाश्वत और सार्थक भूमिका है।

शिक्षा के माध्यम से बालक की अंतर्निहित शक्तियों का विकास होता है। यह विकसित शक्तियाँ अपने समाज के हित-संरक्षण एवं बुराई के निवारण में उपयोग के लिए हैं, छात्रों में जीवन की यह दृष्टि प्रारंभ से ही संस्कार के रूप में विकसित करना शिक्षा का उद्देश्य है। इस संस्कार के अभाव में शिक्षा द्वारा विकसित शारीरिक एवं मानसिक शक्तियाँ नकारात्मक प्रभाव छोड़ती हैं समाज में दुराचार एवं छल-कपट के रूप में एवं स्वार्थ-सिद्धि के उपयोग में लाई जाती हैं। विभिन्न प्रकार के अपराधों में शिक्षित युवक भी संलग्न पाए जाते हैं। यह आज की कुशिक्षा का परिणाम है। शैक्षणिक संस्थानों के माध्यम से विद्यार्थियों में संस्कार एवं सामाजिक चेतना का जागरण वहाँ के संस्कारक्षम वातावरण से हो, तो यही शक्तियाँ समाज की भलाई के रक्षण और बुराई के निवारण में काम आ सकती हैं।

भारत में शिक्षा-व्यवस्था प्रारंभ से ही समाज-केंद्रित रही है, समाज-आधारित रही है अतः समाज शिक्षण संस्थाओं का पोषण करना अपना नैतिक उत्तरदायित्व मानकर करता रहा है। वर्तमान में भी देश भर में अनेक शिक्षा-संस्थानों का संचालन समाज के आर्थिक सहयोग द्वारा हो रहा है। शिक्षण संस्थाओं में होने वाली विभिन्न गतिविधियों से लेकर संस्थान/विद्यालय/ महाविद्यालय के भवन-निर्माण तक में समाज खुलकर सहयोग करता है।

समाज शिक्षण-संस्थाओं के प्रति तन-मन-धन से सहयोग करने को सदैव तत्पर रहता है किंतु क्या शिक्षण संस्थाएँ समाज के प्रति अपने दायित्व-बोध का पालन कर रही हैं, यह अत्यंत विचारणीय है। ऐसे में शिक्षण संस्थाओं को विद्यार्थियों के साथ-साथ समाज के प्रति शिक्षा संस्थान के उत्तरदायित्व के बारे में भी गंभीरता से विचार करने एवं समाज की आवश्यकता एवं सामाजिक चुनौतियों के अनुरूप विभिन्न गतिविधियों का संचालन करने की आवश्यकता है। विभिन्न सामाजिक चुनौतियों के निवारण में शिक्षण संस्थाएँ अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती हैं। शिक्षा संस्थान विद्यालय के वातावरण, शिक्षकों के आदर्शमय जीवन एवं विभिन्न गतिविधियों के द्वारा विद्यार्थियों में चरित्र-निर्माण एवं जीवन मूल्यों का विकास कर सकते हैं। जिससे उनके संस्थान में पढ़ने वाली पीढ़ी भ्रष्टाचार, रिश्वतखोरी, दुष्कर्म, दहेज जैसे अपराधों से न केवल दूर रहे वरन् ऐसे अपराधों को समाप्त करने में भी अपनी भूमिका का निर्वहन कर

सकें। शैक्षणिक संस्थान कौशल-विकास से जुड़ी विभिन्न गतिविधियों द्वारा अपने विद्यार्थियों को स्वरोजगार के लिए प्रेरित एवं प्रशिक्षित कर सकते हैं ताकि बेरोजगारी की भयंकर समस्या का समाधान हो सके। कम उम्र में डिप्रेशन एवं आत्महत्या के मामले भी समाज के सामने एक बड़ी चुनौती हैं। शिक्षण संस्थान विभिन्न गतिविधियों के माध्यम से विद्यार्थियों में तनाव-प्रबंधन एवं धैर्य के गुणों का विकास कर सकते हैं ताकि इस चुनौती का सामना किया जा सके।

शिक्षा संस्थान विद्यार्थियों में सामाजिक समरसता, परिवार-प्रबोधन, सांस्कृतिक चेतना एवं राष्ट्रीय गौरव के जागरण में अपनी अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन करें, इसकी वर्तमान में प्रबल आवश्यकता है। विद्यालय समाज का लघु स्वरूप होता है। छात्रों को अलग-अलग या समूह में विद्यालय के विभिन्न उत्तरदायित्व सौंपे जा सकते हैं जिससे उनमें उत्तरदायित्व की भावना, कर्तव्यनिष्ठा, दूसरों के हित का ध्यान रखने का स्वभाव, प्रेम, सहयोग, मिलकर कार्य करने की भावना आदि सामाजिक गुणों का विकास किया जा सके।

माध्यमिक शिक्षा आयोग के प्रतिवेदन में भी यह बात कही गई है, "शिक्षा में सुधार का आरंभ विद्यालय को जीवन से पुनः जोड़ने एवं उनमें घनिष्ठ संपर्क स्थापित करने से होगा जो कि आज की परंपरागत औपचारिक शिक्षा के कारण टूट चुका है। हमें विद्यालय को वास्तविक सामाजिक जीवन एवं सामाजिक गतिविधियों का केंद्र बनाना है जहाँ आदर्श मनुष्य-समुदाय के समान सुंदर और सहज जीवन की प्रेरणा और प्रणाली दिखाई दे। (माध्यमिक शिक्षा आयोग की रिपोर्ट पृष्ठ सं.- 214) समाज में अस्पृश्यता, जाति-भेद, निर्धनता, निरक्षरता, दहेज इत्यादि समस्याएँ विकट रूप में व्याप्त हैं। छात्रों को इन समस्याओं का ज्ञान एवं प्रत्यक्ष अनुभूति हो, समाज के पिछड़े एवं निर्धन बंधुओं के प्रति छात्रों में आत्मीयता एवं एकात्मता की भावना जागृत हो। इन सभी समस्याओं एवं बुराइयों के निवारण के लिए छात्रों में संकल्प-शक्ति जागृत होकर वे जीवन में सक्रिय हों, इस दृष्टि से प्रत्येक विद्यालय को कोई एक पिछड़ा ग्राम अथवा नगरीय क्षेत्र की पिछड़ी बस्ती गोद लेनी चाहिए। इस गोद ली हुई बस्ती का छात्रों द्वारा सर्वेक्षण एवं वहाँ की समस्याओं का अध्ययन हो इसके लिए वहाँ के निवासियों से जीवन्त संपर्क किया जाना चाहिए।

हमारे देश में लगभग 5 करोड़ जनसंख्या वनवासियों की है जो घने जंगलों में रहते हैं। उनके पास जीवन की मूलभूत आवश्यकता की पूर्ति के भी संसाधन नहीं हैं। शासन की ओर से उनके लिए विभिन्न योजनाओं का संचालन किया जाता है किंतु भ्रष्टाचार उनके विकास के मार्ग में बाधक बन कर खड़ा है। शैक्षणिक संस्थानों के द्वारा इन वनवासी बंधुओं के बीच में छात्रों को ले जाकर उनके जीवन की समस्याओं की अनुभूति करवाई जानी चाहिए तथा उनके समाधान हेतु सेवा कार्य का आयोजन किया जा सकता है। इस प्रकार हम छात्रों में सामाजिक चेतना का जागरण कर सकेंगे।

शिक्षा के माध्यम से समाज में परिवर्तन आये, समाज की चेतना जागृत हो, यह शिक्षा का मुख्य उद्देश्य है। अतः हमारे शिक्षा संस्थानों की गतिविधियाँ केवल अपने छात्रों तक सीमित नहीं रह कर समाज

के जीवन को प्रभावित करने वाली, उसे दिशा देने वाली होनी चाहिए। शिक्षण संस्थान के विशाल भवनों का उपयोग सामाजिक क्रियाकलापों के लिए करना चाहिए।

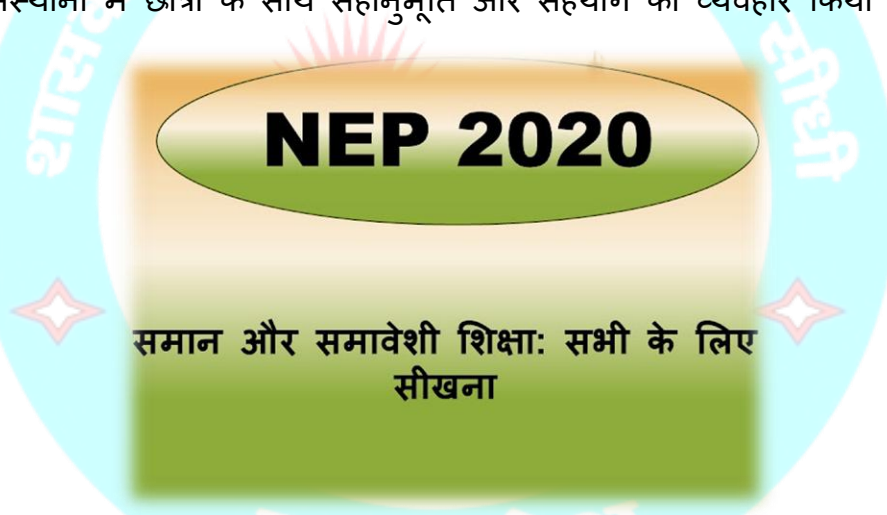
इस दृष्टि से निम्न कार्य करणीय हैं - समाज में निर्धन परिवारों के अनेक बच्चे ऐसे हैं, जो विभिन्न कारणों से शिक्षा से वंचित रह जाते हैं। वे अपने पारिवारिक व्यवसाय में सहयोग करते हैं अथवा अल्पायु में किसी काम में लग जाते हैं। ऐसे बालकों की शिक्षा के लिए निःशुल्क रात्रिकालीन कक्षाओं के संचालन हेतु सायंकाल अथवा रात्रि में विद्यालय भवन का उपयोग किया जा सकता है। वर्तमान में योग-शिक्षा के बारे में धीरे-धीरे जागृति बढ़ रही है किंतु देश भर में योग-शिक्षा केंद्रों का पर्याप्त विस्तार नहीं है। रविवार सहित प्रत्येक अवकाश के दिन विद्यालय परिसर का उपयोग 'योग शिक्षा-केंद्र' के रूप में किया जा सकता है। इस प्रकार शिक्षण संस्थान समाज के प्रति अपने दायित्वों का निर्वहन कर सकते हैं। प्रत्येक शिक्षा संस्थान में पुस्तकालय एवं वाचनालय होता है। विद्यालय समय के अतिरिक्त समय में विद्यालय के इस वाचनालय का उपयोग समाज के लिए हो सके, इसके लिए कोई व्यवस्था करनी चाहिए। समाज भी पुस्तकालय-वाचनालय की समृद्धि में अपना योगदान सहर्ष दे सकते हैं। इससे संपूर्ण समाज में स्वाध्याय का प्रचलन बढ़ाया जा सकता है। विद्यार्थियों के चरित्र-निर्माण एवं व्यक्तित्व के सर्वांगीण विकास के लिए विद्यालय में रविवार को दो-तीन घंटे के विशेष कालांश संचालित किए जा सकते हैं जिनमें कथा, गीत, सांस्कृतिक कार्यक्रम आदि के माध्यम से भारतीय संस्कृति, इतिहास आदि का ज्ञान बच्चों को करवाया जा सकता है। इन रविवारीय कक्षाओं में विद्यालय के आसपास का कोई भी विद्यार्थी जो उस विद्यालय में नहीं पढ़ता है, वह भी सहभागी हो सके- ऐसी योजना करनी चाहिए। नई पीढ़ी को अनौपचारिक रुचि पूर्ण कार्यक्रमों के माध्यम से भारतीय संस्कार देने की व्यवस्था करना उपयोगी सिद्ध होगा। विद्यालय में होने वाले विभिन्न सांस्कृतिक उत्सव एवं महापुरुषों की जयंती के सार्वजनिक आयोजन समाज को जोड़ते हुए किये जा सकते हैं। इसके माध्यम से समाज में सांस्कृतिक चेतना का जागरण होगा एवं सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रिया सरलता से संपन्न होगी।

शिक्षा सामाजिक परिवर्तन का शक्तिशाली साधन है। समाजशास्त्रियों ने सामाजिक परिवर्तन के जो प्राकृतिक और सांस्कृतिक घटक बताये हैं, उन सब के विकास का मूल आधार शिक्षा ही होती है। अनेक देशों के उदाहरण इतिहास में भरे पड़े हैं जिन्होंने शिक्षा को अपने देश में सामाजिक चेतना के जागरण एवं वांछित परिवर्तन का मुख्य अभिकरण बनाया। कोठारी आयोग ने लिखा था "शिक्षा ही एकमात्र साधन है जिसके माध्यम से बिना हिंसक क्रांति के समाज में परिवर्तन लाया जा सकता है। अन्य माध्यम भी परिवर्तन में सहायक हो सकते हैं किंतु राष्ट्रीय शिक्षा-व्यवस्था ही केवल ऐसा साधन है जो समाज के सब लोगों तक पहुँच सकता है। (कोठारी आयोग 1964, पृष्ठ- 8)

शैक्षणिक संस्थानों में भारतीयता को लाने के लिए, शिक्षा की भारतीय अवधारणा को अपनाया जा सकता है। इसके लिए, पाठ्यक्रम, शिक्षण पद्धति, शिक्षणोत्तर गतिविधियाँ, और मूल्यांकन पद्धति में

बदलाव किया जा सकता है, इससे छात्रों का विकास अखंड भारतबोध के साथ होगा। इसके अलावा, शिक्षा से जुड़ी कुछ और बातें भी ध्यान में रखनी चाहिए।

- ❖ शिक्षा किसी देश को संस्कारित करती है और इसका असर समाज, संस्कृति, राजनीति, और अर्थव्यवस्था पर पड़ता है।
- ❖ इसलिए, देश का विकास करने के लिए सबसे पहले वहां की शिक्षा-व्यवस्था को मजबूत बनाना जरूरी है।
- ❖ भारतीय जन-समाज आधुनिक शिक्षा को आम तौर पर नकारता है और दबाव या प्रलोभन में ही इसे स्वीकार करता है।
- ❖ शिक्षा की प्राचीन भारतीय अवधारणा आज भी समाज में काफी प्रचलित है।
- ❖ शैक्षिक संस्थानों का मकसद छात्रों के समग्र विकास में मदद करना होता है।
- ❖ शैक्षिक संस्थानों में छात्रों के साथ सहानुभूति और सहयोग का व्यवहार किया जाना चाहिए।



लम्बे इंतजार और विचार-विमर्श के बाद नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 को भारत सरकार द्वारा लाया गया है, जो भारत की वर्तमान शिक्षा व्यवस्था को देखते हुए एक स्वागत योग्य कदम है। वास्तव में, स्वतंत्रता प्राप्ति के लगभग 70 वर्षों के बाद तक हम भारत की शिक्षा नीति को भारत की प्रकृति, संस्कृति एवं प्रगति के अनुरूप बनाने में विफल रहे हैं। ऐसे में, स्वतंत्रता के बाद पहली बार कोई शिक्षा नीति बनी है, जिसमें समग्रता में भारतीयता का समावेशन देखा जा सकता है। इस दृष्टि से 'नई शिक्षा नीति-2020' स्वयं में अद्वितीय है। 'नई शिक्षा नीति-2020' में कई ऐसी महत्वपूर्ण बातें हैं, जिनके व्यावहारिक अनुप्रयोग से भारत की शिक्षा को एक नया स्पर्श मिलेगा, जिसके बल पर हम भारतवर्ष को पुनः विश्व गुरु के पद पर आसीन करने की दिशा में अग्रसर होंगे।

नवीन शिक्षा नीति की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इसमें समग्रता की दृष्टि का परिचय दिया गया है। वास्तव में, समग्रता की दृष्टि ही सही अर्थों में भारतीय दृष्टि है। इसका सबसे महत्वपूर्ण उदाहरण है कि 'मानव संसाधन विकास मंत्रालय' के स्थान पर अब 'शिक्षा मंत्रालय' की संकल्पना प्रस्तुत की गई है।

सच कहें तो मनुष्य को संसाधन मात्र मान लेना भारतीय दृष्टि नहीं है। भारतीय दृष्टि में मनुष्य एक स्वतंत्रचेता प्राणी है, जो संवेदनशील है और केवल उत्पादन का साधन मात्र नहीं है। इसी प्रकार परंपरागत ज्ञान के पाठ्यक्रमों के साथ-साथ व्यवसाय केन्द्रित विषयों को भी समान और संतुलित महत्व दिया गया है। अब कला, संगीत, शिल्प, खेल, योग और सामुदायिक सेवा जैसे सभी विषयों को भी पाठ्यक्रम में शामिल किया जाएगा इन्हें सहायक पाठ्यक्रम या अतिरिक्त पाठ्यक्रम नहीं कहा जाएगा।

भारतीय परंपरा में शिक्षा और समाज का गहरा संबंध रहा है, समाज के सहयोग से ही भारत में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा की एक समृद्ध परंपरा देखी गई है। इस बात का नीति में स्पष्ट समावेशन किया गया है, विद्यालय और समाज के अंतः संबंधों को इस नीति ने गहराई से पुनर्स्थापित करते हुए शिक्षा को समाज की जिम्मेदारी के रूप में रेखांकित किया है यह शिक्षा में भारतीयता के अनुगूंज की तरह है।

‘नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020’ का एक अन्य महत्वपूर्ण पक्ष है - मातृभाषा में शिक्षा। दुनिया के सारे भाषा वैज्ञानिक अनुसंधान इस तथ्य की पुष्टि करते हैं कि मातृभाषा में ही प्राथमिक शिक्षा सर्वाधिक वैज्ञानिक पद्धति है। फिर भी, हम इतने वर्षों से प्राथमिक शिक्षा के माध्यम के रूप में छात्रों को अंग्रेजी थोपते आ रहे हैं इस दृष्टि से मातृभाषा में प्राथमिक शिक्षा की व्यवस्था शिक्षा नीति का सबसे सुंदर पक्ष है, इससे भारतीय भाषाओं में शिक्षा का द्वार खुलेगा। कोठारी आयोग से लेकर कई आयोगों और समितियों ने अपनी सिफारिशों में (जी.डी.पी.) सकल घरेलू उत्पाद का 6% शिक्षा क्षेत्र पर खर्च करने की बातें कही थी, परंतु उसे मूर्त रूप इसी शिक्षा नीति में दिया गया है। सरकार ने लक्ष्य निर्धारित किया है कि जी.डी.पी. का 6% शिक्षा में लगाया जाए जो अभी 4.43% है।

परंपरागत भारतीय ज्ञान परंपरा के साथ-साथ आधुनिक तकनीकी शिक्षा का अच्छा सामंजस्य इस नवीन शिक्षा नीति में दृष्टिगोचर होता है। ई-पाठ्यक्रम क्षेत्रीय भाषाओं में विकसित किए जाएंगे, वर्चुअल लैब विकसित की जा रही है और एक राष्ट्रीय शैक्षिक टेक्नोलॉजी फोरम (NETF) भी गठित किया जा रहा है। कक्षा-6 के बाद से ही वोकेशनल पाठ्यक्रमों को जोड़ने की बात कही गई है, बच्चों के रिपोर्ट कार्ड में लाइफ स्किल्स को जोड़ा जाएगा, जिससे बच्चों में लाइफ स्किल्स का भी विकास हो सकेगा। कहीं- न- कहीं यह नीति छात्रों को रटत विद्या से बाहर निकालने की दिशा में एक महत्वपूर्ण बिंदु है। शिक्षा के सैद्धांतिक पक्षों से अधिक व्यावहारिक पक्षों पर बल दिया गया है वर्ष 2030 तक हर बच्चे के लिए शिक्षा सुनिश्चित की जाएगी। विद्यालयी शिक्षा से निकलने के बाद हर बच्चे के पास कम से कम लाइफ स्किल होगी, जिससे वो जिस क्षेत्र में काम शुरू करना चाहेगा, कर सकेगा। शिक्षकों का सम्यक प्रशिक्षण किसी भी शिक्षा-व्यवस्था का एक अहम हिस्सा होता है, इस शिक्षा-नीति में शिक्षक-शिक्षा की गुणवत्ता पर काफी सूक्ष्मता से विचार कर निर्णय लिया गया है।

उच्च शिक्षा के दो आधार बिंदु होते हैं - शिक्षण और शोध नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति में गुणवत्तापूर्ण शिक्षण और शोध दोनों पर संतुलित बल दिया गया है। गुणवत्तापूर्ण शोध-कार्य, राष्ट्र, समाज और स्थानीय

आवश्यकताओं के अनुरूप हो - इस दृष्टि से 'राष्ट्रीय शोध-प्रतिष्ठान' का प्रावधान है। यह भारत में शोध-कार्य हेतु एक नियामक संस्था होगी, जिसमें विज्ञान के साथ-साथ समाज विज्ञान, कला व मानविकी के विषयों से संबंधित शोध-कार्यों को जोड़ा गया है। यह शिक्षा नीति उच्च शिक्षा में बहुअनुशासनिकता एवं समग्र शिक्षा के मूल्यों को पोषित करते हुए भविष्य में विज्ञान, सामाजिक विज्ञान, कला, मानविकी और खेल में ज्ञान की एकता एवं अखंडता को सुनिश्चित करेगी। भारत जैसे बहुभाषी देश में सभी भारतीय भाषाओं का विकास आवश्यक मानते हुए यह नीति त्रिभाषा-सूत्र को अंगीकार कर रही है, जो प्रशंसनीय है।

कला और विज्ञान के अनुशासनों के मध्य संरचनागत विभेदों को समाप्त करते हुए पाठ्यक्रम और पाठ्येतर गतिविधियों, व्यावसायिक और शैक्षणिक धाराओं को सीखने के सहज और सुलभ पद्धतियों को उपलब्ध कराने के साथ ही विभिन्न क्षेत्रों के पदानुक्रम और बाधाओं को समाप्त करने में नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति सहयोगी सिद्ध होगी। ऑनलाइन शिक्षा पर नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति ने काफी सूक्ष्मतापूर्वक विचार कर कई प्रावधान किए गए हैं जैसे -आधारभूत डिजिटल संरचनाओं का प्रावधान, शिक्षकों को ऑनलाइन शिक्षण हेतु प्रशिक्षण एवं प्रोत्साहन इत्यादि। कोरोना काल में जो एक वैश्विक परिस्थिति चुनौती के रूप में उभरकर सामने आई है, वैसे में ऑनलाइन शिक्षण का प्रावधान एक दूरदर्शी कदम कहा जाएगा।

नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति में शिक्षा की स्वायत्तता पर भी काफी बल दिया गया है। प्रावधानों के अनुसार उच्च शिक्षा संस्थानों को स्वतंत्र समितियों द्वारा पूर्ण शैक्षणिक और प्रशासनिक स्वायत्तता के साथ शासित किया जाना है। पाठ्यक्रम को लचीला बनाने का प्रावधान है ताकि विद्यार्थी अपने सीखने की गति और कार्यक्रमों का चयन कर सकें और इस प्रकार जीवन में अपनी प्रतिभा और रुचि के अनुसार अपने रास्ते चुन सकें। शिक्षा नीति का ध्येय यह सुनिश्चित करना है कि कोई भी बच्चा जन्म या पृष्ठभूमि की परिस्थितियों के कारण सीखने और उत्कृष्टता प्राप्त करने का कोई अवसर न खो दे।

समग्रता में कहा जाए तो नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति के माध्यम से भारत की शिक्षा में भारतीयता का सही अर्थों में प्रादुर्भाव हुआ है। सैद्धांतिक और व्यावहारिक शिक्षा के मध्य, भौतिकता और आध्यात्मिकता के मध्य, परंपरागत मूल्यबोध और आधुनिक तकनीक के मध्य समन्वय की एक सुंदर चेष्टा इस नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति में देखी जा सकती है। आवश्यकता है, इस नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति को सम्यक तरीके से व्यावहारिक धरातल पर उतारने की।

अंततः मेरा स्पष्ट मानना है कि शिक्षा में राष्ट्रीयता परिलक्षित हो, इसके लिए सरकारी शैक्षणिक संस्थानों के स्तर में सुधार की नितांत आवश्यकता है। सरकारी शैक्षिक संस्थानों के स्तर में सुधार के द्वारा ही व्यापक स्तर पर शैक्षणिक बदलाव संभव है। क्योंकि इनका फलक व्यापक एवं देशव्यापी है। अंततः हमारा मानना है कि पाठ्यक्रम-निर्माण से लेकर वातावरण-निर्माण तक में राष्ट्रीय पहलुओं को यथा-स्थान समावेशित करके ही शिक्षा में राष्ट्रीयता की संकल्पना की मूर्त रूप दिया जा सकता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ: -

1. लेखक : अतुल कोठारी
दिनांक : 12 जून 2016
<https://shikshautthan.org>
2. लेखक : राष्ट्रधर्म
<https://www.rashtra-dharma.com/latest-articles-detail/4fe8869a-64de-11ed-8302-0211585a676a>
3. लेखक : राजेश्वर कुमार
दिनांक : 07 अगस्त 2020
<https://vskmalwa.com/indian-nationalism-resonates-in-new-national-education-policy/>



भारतीय ज्ञान परंपरा की राष्ट्रीय शिक्षा नीति में प्रासंगिकता

डॉ० प्रतिमा कौल

सहायक प्राध्यापक (समाजशास्त्र)

शासकीय कन्या महाविद्यालय, सीधी (म०प्र०)

शोध सारांश-

स्वतंत्रता के 75 वर्ष बाद भी हम अपने दार्शनिक, आध्यात्मिक एवं सांस्कृतिक ज्ञान सामाजिक घनिष्ठता तथा समन्वय से दूर हैं। भारतोदय हेतु हमें अपने ज्ञान को जानना, समझना एवं फैलाना परम आवश्यक है। आदिकाल से भारत देश अपने धर्म ग्रंथों, संस्कृति एवं बहुभाषीय गुणों के लिए प्रसिद्ध रहा है। यह तीनों गुण केवल शब्द मात्र नहीं अपितु प्रत्येक भारतीय के भाव हैं जो उसे अपने देश की संस्कृति से विरासत में मिले हैं। भारतीय शिक्षा व्यवस्था का स्वरूप व्यावहारिक एवं दैनिक जीवन को सुचारु रूप से संचालित करने में सहायक रहा है। इससे यह ज्ञात होता है कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति केवल भारत के गौरवशाली इतिहास को ही हमारे शिक्षा का अंग नहीं बना रही है, बल्कि भूतकाल में जन्में सभी महान व्यक्तित्व जैसे चरक, आर्यभट्ट, बुद्ध, वाल्मीकि, महात्मा गांधी, भगत सिंह, गार्गी, अपाला, घोष, सावित्री, चाँद बीबी, रजिया सुल्तान आदि के विचारों एवं कार्यों को वर्तमान की प्रासंगिकता के अनुरूप शिक्षा के सभी स्तरों में शामिल करने का प्रयास कर रही है, जिससे एक स्वस्थ भारत वर्ष को पुनः स्तंभित किया जा सके। यह शिक्षा नीति ऐसी कल्पना करती है कि बालक अपने ज्ञान, व्यवहार, बौद्धिक कौशल से स्थाई विकास, समृद्ध जीवनयापन एवं वैश्विक कल्याण के प्रति प्रतिबद्ध बन सके, तभी उसे एक वैश्विक नागरिक माना जा सकता है। इस कल्पना को वास्तविक रूप प्रदान करने के लिए सनातन ज्ञान, परंपरा, प्रथा, विचार एवं मूल्यों को नव चरित्र ज्ञान के साथ एकीकृत करना होगा ना कि एक अलग विषय के रूप में स्थापित करके ज्ञान प्रदान किया जाए तभी बालक का विकास सनातनी ज्ञान अनुरूप संभव है।

शब्दावली:- सनातन ज्ञान, राष्ट्रीय शिक्षा नीति, प्राचीन भारत, बौद्धिक विकास।

प्रस्तावना- भारतीय दर्शन के अनुसार मनुष्य के चिंतन की कई विमायें हैं, परंतु पश्चात ज्ञान इसका विरोध करता रहा है और ज्ञान की केवल एक ही धारा को मानता और फैलता रहा है। हम सभी आज भी इस धारा का हिस्सा बने हुए हैं। ब्रिटिश काल से प्रचलित हुई हमारी शिक्षा प्रणाली सदैव ही भारतीय ज्ञान को दबाने और पाश्चात्य ज्ञान को सर्वोपरि बनाने का कार्य करती रही है। यही कारण है की स्वतंत्रता के 75 वर्ष बाद भी हम अपने दार्शनिक, आध्यात्मिक एवं सांस्कृतिक ज्ञान, सामाजिक घनिष्ठ तथा समन्वय से दूर हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 द्वारा भारतीय ज्ञान परंपरा को शिक्षा व्यवस्था में स्थान दिए जाने से

हमें भारतीय ज्ञान परंपरा को विकसित करने का एक सुअवसर मिला है। इस शिक्षा नीति के द्वारा हम भारत को विश्व गुरु बनाने का स्वप्न देख सकते हैं।

भारतीय ज्ञान परंपरा-

आदिकाल से ही भारत देश अपने धर्म- ग्रंथों, संस्कृति एवं बहुभाषी गुण के लिए प्रसिद्ध रहा है। भारतीय संस्कृति के अवबोध, संरक्षण एवं संवर्धन हेतु भारतीय ज्ञान परंपरा का ज्ञान होना परम आवश्यक है, इसके बिना हम बालक के सर्वांगीण विकास की कल्पना नहीं कर सकते हैं। बालक जिस वातावरण में निवास करता है उसे ही आत्मसात करता है, यही कारण है कि भारतीय संस्कृति के भाव अपने आप भारतीयों में परिलक्षित होते हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 ने शिक्षा क्षेत्र के प्रत्येक स्तर पर भारतीय ज्ञान परंपरा की प्रासंगिकता को शामिल करने पर जोर दिया है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अनुसार, भारतीय ज्ञान परंपरा का शिक्षा में आगमन शिक्षक एवं विद्यार्थी दोनों को न केवल अपने सांस्कृतिक पृष्ठभूमि से परिचित कराएगा अपितु वर्तमान में संतुलित व्यवहार एवं सामाजिक सतता का अवबोध कराने की ओर अग्रसर भी करेगा।

हमारी प्राचीन गुरुकुल शिक्षा प्रणाली जो प्रायः मनसा, वाचा, कर्मणा पर आधारित थी, सदैव बालक के नैतिक, सामाजिक, बौद्धिक, आर्थिक, राजनीतिक, भावात्मक आदि विकास पर ध्यान केंद्रित किया था तथा आत्मनिर्भरता, सम्मान, सत्यता, नम्रता जैसे सनातन मूल्यों के सृजन पर जोर दिया है। गुरुकुल प्रणाली दर्शाती है कि आदिकाल से ही भारतीय शिक्षा व्यवस्था का स्वरूप व्यावहारिक एवं दैनिक जीवन को सुचारु रूप से संचालित करने में सहायक रहा है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति केवल भारत के गौरवशाली इतिहास को ही हमारी शिक्षा का अंग नहीं बना रही है, बल्कि देश में जन्में सभी महान व्यक्तित्वों के विचारों एवं कार्यों की वर्तमान की प्रासंगिकता के अनुरूप शिक्षा के सभी स्तरों में शामिल करने का प्रयास कर रही है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति का यह व्यापक दृष्टिकोण विद्यार्थी में नैतिक, सामाजिक एवं बौद्धिक क्षमता का सृजन करने में सहायक हो सकेगा। भारतीय दृष्टिकोण से ज्ञान प्राप्त करके ही हम विश्व गुरु बनने की कल्पना कर सकते हैं, क्योंकि किसी भी देश का विकास उसके स्वयं की सृजनात्मक एवं अनोखेपन पर निर्भर करता है, वही भारतवर्ष तो भिन्न-भिन्न संस्कृतियों के गौरव से ओत-प्रोत देश है। अतः भारत को अपनी प्राचीन ज्ञान परंपरा को पुनः उद्धोषित करने का प्रयास करना होगा।

पहले हमें यह समझने का प्रयास करना चाहिए कि, भारतीय ज्ञान परंपरा क्या है एवं हमारी शिक्षा व्यवस्था में इसकी क्या आवश्यकता है? जैसा कि नाम से ही विदित होता है कि, भारतीय ज्ञान परंपरा भारतीय संस्कृति के अलग-अलग कालखंड से प्राप्त अद्वितीय ज्ञान एवं प्रज्ञा का धोतक हैं। इस ज्ञान परंपरा में आधुनिक विज्ञान प्रबंधन, ज्योतिष विद्या, कर्म, धर्म, त्याग, भोग, तपस्या, लौकिक एवं पारलौकिक सभी प्रकार के अद्भुत ज्ञान का संगम है। वेद, पुराण, उपनिषद, वेदांग वांगमय, रामायण आदि

विद्या को मनुष्य जीवन का श्रेष्ठ अंग स्वीकार करते हुए मनुष्य को ज्ञानवान बनाने का प्रयास करते रहे हैं। प्राचीन काल के गुरुकुल पद्धति इन्हीं ग्रंथों के अधीन थी, जिसके अंतर्गत गुरु अपने शिष्य को श्रुति-ज्ञान के माध्यम से पारंगत करने की कोशिश करता था। इसके द्वारा ही बालक के नैतिक, सामाजिक, मनोवैज्ञानिक, आर्थिक एवं तार्किक गुणों को विकसित किया जाता था। प्रारंभ से ही बच्चों को मनुष्य एवं प्रकृति के मध्य सामंजस्यपूर्ण संतुलन बनाए रखने की सीख दी जाती थी। शिक्षण के माध्यम से बच्चों को वेदों को पढ़ने, उनका अनुपालन एवं अनुशीलन करने की शिक्षा दी जाती थी, जिसका प्रभाव उनके दैनिक जीवन पर भी पड़ता था। जिससे बालक समाज एवं अपने परिवार के प्रति कर्तव्यपरायण एवं जिम्मेदार बनते थे, इस प्रकार जीवन संबंधी सभी मूल पक्ष इस काल की शिक्षा प्रणाली में उपस्थित थे।

शिक्षा व्यवस्था ने अधिगम एवं शारीरिक विकास दोनों पक्षों पर ध्यान केंद्रित किया था। जैसा कि विष्णु पुराण में कहा गया है कि, कर्म वही हैं जो बंधन से मुक्त करें तथा शिक्षा वही जो मुक्ति का मार्ग प्रशस्त करें शेष कर्म निपूर्णता प्रदान करने का कार्य करते हैं। शिक्षा के इसी संकल्प को भारतीय शिक्षा व्यवस्था ने अंगीकार करते हुए सभी मठ, गुरुकुल, विश्वविद्यालय, मंदिर, पाठशाला एवं अन्य शिक्षण संस्थान में स्वदेशी शिक्षा देना प्रारंभ किया था। इन सभी संस्थानों में शिक्षण का मुख्य स्रोत मौखिक था। आदिकालीन शिक्षा प्रणाली अर्वाचीन ज्ञान, विज्ञान, प्रकृति प्रेम, मानवता को प्रोत्साहन प्रदान करने वाली थी। इन्हीं ज्ञानरूपी स्वरूपों का विस्तार भारत के नालंदा, तक्षशिला, विक्रमशिला, उज्जैयिनी, काशी, आदि विश्वविद्यालय द्वारा किया जाता था, जिसमें भारत के ही नहीं अपितु पास-पड़ोस देश के शिक्षार्थी एवं शोधार्थी ज्ञान प्राप्त करते थे। गार्गी, अपाला, मैत्रीय, लोपमुद्रा आदि विदुषी महिलाओं ने भी भारतीय ज्ञान परंपरा में अपना अमिट योगदान दिया है। अतः भारतीय ज्ञान परंपरा मनुष्य को पशुता रूपी जीवन से मुक्त करते हुए मनुष्यता का अमृतपान कराता है, इसे शिक्षा व्यवस्था से दूर करना अपने पैर पर कुल्हाड़ी मारने के बराबर है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति में सनातन ज्ञान परंपरा की उपयोगिता

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भारत के सनातन ज्ञान एवं विचारों से समृद्ध परंपरा के आलोक में निर्मित की गई है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति के आधार स्तंभों में भारतीय ज्ञान परंपरा को एक केंद्रीय स्तंभ माना गया है, जहां शिक्षा के प्राथमिक इकाई (पूर्व प्राथमिक शिक्षा) से लेकर शिक्षा की अंतिम इकाई (प्रौढ़ शिक्षा) तक भारतीय ज्ञान को स्थापित करने का प्रयास किया गया है। यह शिक्षा नीति ऐसी कल्पना करती है कि शिक्षार्थी अपने ज्ञान व्यवहार बौद्धिक कौशल से स्थायी विकास, समृद्धि, जीवनयापन एवं वैश्विक कल्याण के प्रति प्रतिबद्ध बन सके तभी उसे एक वैश्विक नागरिक माना जा सकता है। एक ऐसी शिक्षा व्यवस्था जिसमें कोई भी शिक्षार्थी सामाजिक, आर्थिक, बौद्धिक एवं अन्य भेदभाव के कारण पीछे नहीं रहेगा। इसके लिए सर्व शिक्षा अभियान को समग्र शिक्षा के रूप से परिभाषित करते हुए वर्ष 2030 तक सभी बच्चों को प्राथमिक स्कूलों में 100% नामांकन करने का लक्ष्य रखा है, जो भारत को एक नई दिशा

देने में सहायक होंगे। भाषा रूपी असंगतता: को समाप्त करते हुए इस शिक्षा नीति ने सभी बच्चों की प्राथमिक स्तर की शिक्षा को अपनी मातृभाषा या स्थानीय भाषा में प्रदान करने की बात कही है, जो बालक के मूलभूत आवश्यकताओं एवं मूल्यों को जानने एवं समझने में सहायक सिद्ध होगी। इसके द्वारा बालक अपनी अनिवार्य आवश्यकताओं को पूरा कर सकेगा। सामाजिक विज्ञान में समाहित लक्ष्य एवं विषय भारतीय ज्ञान परंपरा, स्थापत्य कला एवं संस्कृति आदि के बारे में सीखने सिखाने का सुअवसर प्रदान करती है। इसी प्रकार भाषागत साहित्य एवं अन्य विषयों के पाठ्यक्रम में स्थानीय ज्ञान एवं सनातन ज्ञान की उपलब्धता बालक को अपने देश के बारे में जानने में मदद करेगी।

वहीं इसके अन्य पक्ष पर ध्यान दिया जाए तो हमें पाठ्यचर्या निर्माण एवं शिक्षण के समय भी यह ध्यान रखने की आवश्यकता होगी कि भारतीय ज्ञान किसी सूचना या महत्वपूर्ण बिंदु के रूप में न प्रस्तुत करके, किसी प्रकार की कहानी या विस्तृत रूप में व्याख्यान विवरण दिया जाना चाहिए, तभी बालकों की उसके प्रति रुचि में वृद्धि होगी। संस्कृति एवं कला का संज्ञान प्रदान करते हेतु समय-समय पर स्थानीय कलाकारों से परिचय करना तथा सहभागी प्रतियोगिताओं में प्रतिभाग करने के लिए उत्साहित किया जाना चाहिए, संग्रहालयों, नदियों, पहाड़ियों, झीलों आदि पर परियोजना बनाने का सुझाव देने के साथ-साथ यहां पर बालकों को भ्रमण भी करना चाहिए। जिसे बालक यह जानने में भी समर्थ हो सकेंगे कि किस प्रकार से स्थानीय समस्या का समाधान स्थानीय नियमों एवं तरीकों से भी किया जा सकता है, इस स्थानीय ज्ञान की वर्तमान समाज के साथ क्या प्रासंगिकता है? को भी समझने में विद्यार्थियों की सहायता करनी चाहिए। वर्तमान समय में पर्यावरण संरक्षण एवं वृक्षारोपण पर हर कोई ध्यान केंद्रित कर रहा है। यहां पर शिक्षकों का यह दायित्व बनता है कि बच्चों को प्राचीन काल में पर्यावरण संरक्षण एवं वृक्षारोपण प्रक्रिया से होने वाले कार्यों से अवगत करना तथा तब की महान उपलब्धियों के बारे में ज्ञान प्रदान करें।

इस प्रकार सनातन ज्ञान के साथ नवीन ज्ञान को समाहित करके पढ़ाने वाले शिक्षक बहुत ही प्रचुर मात्रा में उपलब्ध है, इसलिए इसके लिए शिक्षकों को दोष नहीं दिया जा सकता है कि वह बालकों को सही रूप से शिक्षित नहीं कर पा रहे हैं, बल्कि अब उन्हें पुनः इसके अनुरूप प्रशिक्षित अवश्य किया जा सकता है और इसके लिए व्यापक प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए जाने चाहिए जिससे कि शिक्षक अपने शिक्षक प्रणाली में भारतीय ज्ञान परंपरा के अनुरूप परिवर्तन ला सके और बालकों को भारतीय ज्ञान परंपरा, सनातन ज्ञान के प्रति शिक्षित कर सके।

निष्कर्ष:- निष्कर्षतः हम कह सकते हैं कि भारत की शिक्षा व्यवस्था को सुदृढ़ता प्रदान करने हेतु सनातन ज्ञान एवं वर्तमान ज्ञान को एकीकृत करने की अति आवश्यकता है। भारतीय ज्ञान परंपरा को ध्यान में रखते हुए विद्यार्थियों को ज्ञान प्रदान किया जाना चाहिए, इसके लिए राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में दिए गए निर्देशों एवं कार्यों को पूरा करने के लिए आवश्यक है कि हम पहले इन निर्देशों को एक खोजपूर्ण तरीके से ग्रहण करें, तत्पश्चात पाठ्यचर्या का निर्माण, शिक्षक अभिकल्प एवं अधिगम संबंधी उपकरण आदि पर

ध्यान केंद्रित करें। केवल सत्य पूर्ण एवं वैज्ञानिकता के आधार पर ही हम भारतीय ज्ञान परंपरा एवं सनातन ज्ञान को सुचारू रूप से आगे बढ़ा सकते हैं, तभी आगामी पीढ़ी भारत के गौरव को अनुभव कर सकेगी तथा अपनी भारतीय संस्कृति को समृद्ध बनाने में अपना सहयोग प्रदान करेगी।

संदर्भ सूची:

1. नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020: एक सिंहावलोकन (2020), महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय वर्धापुरी, नताशा (30 अगस्त 2019), भारत सरकार की राष्ट्रीय शिक्षा नीति की समीक्षा
2. Kumar, K. (2005). Quality of Education at the Beginning of the 21st Century: Lessons from India. Indian Educational Review
3. https://www.education.gov.in/sites/upload_files/mhrd/files/NEP_final_HINDI_0.pdf



नवीन राष्ट्रीय शिक्षा नीति और भारत का भविष्य

डॉ. राजेश कुमार साहू
सहायक प्राध्यापक (राजनीति विज्ञान)
शासकीय कन्या महाविद्यालय, सीधी (म.प्र.)

शोध सारांश-

शिक्षा हमेशा से ही किसी भी समाज में प्रगति और विकास की आधारशिला रही है। नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) 2020 के साथ, भारत ने देश के हर बच्चे को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम आगे बढ़ाया है। एनईपी 2020 का उद्देश्य शिक्षा क्षेत्र को उज्ज्वल भविष्य की ओर ले जाने वाले प्रमुख सिद्धांतों और स्तंभों पर ध्यान केंद्रित करके शिक्षा प्रणाली को बदलना है। स्वामी विवेकानंद ने कहा था 'शिक्षा का मूल उद्देश्य मानव के अंदर व्याप्त सुप्त शक्ति का प्रकटीकरण है। अर्थव्यवस्था को विकसित करने में ज्ञान सृजन और अनुसंधान की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। आज देश को सामाजिक चुनौतियों का सामना करने और इनके समाधान खोजने के लिए उच्चस्तरीय अंतर विषयक अनुसंधान की आवश्यक है। राष्ट्रीय अनुसंधान फाउंडेशन (एनआरएफ) की स्थापना से राष्ट्र में गुणवत्तायुक्त अनुसंधान को सही रूप में विकसित किया जा सकेगा।

उचित बुनियादी शिक्षा प्राप्त करना भारतीय संविधान के अनुसार प्रत्येक व्यक्ति का जन्मसिद्ध अधिकार है। सुखी जीवन जीने के लिए, तैयार होने के लिए एक बच्चे के विकास में शिक्षा बेहद महत्वपूर्ण तत्व है। जीवन में शिक्षा के महत्व को देखते हुए वर्तमान सरकार ने शिक्षा के क्षेत्र में नए बदलावों के साथ राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 को मंजूरी दे दी। इससे पूर्व 1986 में राष्ट्रीय शिक्षा नीति बनाई गई थी और वर्ष 1992 में इसमें संशोधन किया गया था। नई शिक्षा नीति 2020 का मुख्य उद्देश्य भाषा दक्षता वैज्ञानिक स्वभाव सौंदर्य बोध नैतिक तर्क डिजिटल साक्षरता भारतबोध और चेतना का विकास करना है साथ ही राष्ट्रीय पाठ्यचर्चा की रूपरेखा में सभी प्रमुख भारतीय भाषाओं को महत्व पाठ्यक्रम को और अधिक गुणवत्ता युक्त लचीला एकीकृत और मूल्यांकन पर करने की बात कही गई है। एनआरएफ राज्य विश्वविद्यालयों व अन्य सार्वजनिक संस्थानों में अनुसंधान को स्थापित करने का कार्य करेगा। नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति देश में अनुसंधान की गुणवत्ता और उसकी मात्रा को बदलने के लिए एक व्यापक दृष्टिकोण को लागू करती है। इस नीति के अंतर्गत उच्च शिक्षा की नियामक प्रणाली परिवर्तन को आवश्यक बताया गया है, जो उच्चतर शिक्षा क्षेत्र को सक्रिय करने और इसे कामयाब बनाने में सहायक होगा। यह शिक्षा नीति

नियंत्रण व संतुलन से शिक्षा के व्यवसायीकरण को रोकने का कार्य करेगी। साथ ही राजकीय और निजी सभी उच्चतर शिक्षण संस्थानों को समानता प्रदान करेगी।

उच्चतर शिक्षण संस्थानों में प्रभावी प्रशासन और नेतृत्व के लिए भी यह शिक्षा नीति लाभकारी सिद्ध होगी। शिक्षा नीति में प्रौढ़ शिक्षा को भी बढ़ावा दिया गया है। प्रौढ़ शिक्षा के लिए पाठ्यचर्यात्मक ढांचे में बुनियादी साक्षरता, संख्या ज्ञान, महत्वपूर्ण जीवन कौशल, वित्तीय साक्षरता, डिजिटल साक्षरता, व्यावसायिक कौशल विकास, भारतीय भाषाओं, कला व संस्कृति के संवर्धन आदि को शामिल किया जाएगा। प्रौद्योगिकी के उपयोग और एकीकरण के लिए भी यह शिक्षा नीति कार्य करेगी। इसके लिए राष्ट्रीय शैक्षिक प्रौद्योगिकी मंच (एनईटीएफ) की स्थापना की जा रही है। एनईटीएफ केंद्र व राज्य सरकार की एजेंसियां को स्वतंत्र व प्रमाण आधारित परामर्श उपलब्ध करवाएगा। साथ ही शैक्षिक प्रौद्योगिकी में बौद्धिक एवं संस्थागत क्षमता का निर्माण करवाएगा। इसके अलावा प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में रणनीतिक रूप से अत्यन्त प्रभावी कार्यों की परिकल्पना व अनुसंधान और नवाचार के लिए नई दिशाओं को स्पष्ट करने का कार्य करेगी।

पाठ्यक्रम और मूल्यांकन संबंधी सुधार-

- इस नीति में प्रस्तावित सुधारों के अनुसार कला और विज्ञान, व्यवसायिक तथा शैक्षणिक विषयों एवं पाठ्यक्रम व पाठ्येतर गतिविधियों के बीच बहुत अधिक अंतर नहीं होगा।
- कक्षा 6 से ही शैक्षिक पाठ्यक्रम में व्यवसायिक शिक्षा को शामिल कर दिया जाएगा और इसमें इंटरनशिप की व्यवस्था भी की जाएगी।
- राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद द्वारा स्कूली शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यक्रम रूपरेखा तैयार की जाएगी।
- छात्रों के समग्र विकास के लक्ष्य को ध्यान में रखते हुए कक्षा 10 और कक्षा 12 की परीक्षाओं में बदलाव किया जाएगा। इसमें भविष्य में सेमेस्टर या बहुविकल्पीय प्रश्न आदि जैसे सुधारों को शामिल किया गया है।
- छात्रों की प्रगति के मूल्यांकन के लिए मानक निर्धारक निकाय के रूप में 'परख' नामक एक नए 'राष्ट्रीय आकलन केंद्र' की स्थापना की जाएगी।
- छात्रों की प्रगति के मूल्यांकन तथा छात्रों को अपने भविष्य से जुड़े निर्णय लेने में सहायता प्रदान करने के लिए 'कृत्रिम बुद्धिमत्ता' आधारित सॉफ्टवेयर का प्रयोग।

शिक्षण व्यवस्था से संबंधित सुधार-

- शिक्षकों की नियुक्ति में प्रभावी और पारदर्शी प्रक्रिया का पालन तथा समय-समय पर किए गए कार्य-प्रदर्शन आकलन के आधार पर पदोन्नति।

- भारत सरकार सभी लड़कियों और साथ ही ट्रांसजेंडर छात्रों को गुणवत्तापूर्ण और न्याय संगत शिक्षा प्रदान करने की दिशा में देश की क्षमता का विकास करने हेतु एक जेंडर समावेशी निधि का गठन करेगी।
- राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद द्वारा 'शिक्षकों के लिए राष्ट्रीय व्यवसायिक मानक' एनपीएसटी का विकास किया जाएगा।
- राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद द्वारा एनसीईआरटी के परामर्श के आधार पर अध्यापक शिक्षा हेतु राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा का विकास किया जाएगा।

उच्च शिक्षा में बदलाव-

उच्च शिक्षा देश के विकास का दर्पण होती है। इस नीति उच्च शिक्षा हेतु पाठ्यक्रमों में समग्रता व एकरूपता लाई जाएगी। सभी पाठ्यक्रमों में भारतीय भाषाओं की प्राथमिकता रहेगी। प्रवेश हेतु स्नातक में 'राष्ट्रीय परीक्षण एजेंसी' द्वारा 12वीं के अंकों सहित उच्च गुणवत्ता वाली 'सामान्य योग्यता परीक्षा' के अंकों के योग से प्रवेश होगा। विषय चयन की पूर्ण स्वतंत्रता रहेगी। संस्कृत भाषा को रुचिपूर्ण व नवाचारी तरीके से प्रारंभिक विषयों जैसे विज्ञान, गणित, दर्शन शास्त्र, मनोविज्ञान आदि के साथ जोड़ा जाएगा। भारतीय भाषाओं में प्रवीणता को रोजगार आहर्ता के मानदंडों के हिस्से के रूप में शामिल किया जाएगा।

इस नीति की सबसे अच्छी बात यह है कि यदि किसी बालक ने स्नातक में किसी कारणवश 1 या 2 वर्ष की पढ़ाई पूर्ण करने के पश्चात वह छोड़ देता है, तो उसकी यह पढ़ाई बेकार नहीं जाएगी एवं जितने क्रेडिट इन वर्षों में उसने अर्जित किए हैं, वे सभी अर्जित क्रेडिट सरकार द्वारा बनाए गए 'एकेडमिक क्रेडिट बैंक' में जमा हो जाएंगे और जब भी वह एक निश्चित समय सीमा के अंदर अपना अध्ययन या डिग्री पूरी करना चाहेगा तो यह क्रेडिट उसकी डिग्री में एकेडमिक क्रेडिट बैंक से वापस जुड़ जाएंगे। एकेडमिक क्रेडिट बैंक डिजिटल लॉकर पर आधारित होगा। इसे मल्टी एंटी एवं मल्टी एग्जिट व्यवस्था कहा गया है। विद्यार्थी द्वारा स्नातक का प्रथम वर्ष पूर्ण करने पर 'सर्टिफिकेट' द्वितीय वर्ष पूर्ण करने पर 'डिप्लोमा' एवं तृतीय वर्ष पूर्ण करने पर स्नातक की डिग्री प्रदान की जाएगी। 4 वर्षीय स्नातक डिग्री शोध आधारित होगी। स्नातकोत्तर हेतु जिन्होंने 3 वर्ष की स्नातक डिग्री प्राप्त की है, उन्हें 2 वर्ष का पाठ्यक्रम जिसमें 1 वर्ष शोध पर आधारित होगा एवं 4 वर्षीय शोध आधारित डिग्री धारी विद्यार्थियों को 1 वर्ष में स्नातकोत्तर की डिग्री दी जाएगी। स्नातकोत्तर के बाद विद्यार्थी पीएच.डी में प्रवेश ले सकेंगे। इस शिक्षा नीति में एमफिल की डिग्री को समाप्त करने का प्रावधान रखा गया है।

उच्च शिक्षा में सकल नामांकन अनुपात को 27% से बढ़ाकर 50% किया जाएगा। उच्च शिक्षा में संकाय सदस्यों को अपने स्वयं के पाठ्यक्रम एवं शैक्षिक प्रक्रियाओं का निर्माण करने की स्वतंत्रता रहेगी। सभी उच्च शिक्षण संस्थान स्वच्छता का पालन करने के साथ-साथ आवश्यक सुविधाएं जैसे पीने हेतु स्वच्छ पानी, साफ-सुथरे शौचालय, पुस्तकालय, आईसीटी आधारित प्रयोगशाला एवं तकनीक युक्त कक्षा-कक्षा जैसे

संसाधनों से पूरित होंगे। इस नीति में नीति निर्माण, विनिमय, प्रचालन तथा अकादमिक मामलों के लिए एक स्पष्ट प्रथक प्रणाली का प्रावधान रखा गया है। इस हेतु राज्य या केंद्र शासित प्रदेश स्वतंत्र 'स्टेट स्कूल स्टैंडर्ड अथॉरिटी' का गठन करेंगे।

उच्च शिक्षा के पारदर्शी संचालन हेतु एक स्वतंत्र निकाय 'भारतीय उच्च शिक्षा आयोग' (एचइसीआई) के गठन की बात यह शिक्षा नीति करती है। जो उच्च शिक्षा के विनिमय, प्रत्यायन, फंडिंग एवं शैक्षिक मानकों के निर्धारण में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करेगा। उच्च शिक्षा के विनिमय हेतु 'राष्ट्रीय उच्चतर शिक्षा विनियामक परिषद' (एनएचईआरसी), प्रत्यायन के लिए 'राष्ट्रीय प्रत्यायन परिषद' (एनएसी), अनुदान हेतु 'उच्च शिक्षा अनुदान परिषद' (एचईजीसी) एवं मानक निर्धारण हेतु 'सामान्य शिक्षा परिषद' (जीईसी) का गठन किया जाएगा, जो उच्च शिक्षा में आधारभूत सुधार का काम करेंगे। उच्च शिक्षण संस्थानों को 2040 तक विस्तृत एवं बहुविषयक विश्वविद्यालयों एवं महाविद्यालयों और उच्च शिक्षण संस्थान क्लस्टर के रूप में रूपांतरित करके खंड-खंड की उच्च शिक्षा को समाप्त किया जाएगा। इस नीति में तीन तरह के उच्च शिक्षण संस्थान जिनमें अनुसंधान केंद्रित विश्वविद्यालय, शिक्षण केंद्रित विश्वविद्यालय एवं स्वायत्तशासी डिग्री प्रदान करने वाले महाविद्यालय शामिल हैं। विश्वविद्यालयों से महाविद्यालयों की संबद्धता धीरे-धीरे समाप्त की जाएगी तथा महाविद्यालयों को स्वायत्त बनाने की व्यवस्था की जाएगी। नियमानुसार देश में उच्च कोटि के विदेशी विश्वविद्यालयों के परिसर स्थापित होंगे एवं उच्च कोटि के भारतीय विश्वविद्यालयों के परिसर विदेशों में बनाए जाएंगे। जिससे न केवल सांस्कृतिक आदान-प्रदान होगा, बल्कि विदेशी लोग भारत में शिक्षा ग्रहण करेंगे और देख पाएंगे कि भारत कितना वैभव पूर्ण एवं समृद्धशाली देश है। विश्वविद्यालय भारतोन्मुखी एवं समाजोन्मुखी अनुसंधान करेंगे, जिससे देश और समाज को अनुसंधानों का लाभ मिल सके। शोध में ट्रांसडिसीप्लिनरी शोध को बढ़ावा दिया जाएगा। गुणवत्तापूर्ण शोध हेतु नेशनल रिसर्च फाउंडेशन (एनआरएफ) की स्थापना की जाएगी, जिसके लिए 2200 करोड़ रुपए का प्रावधान है। ऐसा माना गया है कि बालक में शिक्षा नीति के माध्यम से राष्ट्रीय मूल्यों का विकास कर देश के टैलेंट को देश में ही रहकर काम करने की प्रेरणा मिलेगी। इस नीति में उल्लेख किया गया है कि शिक्षा का बजट 4.4 प्रतिशत से बढ़ाकर 6% करने का प्रावधान है।

संभावनाएं-

नई शिक्षा नीति कई उपक्रमों के साथ रखी गई है, जो वास्तव में वर्तमान परिदृश्य की जरूरत है। नीति का संबंध अध्ययन पाठ्यक्रम के साथ कौशल विकास पर ध्यान देना है। किसी भी चीज के सपने देखने से वह काम नहीं करेगा, क्योंकि उचित योजनाएं और उसके अनुसार काम करने से केवल उद्देश्य पूरा करने में मदद मिलेगी। जितनी जल्दी नई शिक्षा नीति के उद्देश्य प्राप्त होंगे, उतना ही जल्दी हमारा राष्ट्र प्रगति की ओर अग्रसर करेगा। भारत की शिक्षा नीति को लेकर इस समय राष्ट्रव्यापी विचार-विमर्श चल रहा है और लोगों में आशा बन रही है कि वर्षों से इस उपेक्षित और अव्यवस्थित क्षेत्र में जरूरी सुधार

के साथ ऐसे कदम उठाए जा सकेंगे। चूंकि शिक्षा की एक व्यवस्था चल रही है और कई तरह के परिवर्तन लाने का संकल्प लिया गया है। इनका क्रियान्वयन कई चरणों में ही क्रमबद्ध रूप से किया जा सकेगा। साथ ही कई क्षेत्रों में एक साथ बदलाव की शुरुआत करनी होगी। इस दृष्टि से उन तात्कालिक कठिनाइयों पर वरीयतापूर्वक पहले ध्यान देना पड़ेगा जिसके कारण शिक्षा का लाभ मिलने में बाधा आ रही है। शिक्षा की धुरी प्राथमिक शिक्षा होती है और उसकी स्थिति को लेकर शिक्षा नीति बड़ी गंभीर है। विशेष रूप से उन गांवों के विद्यालयों की स्थिति तो बेहद चिंतनीय है, जहां पर विशाल भारत देश की 65% जनता बसती है। शिक्षा की स्थिति को लेकर प्रस्तुत वार्षिक रिपोर्ट के अनुसार दर्जा 5 में पढ़ने वाले बच्चों में से 50% ऐसे पाए गए हैं, जो दर्जा 2 के स्तर का भी ज्ञान नहीं रखते हैं। इस स्थिति को बिना नजर अंदाज किए यह अत्यंत आवश्यक है कि इन स्कूलों की हालत सुधारी जाए।

शिक्षा की प्रक्रिया में जरूरी सुधारों की दृष्टि से बच्चों को रटने से निजात दिलाने के उपायों को अध्यापन में लाना सबसे पहली जरूरत है। शिक्षण के तरीकों में बदलाव और पाठ्य सामग्री की रोचकता इसके लिए जरूरी होगी। साथ ही बच्चों के लिए पाठ्य सामग्री के अधिक भार की समस्या का निदान जरूरी होगा। 25 या 30 प्रतिशत भार कम कर दिया जाए इसका कोई गणितीय तरीका नहीं निकाला जा सकता। इसके लिए सुविचारित ढंग से निर्णय लेना होगा, ताकि विषय के शिक्षण या शिक्षार्थी किसी के भी साथ अन्याय ना हो। परंतु इस तरह का कोई बदलाव तब तक सफल नहीं होगा जब तक की मूल्यांकन की प्रक्रिया में सुधार न हो।

निष्कर्ष एवं सुझाव-

नीति का सूत्र वाक्य- 'नेशन फर्स्ट- कैरेक्टर मस्ट' है अर्थात राष्ट्रीय हित के साथ चरित्र निर्माण पर जोर रहेगा। निश्चय ही यह नीति शिक्षा व्यवस्था में व्याप्त समस्याओं एवं उद्देश्यों को पूरा करने में एक विजन डॉक्यूमेंट है। भारत का जो टैलेंट है वह भारत में ही रह सके और रहकर कार्य करें अर्थात भारत का दिमाग भारतीय समाज के उत्थान के लिए कार्य करें। यह नीति देश व समाज के विकास के साथ समग्रतापूर्ण वैश्विक नागरिक बनने में यह मील का पत्थर साबित होगी। इस नीति से आत्मनिर्भर भारत, डिजिटल भारत बन सकेगा एवं विदेशों के लिए निर्माण कर सकने वाला एवं विश्व का नेतृत्व करने वाले मानव का निर्माण हो सकेगा। इस नीति को 2021 से प्रारंभ कर 2030 तक पूर्ण रूप से लागू किए जाने का विभिन्न चरणों में प्रावधान है। सही तरीके से यदि यह राष्ट्रीय शिक्षा नीति लागू होती है, तो निश्चित ही भविष्य के स्वर्णिम भारत की आधारशिला साबित होगी और भारत को विश्व गुरु के शिखर तक ले जाएगी। आज विभिन्न सरकारी एजेंसियों, राज्य सरकारों, नीति निर्माताओं, निजी क्षेत्रों, शिक्षाविदों और सामाजिक कार्यकर्ताओं को आगे बढ़कर अपना बहुमूल्य योगदान नई शिक्षा नीति 2020 की सफलता सुनिश्चित करने में भरपूर प्रयास करना चाहिए। केंद्रीय मंत्रिमंडल ने 21वीं सदी के भारत की जरूरतों को पूरा करने के लिए भारतीय शिक्षा प्रणाली में बदलाव हेतु जिस नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 को मंजूरी

दी है, अगर उसका क्रियान्वयन सफल तरीके से होता है, तो यह नई प्रणाली भारत को विश्व के अग्रणी देशों के समकक्ष ले आएगी। 34 वर्षों पश्चात इस नई शिक्षा नीति का उद्देश्य सभी छात्रों को उच्च शिक्षा प्रदान करना है। जिसका लक्ष्य 2025 तक पूर्व-प्राथमिक शिक्षा (3 से 6 वर्ष की आयु सीमा) को सार्वभौमिक बनाना है। स्नातक शिक्षा में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, थ्री-डी मशीन, डेटा- विश्लेषण, जैवप्रौद्योगिकी आदि क्षेत्रों के समावेशन से अत्याधुनिक क्षेत्रों में भी कुशल पेशेवर तैयार होंगे और युवाओं की रोजगार क्षमता में वृद्धि होगी। अतः मुझे विश्वास है कि इस राष्ट्रीय शिक्षा नीति से हमने आगामी दशकों में भारतवर्ष को पुनः विश्वगुरु विराजित कराने की नींव रखी है। लागू की जा रही नई शिक्षा नीति से मानवीय जीवन का सही कार्यान्वयन हमें नई ऊंचाइयों पर पहुंचाएगा।

संदर्भ ग्रंथ सूची-

1. मिश्रा रितु एवं माधव सुघोष, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 : संभावभविष्यनाएं और चुनौतियां।
2. नई शिक्षा नीति 2020 दृष्टि द विजन।
3. मिश्र गिरीश्वर, नई शिक्षा नीति : संभावनाएं और चुनौतियां, कंचनजंघा पियर रिव्यूड जनरल, अंक 02 जुलाई दिसंबर 2020।
4. डॉ. योगेश कुमार गुप्ता, राष्ट्रीय शिक्षा नीति और भारत का भविष्य सहायक आचार्य, नव मीडिया विभाग, हि. प्र. के. वि.वि., धर्मशाला।
5. <https://www.jagran.com/uttarakhand/dehradun-city-new-national-education-policy-focuses-on-the-values-of-life-20611436.html>
6. https://www-nishangiglobalschool-com.translate.goog/educating-india-towards-a-brighter-future-the-new-education-policy-2023.php?_x_tr_sl=en&_x_tr_tl=hi&_x_tr_hl=hi&_x_tr_pto=tc

विद्या ददाति विनयं

“व्यक्तित्व विकास में माता-पिता की भूमिका का अध्ययन”

डॉ. उपेन्द्र सिंह

सहायक प्राध्यापक (हिन्दी)

(PMCOE) शासकीय विवेकानंद महाविद्यालय, मैहर (म.प्र.)

सारांश:

यह शोध पत्र बच्चों के व्यक्तित्व विकास में माता-पिता की जटिल और बहुमुखी भूमिका पर प्रकाश डालता है। जन्म से ही, बच्चे सुरक्षा, देखभाल और समग्र कल्याण को बढ़ावा देने वाले प्रक्षेप पथ की स्थापना के लिए अपने माता-पिता पर निर्भर रहते हैं। पारिवारिक और घरेलू वातावरण एक बच्चे के व्यक्तित्व को सकारात्मक और प्रतिकूल दोनों तरह से प्रभावित करने वाले एक महत्वपूर्ण कारक के रूप में उभरता है। माता-पिता का व्यवहार, रवैया, अनुशासन और संचार शैली, साथ ही उनकी प्रशंसा और अपेक्षाएं, बच्चे के व्यक्तित्व को आकार देने में महत्वपूर्ण हैं। यह अध्ययन माता-पिता के व्यवहार और बच्चों में विशिष्ट व्यक्तित्व लक्षणों के निर्माण के बीच सूक्ष्म संबंधों को उजागर करने के लिए पालन-पोषण की शैली, लगाव की गतिशीलता और सहकर्मि बातचीत पर प्रभाव सहित विभिन्न आयामों की पड़ताल करता है। यह शोध भविष्य की पीढ़ियों को आकार देने में माता-पिता द्वारा निभाई जाने वाली अपरिहार्य भूमिका को रेखांकित करता है और इसका उद्देश्य मनोविज्ञान, समाजशास्त्र, शिक्षा और पारिवारिक अध्ययन के क्षेत्र में मूल्यवान अंतर्दृष्टि प्रदान करना है। बच्चों के जीवन में सकारात्मक परिणामों को बढ़ावा देने के लिए व्यक्तित्व विकास में माता-पिता की महत्वपूर्ण भूमिका को समझना महत्वपूर्ण है।

मुख्य शब्द:

व्यक्तित्व विकास, माता-पिता का प्रभाव, माता-पिता-बच्चे का रिश्ता, पालन-पोषण की शैलियाँ, पालन-पोषण प्रथाएँ, बचपन का विकास, पारिवारिक वातावरण, बाल कल्याण, सामाजिक पर्यावरण।

परिचय:

मनुष्य का बचपन वह दर्पण है, जिसमें उसके भावी व्यक्तित्व की झलक देखने को मिल जाती है। परिवार एक प्रयोगशाला होती है और माता उसकी प्रधान वैज्ञानिक। इस प्रयोगशाला में विभिन्न प्रयोगों से नए-नए आविष्कार किये जा सकते हैं। यदि इस प्रयोगशाला में सुसंस्कृत एवं आत्म-सम्माननी बच्चों का निर्माण करना हो तो उन्हीं के अनुरूप प्रयत्न एवं प्रयोग किये जाने चाहिए। अपने प्रयोगों को उत्कृष्टता की श्रेणी तक पहुंचाने के लिए यथासंभव प्रयत्न करने पड़ेंगे जिससे देश व समाज भी लाभान्वित होंगे।

माता-पिता अपने बच्चों को सभ्य समाज की कड़ी एवं महान बनाने तथा उनके व्यक्तित्व को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं और जीवन के शुरुआती दौर से ही उन पर गहरा प्रभाव डालते हैं।

पारिवारिक और घरेलू वातावरण के प्राथमिक देखभालकर्ता और रचनाकार के रूप में, माता-पिता अपनी संतानों के समग्र कल्याण में महत्वपूर्ण योगदान देते हैं। व्यक्तित्व विकास की यह यात्रा जन्म से ही शुरू हो जाती है, क्योंकि बच्चे सुरक्षा, देखभाल और मार्गदर्शन के लिए अपने माता-पिता पर निर्भर होते हैं। पारिवारिक और घरेलू वातावरण एक महत्वपूर्ण कारक के रूप में उभरता है, जो बच्चे के व्यक्तित्व पर सकारात्मक या प्रतिकूल प्रभाव डालने की क्षमता रखता है। कारकों की इस जटिल परस्पर क्रिया में, माता-पिता का व्यवहार, रवैया, अनुशासन और संचार शैली, उनकी प्रशंसा और अपेक्षाओं की अभिव्यक्ति के साथ, बच्चे के व्यक्तित्व के प्रक्षेप पथ को आकार देने में महत्वपूर्ण घटक बन जाते हैं।

व्यक्तित्व विकास में माता-पिता की भूमिका को समझने के महत्व को अनुसंधान और मनोवैज्ञानिक सिद्धांतों द्वारा रेखांकित किया गया है। उल्लेखनीय रूप से, प्रख्यात मनोवैज्ञानिक अल्फ्रेड एडलर ने बच्चों के व्यक्तित्व के विकास में माता और पिता दोनों के समान प्रभाव पर जोर दिया। जबकि प्रारंभिक बचपन में माँ की भूमिका विशेष रूप से प्रमुख होती है, माता-पिता अपने बच्चों के साथियों के साथ बातचीत और बाहरी गतिविधियों में मध्यस्थ बन जाते हैं, जो शैक्षणिक उपलब्धि, नैतिक विकास और विभिन्न गतिविधि प्राथमिकताओं में महत्वपूर्ण योगदान देते हैं।

अध्ययन का उद्देश्य:

यह शोध माता-पिता के प्रभाव के बहुमुखी आयामों की पड़ताल करता है, जिसमें विभिन्न पालन-पोषण शैली, लगाव की गतिशीलता और सहकर्मी बातचीत पर प्रभाव शामिल है, जिसका उद्देश्य माता-पिता के व्यवहार और बच्चों में विशिष्ट व्यक्तित्व लक्षणों के गठन के बीच सूक्ष्म संबंधों को उजागर करना है।

- इस अध्ययन का प्रमुख उद्देश्य बच्चों के व्यक्तित्व विकास में माता-पिता की जटिल भूमिका का व्यापक रूप से पता लगाना और समझना है।
- व्यक्तित्व को प्रभावित करने वाले कारकों की पहचान करना।

अध्ययन विधि:

बच्चों के व्यक्तित्व विकास में माता-पिता की भूमिका की व्यापक खोज एवं महत्वपूर्ण अंतर्दृष्टि प्रदान करने के लिए तथा अध्ययन में माता-पिता के व्यवहार और बच्चों में विशिष्ट व्यक्तित्व लक्षणों के निर्माण के बीच जटिल अंतरसंबंध को सुलझाने के लिए सैद्धांतिक ढांचे, अनुभवजन्य अनुसंधान और विशेषज्ञ राय को एकीकृत करते हुए एक बहुआयामी दृष्टिकोण का उपयोग किया गया। यह शोध पत्र पूर्णतः सैद्धांतिक है। इसके लिए वर्णनात्मक शोध पद्धति का प्रयोग करते हुए पूर्व से प्रकाशित शोध पत्रों, आलेखों, पुस्तकों, रिपोर्टों और मानक वेब साइटों का सहारा लिया गया है।

मुख्य आलेख :

परिवार एक पाठशाला है, बालक यहाँ जो भी सीखता है वही उसके संस्कार बन जाते हैं। बच्चा उस कोमल टहनी के समान होता है, जिसे चाहे जिस ओर मोड़ा जा सकता है। इस अवस्था में जिस प्रकार के संस्कार भरे जाएंगे उसी के अनुरूप तैयार होगा।

विश्व के महापुरुषों की जीवनी का अध्ययन करने पर स्पष्ट होता है कि उनका बचपन अनुशासित, आत्म सम्मान पूर्ण, साहस, धैर्य एवं संवेदनाओं की ऐसी उदात्त भावनाओं से परिपूर्ण था जिससे वह महापुरुष बन गए। इसी प्रकार अपराधी प्रवृत्ति के मनुष्यों के जीवनी का अध्ययन करने पर पता चलता है कि उनका बाल्यकाल अव्यवस्थित और कुंठाओं से भरा था। अतः एक गतिशील और जटिल प्रक्रिया की पृष्ठभूमि में, व्यक्तित्व विकास आनुवंशिकी, पर्यावरण और सामाजिक संपर्क सहित कई कारकों से प्रभावित होता है। ये कारक सामूहिक रूप से एक बच्चे के व्यक्तित्व को आकार देते हैं और उनके लिए माता-पिता प्राथमिक देखभालकर्ता एवं आदर्श प्रारूप होते हैं। जिस तरह से माता-पिता अपने बच्चों के साथ बातचीत करते हैं, वह उनके आत्म-सम्मान, भावनात्मक विनियमन और सामाजिक कौशल पर गहरा प्रभाव डाल सकता है। गर्मजोशी, जवाबदेही और समर्थन की विशेषता वाली सकारात्मक पालन-पोषण प्रथाओं को बच्चों के व्यक्तित्व विकास में अनुकूल परिणामों से जोड़ा गया है। इसके विपरीत, नकारात्मक पालन-पोषण प्रथाएँ, जैसे कठोर अनुशासन, उपेक्षा और दुर्यवहार, प्रतिकूल प्रभावों से जुड़ी हुई हैं।

जैसे-जैसे बच्चे प्रारंभिक वर्षों में आगे बढ़ते हैं, माता-पिता-बच्चे का रिश्ता उनके समग्र विकास के लिए आधारशिला बन जाता है। माता-पिता के व्यवहार, घर के माहौल और बच्चे के व्यक्तित्व विकास की यात्रा पर इनका अत्यधिक प्रभाव पड़ता है। यह न केवल बच्चे के जीवन विकल्पों को आकार देता है, बल्कि उनके सामाजिक, शारीरिक, मानसिक और भावनात्मक स्वास्थ्य पर भी महत्वपूर्ण प्रभाव डालता है। बच्चे के व्यक्तित्व पर माता-पिता-बच्चे के रिश्ते का प्रभाव महत्वपूर्ण माना जाता है, जो सामाजिक व्यवहार, भावनात्मक विनियमन और संज्ञानात्मक विकास को प्रभावित करता है। बड़े बच्चे को छोटे के प्रति व्यवहार के लिए माता-पिता द्वारा अक्सर राम और भरत के खेल का उदाहरण दिया जाता है कि कैसे राम जीतने पर भी अपने छोटे भाइयों को जिता दिया करते थे और स्वयं हार जाते थे - चित्रकूट में भरत कहते हैं कि-

मो पर कृपा सनेहु विसेषी। खेलत खुनिस कबहु ना देखी॥

में प्रभु कृपा रीति जिम जोही। हारेहु खेल जितावहु मोही।

इस प्रकार की भावना अक्सर बालकों में अहंकार को प्रवेश नहीं करने देती। इसके अलावा, एक सकारात्मक माता-पिता-बच्चे के रिश्ते को बच्चे के व्यक्तित्व विकास में विभिन्न सकारात्मक परिणामों के लिए उत्प्रेरक के रूप में पहचाना जाता है। यह आशावादी और आत्मविश्वासपूर्ण सामाजिक व्यवहार को बढ़ावा देता है, सामाजिक, भावनात्मक, संज्ञानात्मक और प्रेरक विकास में एक स्वस्थ संतुलन को बढ़ावा देता है। बच्चे और माता-पिता के बीच एक सुरक्षित लगाव विकसित होता है, जिससे तनाव और चुनौतीपूर्ण परिस्थितियों

में भावनात्मक आदान-प्रदान में सहायता मिलती है। यह रिश्ता स्वस्थ समस्या-समाधान कौशल और सकारात्मक पालन-पोषण प्रथाओं को भी विकसित करता है, जो सकारात्मक व्यक्तित्व विकास में योगदान देता है।

सैद्धांतिक रूपरेखा:

प्रमुख मनोवैज्ञानिक सिद्धांतों के विश्लेषण से, विशेष रूप से प्रारंभिक बचपन के अनुभवों और माता-पिता के प्रभाव पर जोर देने वाले, व्यक्तित्व विकास में माता-पिता-बच्चे के रिश्ते के मूलभूत महत्व का पता चला। अल्फ्रेड एडलर जैसे प्रसिद्ध मनोवैज्ञानिकों के कार्यों ने बच्चों के व्यक्तित्व को आकार देने में माता और पिता दोनों के महत्व को रेखांकित किया, जिसमें बचपन में माँ की भूमिका पर विशेष जोर दिया गया।

माता-पिता का प्रभाव: निष्कर्षों ने पुष्टि की कि माता-पिता अपने बच्चों के व्यक्तित्व को शैशवावस्था से किशोरावस्था तक आकार देने में पर्याप्त प्रभाव डालते हैं। माता-पिता बच्चों की साथियों के साथ बातचीत और बाहरी गतिविधियों में मध्यस्थ के रूप में कार्य करते हैं, शैक्षणिक उपलब्धि, नैतिक विकास और गतिविधि प्राथमिकताओं में महत्वपूर्ण योगदान देते हैं। एडलर के दावे का समर्थन करने वाले सबूतों के साथ, माता और पिता की अलग-अलग भूमिकाओं का पता लगाया गया कि माता-पिता दोनों महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, खासकर प्रारंभिक वर्षों में।

व्यक्तित्व को प्रभावित करने वाले कारक:

अध्ययन ने व्यक्तित्व विकास को प्रभावित करने वाले असंख्य कारकों की पहचान की, उन्हें जैविक, पर्यावरणीय और सामाजिक आयामों में वर्गीकृत किया। पारिवारिक गतिशीलता, सामाजिक आर्थिक स्थिति और सांस्कृतिक प्रभावों को शामिल करने वाले पर्यावरणीय कारकों के साथ-साथ आनुवंशिक प्रवृत्तियों और विरासत में मिले लक्षणों जैसे जैविक कारकों को भी स्वीकार किया गया। सामाजिक संपर्क, विशेषकर साथियों के साथ, को बच्चे के व्यक्तित्व को आकार देने में महत्वपूर्ण माना गया।

माता-पिता-बाल संबंध की गतिशीलता:

माता-पिता-बच्चे का रिश्ता व्यक्तित्व विकास में एक मूलभूत निर्धारक के रूप में उभरा। सकारात्मक बातचीत, भावनात्मक समर्थन और एक पोषणयुक्त घरेलू वातावरण बच्चों के सामाजिक व्यवहार, भावनात्मक विनियमन और संज्ञानात्मक विकास में सकारात्मक परिणामों से जुड़ा था। अध्ययन में उन बहुआयामी तरीकों पर प्रकाश डाला गया है जिसमें माता-पिता-बच्चे का संबंध व्यक्तित्व विकास को प्रभावित करता है, जिसमें माता-पिता का प्रभाव, घर का माहौल, भते, भूमिका मॉडलिंग और भावनात्मक समर्थन शामिल हैं।

पालन-पोषण की शैलियाँ:

पालन-पोषण शैलियों की जांच से आधिकारिक पालन-पोषण और बच्चों के व्यक्तित्व विकास में सकारात्मक परिणामों के बीच महत्वपूर्ण संबंध का पता चला। आधिकारिक पालन-पोषण, जो गर्मजोशी,

समर्थन और निरंतरता की विशेषता है, किशोरों में सहमतता, कर्तव्यनिष्ठा और खुलेपन के व्यक्तित्व लक्षणों से सकारात्मक रूप से जुड़ा हुआ था। इसके विपरीत, अधिनायकवादी, उपेक्षापूर्ण/असंबद्ध, और अनुमोदक पालन-पोषण शैलियाँ बच्चों के व्यक्तित्व विकास पर नकारात्मक प्रभाव से जुड़ी थीं, जो आधिकारिक पालन-पोषण प्रथाओं को अपनाने के महत्व पर जोर देती हैं।

सकारात्मक पालन-पोषण प्रथाएँ:

गर्मजोशी, जवाबदेही और समर्थन सहित सकारात्मक पालन-पोषण प्रथाएँ, बच्चों के व्यक्तित्व विकास में अनुकूल परिणामों में महत्वपूर्ण योगदानकर्ता के रूप में उभरी हैं। जो माता-पिता इन प्रथाओं में लगे हुए थे, उनमें सकारात्मक भावनाओं, सुरक्षित लगाव, स्वस्थ समस्या-समाधान कौशल को बढ़ावा देने और सकारात्मक रोल मॉडल के रूप में काम करने की अधिक संभावना थी। नकारात्मक पालन-पोषण प्रथाएँ, जैसे कठोर अनुशासन, उपेक्षा और दुर्यवहार, बच्चों के व्यक्तित्व विकास पर प्रतिकूल प्रभाव से जुड़ी थीं, जो सकारात्मक माता-पिता-बच्चे संबंधों को बढ़ावा देने के महत्व को रेखांकित करती हैं।

माता-पिता के लिए व्यावहारिक रणनीतियाँ:

निष्कर्षों के आधार पर, अध्ययन ने माता-पिता के लिए अपने बच्चों के व्यक्तित्व को सकारात्मक रूप से आकार देने में उनकी भूमिका बढ़ाने के लिए व्यावहारिक और कार्रवाई योग्य रणनीतियाँ विकसित कीं। इन रणनीतियों में एक साथ गुणवत्तापूर्ण समय बिताना, प्यार और स्नेह दिखाना, माता-पिता-बच्चे के संस्कार बनाना, खुला संचार स्थापित करना, सीमाएँ, नियम और परिणाम निर्धारित करना और सकारात्मक रोल मॉडल के रूप में काम करना शामिल है। पहचानी गई रणनीतियाँ माता-पिता को अपने बच्चों के साथ अपने रिश्ते को मजबूत करने, स्वस्थ व्यक्तित्व विकास के लिए अनुकूल सहायक और पोषण वातावरण को बढ़ावा देने के लिए एक रोडमैप प्रदान करती हैं।

शैक्षणिक और व्यावहारिक क्षेत्रों में योगदान:

अध्ययन की अंतर्दृष्टि मनोविज्ञान, शिक्षा और पारिवारिक अध्ययन सहित शैक्षणिक विषयों में महत्वपूर्ण योगदान देती है। माता-पिता के व्यवहार और बच्चों में व्यक्तित्व लक्षणों के बीच सूक्ष्म संबंधों को उजागर करके, अनुसंधान व्यक्तित्व विकास की सैद्धांतिक समझ को बढ़ाता है। माता-पिता, शिक्षकों और नीति निर्माताओं के लिए व्यावहारिक निहितार्थों को रेखांकित किया गया, जिसमें सकारात्मक माता-पिता-बच्चे संबंधों को बढ़ावा देने और बच्चों के व्यक्तित्व विकास में सकारात्मक परिणामों को बढ़ावा देने के लिए आधिकारिक पालन-पोषण प्रथाओं को लागू करने के महत्व पर जोर दिया गया।

मौजूदा ज्ञान का सत्यापन और अनुसंधान अंतराल को संबोधित करना:

अनुभवजन्य डेटा और सैद्धांतिक ढाँचे के एकीकरण ने व्यक्तित्व विकास और माता-पिता के प्रभाव के क्षेत्र में मौजूदा ज्ञान को मान्य किया। अनुसंधान अंतराल को संबोधित करके, अध्ययन ने माता-पिता

के व्यवहार और व्यक्तित्व विकास के बीच जटिल परस्पर क्रिया की अधिक सूक्ष्म समझ प्रदान की, जिससे क्षेत्र में साहित्य समृद्ध हुआ।

निष्कर्ष : इस शोध के निष्कर्ष माता-पिता द्वारा अपने बच्चों के व्यक्तित्व को आकार देने में निभाई जाने वाली महत्वपूर्ण भूमिका को रेखांकित करते हैं। सैद्धांतिक आधारों से लेकर व्यावहारिक रणनीतियों तक, अध्ययन व्यक्तित्व विकास को प्रभावित करने वाली जटिल गतिशीलता की व्यापक समझ प्रदान करता है। मान्य अंतर्दृष्टि अकादमिक ज्ञान और व्यावहारिक अनुप्रयोगों दोनों में योगदान करती है, जो बच्चों के जीवन में सकारात्मक परिणामों को बढ़ावा देने में माता-पिता की महत्वपूर्ण भूमिका पर जोर देती है। यह शोध व्यक्तित्व विकास की जटिल और गतिशील प्रक्रिया में माता-पिता की अपरिहार्य भूमिका को रेखांकित करता है। लगाव की गतिशीलता से लेकर पालन-पोषण की शैली तक, माता-पिता के प्रभाव के विभिन्न आयामों की खोज के माध्यम से, अध्ययन का उद्देश्य मनोविज्ञान से लेकर शिक्षा तक के क्षेत्रों में सूक्ष्म अंतर्दृष्टि का योगदान करना है। माता-पिता-बच्चे के रिश्ते की जटिलताओं और व्यक्तित्व विकास पर इसके प्रभाव को समझना बच्चों के जीवन में एक सकारात्मक प्रक्षेप पथ बनाने, उनकी भलाई को प्रभावित करने और भविष्य की पीढ़ियों के चरित्र को आकार देने के लिए सर्वोपरि है।

संदर्भ सूची:

1. शर्मा देवी, भगवती (2015). बच्चों की शिक्षा ही नहीं दीक्षा भी आवश्यक। युग निर्माण योजना विस्तार ट्रस्ट गायत्री तपोभूमि मथुरा।
2. सिंह, अरुणेश और चतुर्वेदी, आर सी (2021). “बाल अपराध नियंत्रण एवं पुनर्वास में गैर सरकारी संगठनों का अध्ययन” Printing Area Peer Reviewed International Journal, :2394-5303, Issue 77, Vol-02 June 2021.
3. सिंह, अरुणेश और चतुर्वेदी, आर सी (2021). “भारत में बाल अपराध नियंत्रण के संवैधानिक प्रयासों का समाजशास्त्रीय अध्ययन” Printing Area Peer Reviewed International Journal, ISSN:2394-5303, Issue 78, Vol-01 July 2021.
4. nap.nationalacademies.org
5. parentcircle.com
6. link.springer.com
7. socialsci.libretexts.org
8. psycnet.apa.org
9. <https://www.planetspark.in/blogs/factors-affecting-personality-development-of-a-child>
10. <https://therealschool.in/blog/what-personal-factors-child-development-personality-children/>

11. <https://www.tribuneindia.com/news/impact-feature/7-factors-that-affect-personality-development-of-your-kids-473361>
12. <https://blog.teachmint.com/how-can-teachers-help-with-personality-development/>
13. <https://nurtem.com/blogs/how-can-a-teachers-personality-influence-learning/>
14. <https://www.usatestprep.com/blog/role-teachers-students-personality-development/>
15. <https://degree.astate.edu/online-programs/education/master-of-science/early-childhood-education/student-personality-development/>
16. <https://www.psychologydiscussion.net/child-development/factors-affecting-the-personality-of-a-child/1097>
17. https://webofproceedings.org/proceedings_series/ESSP/ICRTPE%202019/ICRTPE190.pdf
18. <https://www.parentingni.org/blog/parent-child-relationship-why-its-important>
19. <https://www.planetspark.in/blogs/factors-affecting-personality-development-of-a-child>
20. <https://www.frontiersin.org/articles/10.3389/fpsyg.2023.1048391>
21. <https://www.ncbi.nlm.nih.gov/pmc/articles/PMC3399663/>
22. <https://www.frontiersin.org/articles/10.3389/fpsyg.2021.558224>
23. <https://osf.io/ahmzw/download>
24. <https://www.familyservicesnew.org/news/8-ways-to-strengthen-a-parent-child-relationship/>
25. <https://www.kentwoodprepschool.com/news/strengthen-parent-child-relationship/>
26. <https://emotionallyhealthykids.com/10-ways-to-build-a-strong-parent-child-relationship/>
27. <https://raisingchildren.net.au/newborns/connecting-communicating/bonding/parent-child-relationships>
28. <https://www.verywellfamily.com/tips-to-strengthen-families-617242>
29. <https://www.europeanproceedings.com/article/10.15405/epsbs.2018.07.62>
30. <https://www.planetspark.in/blogs/factors-affecting-personality-development-of-a-child>
31. <https://www.parentingni.org/blog/parent-child-relationship-why-its-important/>
32. <https://www.frontiersin.org/articles/10.3389/fpsyg.2021.558224>
33. <https://www.ncbi.nlm.nih.gov/pmc/articles/PMC3399663/>

34. <https://www.ncbi.nlm.nih.gov/pmc/articles/PMC6178334/>
35. <https://www.frontiersin.org/articles/10.3389/fpsyg.2023.1048391>
36. <https://www.atlantis-press.com/article/125984574.pdf>
37. <https://www.europeanproceedings.com/article/10.15405/epsbs.2018.07.62>
38. https://mnj.journals.ekb.eg/article_149700.html
39. <https://files.eric.ed.gov/fulltext/EJ1161470.pdf>
40. <https://parentingscience.com/authoritative-parenting-style/>
41. <https://www.ncbi.nlm.nih.gov/pmc/articles/PMC8967044/>



गुरु शिष्य मर्यादा की महान परंपरा

डॉ. गूंजा पंवार

सहायक प्राध्यापक (गृहविज्ञान)

(PMCOE) शासकीय विवेकानंद महाविद्यालय, मैहर (म.प्र.)

अनवर

भूतपूर्व छात्र (हिंदी विभाग)

मोनाड यूनिवर्सिटी, हापुड़ (उत्तर प्रदेश)



सारांश-

गुरु शब्द मुलतः संस्कृत का शब्द है जो 'गु' और 'रु' से लिया गया है। यहां 'गु' अर्थ अंधकार या अज्ञान है और 'रु' का अर्थ दूर करने वाला होता है। इसलिए गुरु को अंधकार या अज्ञान का नाश करने वाला कहा जाता है।

भारतीय संस्कृति में गुरु-शिष्य की परम्परा अति प्राचीन है। प्राचीन काल से ही गुरु भक्ति की महान मर्यादा रही है। गुरु अपना सम्पूर्ण ज्ञान शिष्य को सौंप देते हैं और शिष्य को भूत, वर्तमान व भविष्य से परिचय करवाते हैं। भारत में सदा ही सद्गुरु की महिमा गाई जाती रही है। गीता में कहा गया है कि जीवन को सुंदर बनाना, निष्काम और निर्दोष करना ही सबसे बड़ी विद्या है। इस विद्या को सिखाने वाला ही सद्गुरु कहलाता है। स्वामी विवेकानंद जी ने भी कहा है कि सद्गुरु वही है जिसे गुरु परम्परा से आध्यात्मिक शक्ति प्राप्त हुई हो। वह शिष्य के पापों को स्वयं अपने ऊपर ले लेता है।

इसी कड़ी में गुरु-शिष्य संबंध को सबसे पवित्र और सर्वोच्च माना गया है। कहा भी गया है कि "गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुः गुरुर्देवो महेश्वरः। गुरुः साक्षात् परब्रह्म तस्मै श्री गुरुवे नमः॥" इसलिए सभी आध्यात्मिक और शैक्षणिक गुरुओं को सम्मान देने के लिए समर्पित त्योहार के रूप में गुरु पूर्णिमा मनाया जाता है। गुरु पूर्णिमा का ऐतिहासिक, आध्यात्मिक, सांस्कृतिक और सामाजिक महत्व है। यह एक अंतर्राष्ट्रीय

त्योहार है, जिसे भारत के अलावा नेपाल, भूटान समेत कई अन्य देशों में भी मनाया जाता है। यह त्योहार हिंदू पंचांग के अनुसार आषाढ़ पूर्णिमा को मनाया जाता है इसी दिन महाभारत के रचयिता ऋषि वेद व्यास की जयंती भी है।

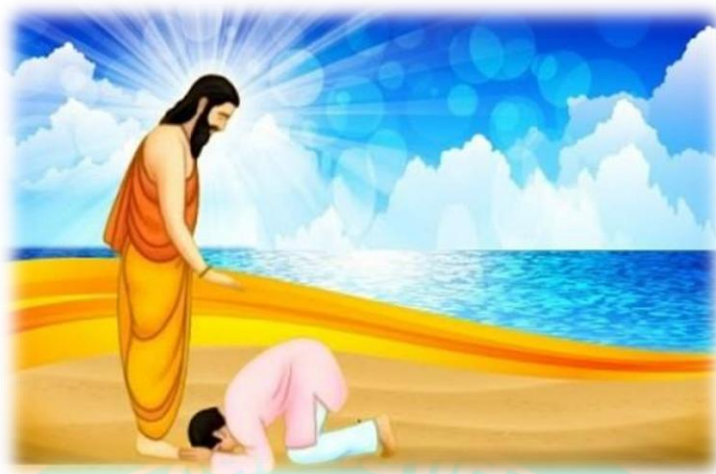
बौद्ध परंपरा के अनुसार, यह त्योहार बौद्धों द्वारा भगवान बुद्ध के सम्मान में मनाया जाता है। यह दिन ऋषि व्यास के सम्मान में भी मनाया जाता है, जिन्हें प्राचीन हिंदू परंपराओं में सबसे महान गुरुओं में से एक और गुरु-शिष्य परंपरा के प्रतीक के रूप में भी देखा जाता है। जैन परंपराओं के अनुसार, गुरु पूर्णिमा को त्रीनोक गुहा पूर्णिमा के रूप में जाना जाता है, जिसमें अपने त्रीनोक गुहाओं और शिक्षकों को विशेष सम्मान दिया जाता है। इस प्रकार गुरु पूर्णिमा का त्योहार हिन्दुओं के साथ - साथ बौद्ध धर्म और जैन धर्म के लोग भी मनाते हैं। सिख धर्म में भी गुरु को सर्वस्व माना गया है, भारतीय संस्कृति में भगवान से भी बड़ा दर्जा गुरु को दिया गया है। गुरु के बिना जीवन की कल्पना भी अधूरी है, माता पिता हमें संस्कार देते हैं तो दूसरी तरफ गुरु हमें ज्ञान देते हैं। गुरु का ज्ञान और शिक्षा ही जीवन का आधार है, एक छात्र जो सीख और ज्ञान प्राप्त कर सकता है, वह अक्सर इस बात पर निर्भर करता है कि उसका गुरु कैसा है? इस प्रकार गुरु पूर्णिमा के त्योहार का नाम सूर्य के प्रकाश से पड़ा, जो चंद्रमा को चमकता है, अर्थात् एक छात्र केवल तभी चमक सकता है, जब उसे गुरु का प्रकाश मिले।

गुरु केवल उसे नहीं कहते जो शिक्षक या आचार्य हो, जो हमें ज्ञान के नंदनकानन में पहुंचा दे, वही वास्तविक गुरु हैं। विद्यालय में तो प्रश्न पूछने पर जिज्ञासा का समाधान होता है किंतु गुरु तो बिन कहे, सुने, शिष्य के हृदय के भीतर झांक लेता है। गीता के इन वचनों से गुरु-शिष्य संबंधों की स्थापना के विषय में जाना जा सकता है : तद्विद्विप्रणिपातेन परिप्रश्नेन सेवया। यह ज्ञान प्रणाम करके, बार-बार पूछ करके व सेवा द्वारा प्राप्त करो। प्रणाम और सेवा अर्थात् विनम्रता। यदि अभिमान से भर कर गुरु के पास जाओगे तो दुर्योधन की भांति हार जाओगे। अर्जुन की भांति धनुर्धारी बनना हो तो गुरु के एक-एक शब्द का अक्षरशः पालन करना होगा, अपने ध्येय पर दृष्टि साधनी होगी।

प्राचीन काल की गुरु-शिष्य परम्परा में महान वैभवशाली राजाओं के पुत्र भी अन्य छात्रों की भांति गुरुकुल में शिक्षा ग्रहण करते थे। उन्हें धनवान पिता की संतान होने के नाते कोई भी अतिरिक्त सुविधा नहीं दी जाती थी। सभी ब्रह्मचारी नियमपूर्वक गुरुकुल में रहते थे। स्मृतिकार मनु लिखते हैं- दूरादात्य सनिध सन्निदध्याद्विहायसि सायंप्रातरच जुहुयात्ताभिरग्निमर्तमन्द्रत : **मनुस्मृति 2/186**

अर्थात् : शिष्यगण नित्यप्रति दूर से समिधा लाकर सूने स्थान पर रखें। प्रातःकाल व संध्या समय उन लकड़ियों से आलस्य रहित होकर हवन करें।

शिष्य के लिए निर्देश थे कि वह मधु, मांस, सुगंध माला, रस, स्त्री, सहवास, सभी आसव सिरका और प्राणियों की हिंसा त्याग देगा। वह अपने गुरु से किस प्रकार व्यवहार करेगा, इस विषय में कहा गया- शरीर चैव वाचं च बुद्धीन्द्रियमनांसि च।नियम्य. प्रात्रजलिस्तिष्ठदधीक्षमानो गुरोर्मुखम्॥ **मनुस्मृति-2/192**



शरीर, वचन, बुद्धि, इंद्रिय व मन सबको भली प्रकार रोक कर अंजलिबद्ध हो गुरु के मुख की ओर देखता हुआ शांतिपूर्वक खड़ा रहे। गुरु के जागने से पहले उठना, उनके सोने के बाद शयन करना श्रेष्ठ शिष्य का कर्तव्य था। महाभारत के गुरु द्रोणाचार्य एवं एकलव्य के प्रसंग से तो आप भी परिचित ही होंगे। एकलव्य ने गुरु के आदेश पर एक भी क्षण गंवाए बिना, अपने हाथ का अंगूठा दक्षिणा स्वरूप दे दिया था।

विश्वरूप दर्शन योग अध्याय में अर्जुन विश्व रूप दर्शन के पश्चात कृष्ण जी से कहते हैं- मैं आप (स्तुति योग्य ईश्वर) के चरणों में सिर झुका कर प्रणाम करता हूँ और आप से प्रार्थना करता हूँ कि हे देव! जिस प्रकार पिता पुत्र के, मित्र के, प्रेमी प्रियतमा के व्यवहार को सहन करता है वैसे ही आप मेरे व्यवहार को सहन करें।

गुरु में असीम श्रद्धा का भाव उत्पन्न होने के बाद ही शिष्य का विस्तार संभव हो जाता है। स्वयं को गुरु से श्रेष्ठ मानने वाले तथा उनका निरादर करने वाले शिष्य पग-पग की ठोकें खाते हैं।

सद्गुरु मनुष्य को एक नई दृष्टि प्रदान करते हैं जिससे हमें घटनाओं को उचित परिप्रेक्ष्य में देखना आ जाए। चरनदास गुरु किरपा कीन्ही। उलट गई मेरी नयन पुतरिया।।

वे हमारे अंतःकरण में कर्तव्य का अहंकार नष्ट कर देते हैं। वे हमें ऐसा उपाय बताते हैं, जिसके माध्यम से हम अपने इष्ट को प्राप्त कर सकें। ऋषि वेदव्यास के पुत्र शुकदेव ने किसी को भी गुरु धारण नहीं किया था अतः उन्हें विष्णुपुरी में प्रवेश की आज्ञा नहीं मिली। पिता की आज्ञा से वह राजा जनक को अपना गुरु बनाने के लिए चल दिए किंतु मन ही मन संशय भी था। वह सारे रास्ते सोचते रहे कि कहां जनक, कहां मैं, वह भोगी, मैं योगी, वह राजा, मैं ऋषि भला उसका मेरा कैसा मेल? वह गृहस्थ, मैं त्यागी वह मेरे गुरु कैसे बन सकते हैं। गुरु के प्रति अश्रद्धा रखने वाले शिष्य का कल्याण नहीं होता। वह जनक जी के पास पहुंचे तो उन्हें द्वार पर ही प्रतीक्षा करने को कहा गया। कुछ दिन बाद राजा जनक ने उन्हें महल में बुलवाया। वह अपने शिष्य के मन का मैल धोना चाहते थे। शुकदेव ने देखा कि महाराज जनक का एक

पांव अग्निकुंड में धरा है तथा दूसरा दासियां दबा रही हैं तभी महल में आग लगने की सूचना मिली जनक ने कहा हरि इच्छा।

द्वारपाल ने कहा कि महाराज आग तो कक्ष तक आ पहुंची। राजा जनक शांत भाव से बैठे रहे। शुकदेव ने सोचा बुद्धिहीन राजा अपने वैभव और संपदा को बचाने का प्रयास तक नहीं कर रहा मैं तो अपनी जान बचाऊं। ज्यों ही शुकदेव भागने लगे चारों ओर लगी आग शांत हो गई। राजा जनक बोले- तुम मुझे भोगी कहते हो। मेरा तो सब कुछ स्वाहा हो गया। मैंने परवाह नहीं की किंतु तुमसे इस झोले कमंडल का मोह तक नहीं छोड़ा गया। अब बता त्यागी कौन है?

शुकदेव का मोह भंग हुआ। गुरु के कौतुक ने ज्ञान-चक्षु खोल दिए। शुकदेव गुरु से दीक्षा लेकर घर पहुंचे तो पिता ने पूछा।

प्रश्न: गुरु कैसे हैं? क्या सूर्य के समान तेजस्वी हैं?

उत्तर: नहीं, पिता श्री। उनमें तो आग है।

प्रश्न: तो क्या चंद्रमा सी कांति है?

उत्तर: न, चंद्रमा में भी दाग है।

प्रश्न: तो गुरु दिखने में कैसे हैं?

उत्तर: वह किसी के जैसे नहीं है। गुरु तो केवल गुरु हैं। उनके समान कोई नहीं। पिता जान गए कि गुरु ने शिष्य के अहंकार का पर्दा गिरा दिया है।

गुरु और शिष्य का एक और उदाहरण है परशुराम और कर्ण। कर्ण ने परशुराम से शिक्षा ली थी। लेकिन परशुराम को यह नहीं पता था कि वो ब्राह्मण नहीं थे। क्योंकि परशुराम केवल ब्राह्मण को ही शिक्षा देते थे। यही कारण था कि उनसे शिक्षा लेने के लिए कर्ण ने नकली जनेऊ पहना था। परशुराम कर्ण से बहुत प्रसन्न थे और उन्होंने कर्ण को युद्ध कला का हर कौशल सिखाया जिसमें वो खुद महारथी थे। यही कारण रहा कि कर्ण महाभारत के सर्वश्रेष्ठ धनुर्धारियों में से एक थे।

द्रोणाचार्य और अर्जुन को कौन नहीं जानता है। गुरु द्रोणाचार्य ने अर्जुन की प्रतिभा देखकर उन्हें विश्व के महानतम धनुर्धर के रूप में स्थापित किया था। अर्जुन द्रोणाचार्य के प्रिय शिष्य थे। वे अर्जुन को विश्व का सर्वश्रेष्ठ धनुर्धर बनाना चाहते थे। एक कथा के अनुसार, एक दिन द्रोणाचार्य गंगा में स्नान कर रहे थे। स्नान करते समय उनके पैर को एक मगरमच्छ ने अपने मुंह में जकड़ लिया। अगर द्रोणाचार्य चाहते थे तो वो खुद को उससे छुड़ा सकते थे। लेकिन उन्होंने अपने शिष्यों की परीक्षा लेनी चाही। लेकिन स्थिति को देख सभी शिष्य घबरा गए। लेकिन अर्जुन नहीं घबराया। उसने अपने बाणों से मगरमच्छ को मार दिया। यह देख द्रोणाचार्य बेहद प्रसन्न हुए। उन्होंने अर्जुन को ब्रह्मशिर नाम का दिव्य अस्त्र दिया। साथ ही बताया कि उसे कैसे और कब इस्तेमाल करना है। द्रोणाचार्य ने ही अर्जुन को विश्व के सर्वश्रेष्ठ धनुर्धर का वरदान दिया था।

द्रोणाचार्य केवल अर्जुन के ही नहीं बल्कि एकलव्य के भी गुरु थे। एकलव्य बहुत बहादुर बालक था। वह गुरु द्रोणाचार्य से धनुर्विद्या सीखना चाहता था। इसलिए वो उनके आश्रम में आया। एकलव्य ने द्रोणाचार्य से कहा कि वो उनके धनुर्विद्या सिखना चाहता है। लेकिन उन्होंने मना कर दिया क्योंकि वो केवल राजकुमारों को शिक्षा देने के लिए प्रतिबद्ध थे और एकलव्य राजकुमार नहीं थे। लेकिन एकलव्य ने गुरु द्रोणाचार्य की मिट्टी की मूर्ति बनाई। उस मूर्ति की ओर एकटक देखकर उसने ध्यान किया। उसी से प्रेरणा लेकर एकलव्य ने धनुर्विद्या सीखी। एकलव्य ने मन की एकाग्रता और गुरुभक्ति के कारण उसने मूर्ति से प्रेरणा ली और धनुर्विद्या सीखने लगा। एक बार गुरु द्रोणाचार्य ने पूछा कि उसने यह विद्या कहाँ से सीखी। तब एकलव्य ने कहा कि वो उन्हीं से सीख रहा है। लेकिन वो यह वचन दे चुके थे कि अर्जुन जैसा धनुर्धर और कोई नहीं होगा। ऐसे में उन्होंने एकलव्य से कहा उसने उनकी मूर्ति से धनुर्विद्या तो सीख ली लेकिन उनकी गुरुदक्षिणा कौन देगा। इसी गुरुदक्षिणा में उन्होंने एकलव्य से उसके दाएं हाथ का अंगूठा मांगा। बिना विचारे ही एकलव्य ने अपना अंगूठा काटकर गुरुदेव के चरणों में रख दिया।

भारतीय इतिहास में एक से बढ़कर एक शिक्षक रहे हैं। श्रीराम से लेकर स्वामी विवेकानंद तक जितने भी युगनायक हुए हैं, उनके पीछे किसी महान गुरु का आशीर्वाद और शिक्षा रही है। शिक्षण पद्धति तो आदिकाल से चली आ रही है तथा हमारे पौराणिक ग्रंथों में गुरु-शिष्य परंपरा का जिक्र मिलता है। जिसमें ऋषि-मुनियों द्वारा गुरुकुल व्यवस्था के अंतर्गत शिक्षा का जिक्र है।

गुरुकुल क्या है ? आइए इसको समझने की कोशिश करें -

प्राचीनकाल में जब विद्यार्थी गुरु के आश्रम में निःशुल्क शिक्षा ग्रहण करता था, तो इसी दिन श्रद्धाभाव से प्रेरित होकर अपने गुरु का पूजन करके उन्हें अपनी शक्ति सामर्थ्यानुसार दक्षिणा देकर तृप्त होता था। देवताओं के गुरु थे बृहस्पति और असुरों के गुरु थे शुक्राचार्य। कन्व, भरद्वाज, वेदव्यास, अत्रि से लेकर वल्लभाचार्य, गोविंदाचार्य, गजानन महाराज, तुकाराम, ज्ञानेश्वर आदि सभी अपने काल के महान गुरु थे। रामायणकाल में अर्थात् जब राजा दशरथजी के चार पुत्र हुए तो उनके राज्य में बहुत खुशियाँ मनाई गयी, क्योंकि इनका जन्म राजा दशरथ के द्वारा बहुत पूजा-पाठ के बाद हुआ था और वे अपने जीवन के चौथेपन पर पहुँच गये थे। ऐसी दशा में राजा दशरथ अपने इन बच्चों को एक पल भी अपने से अलग नहीं करना चाहते थे।

गुरु वशिष्ठ - राजा दशरथ के कुलगुरु ऋषि वशिष्ठ को कौन नहीं जानता। ये दशरथ के चारों पुत्रों के गुरु थे। त्रेतायुग में भगवान श्रीराम के गुरु रहे श्री वशिष्ठ जी भी भारतीय गुरुओं में उच्च स्थान पर हैं।

गुरु विश्वामित्र - भगवान राम को परम योद्धा बनाने का श्रेय विश्वामित्र ऋषि को जाता है। विश्वामित्र जी को अपने जमाने का सबसे बड़ा आयुध आविष्कारक माना जाता है। उन्होंने ब्रह्मा के समकक्ष एक और सृष्टि की रचना कर डाली थी।

भगवान श्रीकृष्ण के गुरु आचार्य सांदीपनि थे। उज्जयिनी वर्तमान में उज्जैन में अपने आश्रम में आचार्य सांदीपनि ने भगवान श्रीकृष्ण को ६४ कलाओं की शिक्षा दी थी। भगवान श्रीकृष्ण ने ६४ दिन में ये कलाएँ सीखी थीं। सांदीपनि ऋषि ने भगवान शिव को प्रसन्न कर यह वरदान प्राप्त किया था कि उज्जयिनी में कभी अकाल नहीं पड़ेगा।

द्रोणाचार्य - द्वापरयुग में कौरवों और पांडवों के गुरु रहे। द्रोणाचार्य भी श्रेष्ठ शिक्षकों की श्रेणी में काफी सम्मान से गिने जाते हैं। द्रोणाचार्य ने अर्जुन जैसे योद्धा को शिक्षित किया, जिसने पूरे महाभारत युद्ध का परिणाम अपने पराक्रम के बल पर बदल दिया। द्रोणाचार्य अपने युग के श्रेष्ठतम शिक्षक थे।

आचार्य विष्णुगुप्त यानी चाणक्य - कलियुग के पहले युगनायक माने गये हैं। दुनिया के सबसे पहले राजनीतिक षडयंत्र के रचयिता आचार्य चाणक्य ने चंद्रगुप्त मौर्य जैसे साधारण भारतीय युवक को सिकंदर और महानंद जैसे महान सम्राटों के सामने खड़ा कर कूटनीतिक युद्ध कराए। वे मूलतः अर्थशास्त्र के शिक्षक थे लेकिन उनकी असाधारण राजनीतिक समझ के कारण वे बहुत बड़े राजनीतिज्ञ माने गये। स्वामी विवेकानंद के गुरु श्री रामकृष्ण परमहंस भक्तों की श्रेणी में श्रेष्ठ माने गये हैं। उन्हीं की शिक्षा और ज्ञान से स्वामी विवेकानंद ने दुनिया में भारत को विश्वगुरु का परचम दिलाया।

स्कूल, कॉलेज व विश्वविद्यालय पद्धति : कलियुग में भी आचार्य चाणक्य व श्री रामकृष्ण परमहंस द्वारा भी अपने शिष्यों को आश्रम में ही शिक्षा देने का जिक्र मिलता है। परंतु समय की माँग व आर्थिक युग के पदार्पण से शिक्षा ने भी व्यावसायिक रूप ग्रहण कर लिया और सभी नगरों व कस्बों में स्कूल व कॉलेज खोलकर शिक्षा का ज्ञान दिया जाने लगा। इसमें बड़े व छोटे, ऊँच-नीच की भावना से उबर नहीं पा रहे हैं और न ही ज्ञान का सही रूप दिया जा रहा है।

ज्ञान की परंपरा का एक रूप है, जहां संसार खोजा जाता है, लेकिन जिस परंपरा की बात यहां की जा रही है, उसमें संसार या संसार के विषयों की खोज नहीं, बल्कि स्वयं अपनी खोज की जाती है। जो सब विषयों को खोजता है, वह अपनी खोज में लग जाता है। एक सिद्ध गुरु के सानिध्य में साधना से वह एक दिन स्वयं को पा लेता है। यही हमारी परंपरा में 'समग्रता' का ज्ञान है। यह परम उपलब्धि है, फिर खोजने और पाने को कुछ बचता नहीं।

अब सवाल है कि क्या आध्यात्मिक ज्ञान अन्य संसाधनों से प्राप्त नहीं किया जा सकता? हमारे यहां वे कौन-सी पद्धतियां हैं, जिनमें गुरु का महत्व प्रतिपादित हुआ है? शिष्य की वास्तविक क्षमता को सिर्फ सिद्ध गुरु जानते हैं। शिष्य की अपनी क्षमता और पात्रता क्या है, इसे सम्यक् रूप से समझकर ही वे कोई विधि, कोई सूत्र, कोई साधना और कोई शब्द देते हैं। साधना की प्रगति में वे प्रत्येक स्तर पर शिष्य की सहायता और मार्गदर्शन करते रहते हैं। एक सीमा के बाद वे स्वयं को शिष्य से दूर कर लेते हैं, ताकि वह उन पर निर्भर न हो जाये। यह भी आध्यात्मिक मार्ग पर गुरु की करुणा है, ताकि शिष्य विकसित हो और गुरु पर निर्भर न रहे। सत्य की खोज का मार्ग अंततः अकेले ही करना होता है, उसका

कोई पूर्व निर्धारित मार्ग नहीं है। अकेले चलने का साहस विकसित हो, गुरु ऐसा इसलिए करते हैं, आध्यात्मिक क्षेत्र में हम जिस गुरु-शिष्य परंपरा की चर्चा कर रहे हैं, उसमें गुरु के 'सानिध्य' का बड़ा महत्व है।

गुरु-शिष्य परंपरा में एक क्षेत्र था- विद्या का, शिक्षा के लिये एक उपयुक्त जानकार गुरु के पास शिष्य का जाना। विद्या, एक शिष्य की रुचि, प्रतिभा और पात्रता का प्रश्न है, एक शिष्य में विद्या के कौन से रूप और क्षेत्र में विशेषज्ञता प्राप्त करने की क्षमता है इसे परख कर ही योग्य गुरु एक विद्या विशेष में शिष्य को शिक्षित करते थे, तत्त्वतः यह 'ज्ञान' का क्षेत्र था।

भारत में गुरु-शिष्य परंपरा और एक विशेष 'विचार' के आधार पर विकसित 'संप्रदाय' या 'गुरुकुल' रहे हैं जहां समवेत रूप से एक विचार का विकास बहुत सारे लोगों ने एक साथ किया और वह एक परंपरा बन गई। दरअसल मैं यह कहना चाहता हूँ कि भारत में गुरु-शिष्य परंपरा को कई आयामों में समझने की जरूरत है।

गुरु भी कभी शिष्य रहे होंगे, प्रशिक्षण और ज्ञान अर्जन की प्रक्रिया में कब वह क्षण आता है। जब एक शिष्य गुरु में बदल जाता है या कि उसे गुरु के रूप में स्वीकृति मिल जाती है? गुरु अचानक पैदा नहीं हो जाते। शिष्य तो होना ही होता है, कुछ अपवाद साधना के क्षेत्र में हैं, जहां एक सिद्ध व्यक्ति की कोई गुरु परम्परा नहीं थी, किन्तु उनसे स्वयं एक परम्परा का आरंभ हुआ।

बुद्ध के पहले कोई 'बौद्ध परम्परा' नहीं थी, वे एक महान आध्यात्मिक परम्परा का आरंभ हैं, जबकि भगवान महावीर चौबीस जैन तीर्थकरों की परम्परा में अन्तिम हैं, उनमें एक परम्परा का समापन है। संगीत के क्षेत्र में महान संगीतज्ञ तानसेन और बैजू-बावरा ने गुरु-शिष्य परम्परा में स्वामी हरिदास से संगीत सीखा किन्तु हरिदास की कोई गुरु परम्परा नहीं थी वे 'स्वयं गुरु' थे।

यहां गुरु की क्या जरूरत है? गुरु की जरूरत है जहां प्रयोग करना है, जहां विधियों पर काम होता है। जहां चेतना को विकसित करने एक शिष्य को मार्गदर्शन की जरूरत है, जहां 'आत्मज्ञान' का बोध ही धर्म है। वहां शिष्य को चाहिये एक गुरु. एक गुरु को चाहिये सच्चा जिज्ञासु जो अनुभव में उतरने राजी हो, जो अपना मन और अहंकार खोने राजी हो। जो अपनी पुरानी पहचान और स्थापित छवियाँ मिटाने का साहस करें, जो जीवन के जैसा ही मृत्यु के लिए भी स्वागतपूर्ण हो।

एक वास्तविक गुरु के लिए जय-पराजय का कोई अर्थ नहीं होता। वह जीतना ही नहीं चाहता, तो उसकी पराजय असंभव है। जय-पराजय का बोध होता है अहंकार को, यदि मनुष्य अहंकार के परे चला जाये तो जय-पराजय की तरह जीवन भासता ही नहीं। अपने से ही पराजित एक आदमी संसार में सबको जीतना चाहता है। जिसने अपने पर विजय पा ली, वह और किसी को क्यों जीतना चाहेगा? हां सार्थकता का बोध जरूर होता है।

एक गुरु किसी शिष्य को कुछ सिखायें, वह सत्य में, प्रेम में, करुणा में, सम्वेदना में सिद्ध हो तो गुरु के लिए क्या चाहिये? प्रतीति होती है कि समय और श्रम, ज्ञान और उसे किसी शिष्य को देने के प्रयास सार्थक हुए। एक सच्चा गुरु सदा अपने शिष्यों में जीवित होता है जैसे ज्ञान में वैसे ही शिष्यों की एक परम्परा में भी गुरु अमर होते हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ : -

- लेखक : पंजाब केसरी
दिनांक : 16 जुलाई 2019
URL: <https://m.punjabkesari.in/dharm/news/guru-purnima-2019-1024963>
- लेखक : विनय उपाध्याय (News18Hindi)
दिनांक : 24 जुलाई 2021



प्राकृतिक संसाधन संरक्षण प्रबंध

डॉ. छाया हार्डिया, प्रियंका वर्मा

सहायक प्राध्यापक (गृहविज्ञान)

शासकीय कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय, उज्जैन (म.प्र.)

संक्षेपिका :

मानवीय ज्ञान एवं प्रविधिजन्य उन्नति, जनसंख्या एवं मानव के अति भौतिकवादी दृष्टिकोण से संसाधनों का शोषण तीव्र गति से प्रारम्भ हुआ। भौतिकवादी सभ्यता संसाधनों का शोषण करके अत्यधिक उपयोगिता पर ही निर्भर है। मानवीय आवश्यकताओं की पूर्ति वातावरण तथा प्राकृतिक संसाधनों के शोषण से हो रही है। अत्यधिक शोषण के परिणामस्वरूप पारिस्थितिकी संकट की समस्या पर्यावरण वैज्ञानिकों के समक्ष उत्पन्न हो गयी है। विश्व के अनेक विकसित देश जहां पर संसाधनों का विदोहन औद्योगिक क्रान्ति के परिणामस्वरूप अधिक हो रहा है, उनकी समाप्ति के प्रति लोग चिन्तित होने लगे हैं। विश्व के विभिन्न भागों में लोहा, कोयला, पेट्रोलियम, ताँबा तथा अन्य महत्वपूर्ण खनिज पदार्थ, जिनका उपयोग आज के औद्योगिक युग में वृहद् स्तर पर किया जा रहा है, हो सकता है कि भावी पीढ़ी उनके उपयोग से वंचित रह जाए। संसाधन उपयोग की अत्यधिक बढ़ती हुई आवश्यकता को दृष्टिगत कर संसाधन संरक्षण के प्रति विश्व के लोगों का ध्यान आकृष्ट हुआ है, संसाधनों के उपयोग की भी एक निश्चित सीमा होती है। क्योंकि पृथ्वी एक सीमित इकाई है तथा इसके संसाधन भण्डार की वृद्धि की भी सीमाएं हैं। अतः सभी को सम्मिलित रूप से मिलकर संसाधनों के संरक्षण हेतु प्रयास करना चाहिए।

कुंजी शब्द : संसाधन भण्डार, संरक्षण, औद्योगिक क्रान्ति।

प्रस्तावना: मनुष्य प्राकृतिक दुनिया का एक अभिन्न अंग है और अन्य जीवों की तरह प्रकृति द्वारा दी गई चीजों (जैसे, हवा, पानी, फल-फूल तथा अन्य जीव आदि) का उपभोग करता आया है। लेकिन मनुष्य अन्य जीवों से इस मायने में अलग हैं क्योंकि वह प्रकृति को सोच समझकर अपनी जरूरत के अनुरूप बदलता भी रहा है। वह प्रकृति से प्राप्त चीजों का उपयोग करके अपने लिए औजार बनाता है और औजारों को अन्य प्राकृतिक चीजों पर प्रयोग करके अपनी पसंद की चीजों का निर्माण या उत्पादन करता है। इस उत्पादन कार्य में वह प्रकृति की जिन चीजों का उपयोग करता है उन्हें हम संसाधन कहते हैं। उदाहरण के लिए प्रागैतिहासिक काल में मनुष्य पत्थरों को तोड़कर एक निश्चित आकृति देता था और उन्हें औजार के रूप में उपयोग करता था। पत्थर के औजारों की मदद से वह शिकार करता, जमीन खोदकर कंदमूल इकट्ठी करता, टोकरी और खाल के कपड़े बनाता था यानी तब पत्थर, बांस, जानवरों के खोल आदि प्राकृतिक संसाधन बने।

प्राकृतिक संसाधन: प्राकृतिक संसाधनों की श्रेणी में उन्हीं चीजों को रखा जाता है जिनके बनाने में मानव का कोई योगदान नहीं है। वह केवल उन्हें अपने प्राकृतिक संदर्भ से अलग करता है। उदाहरण के लिए जंगल से काटकर लाई गई लकड़ी को हम प्राकृतिक संसाधन मान सकते हैं मगर कपास जिसे मानव उगाता है, को नहीं। इसी तरह हम धरती के भीतर से निकाले गए लौह अयस्क को प्राकृतिक संसाधन मानेंगे मगर उसी अयस्क से मानव द्वारा निर्मित इस्पात को नहीं।

प्राकृतिक संसाधनों का वर्गीकरण:

1. जैविक संसाधन
2. अजैविक संसाधन
3. नवीकरणीय संसाधन
4. अनवीकरणीय संसाधन

प्राकृतिक संसाधनों को अलग-अलग तरीकों से वर्गीकृत किया जाता है। जो संसाधन जीवों पर आधारित हैं उन्हें जैविक संसाधन कहते हैं, जैसे— लकड़ी, मछली आदि। कोयला और खनिज तेल को भी इसी श्रेणी में रखा जाता है क्योंकि ये मृत जीवों से बनते हैं।

दूसरी ओर जो निर्जीव भौतिक संसाधन हैं जैसे, भूमि, वायु, जल, धात्विक खनिज आदि को 'अजैविक संसाधन' कहते हैं।

संसाधनों को एक और आधार पर वर्गीकृत किया जाता है, यह देखकर कि ये संसाधन प्रकृति में लगातार बनते जाते हैं या नहीं। जो संसाधन प्राकृतिक तौर पर बनते रहते हैं उन्हें 'नवीकरणीय संसाधन' कहते हैं और जो सीमित मात्रा में ही उपलब्ध हैं और आसानी से नहीं बनते उन्हें 'अनवीकरणीय संसाधन' कहते हैं।

प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण की आवश्यकता क्यों?

विश्व में अनेक संसाधन सीमित मात्रा में उपलब्ध हैं। अतः इनका अधिकतम एवं सुरक्षित उपयोग करना संरक्षण कहलाता है। दूसरे शब्दों में, **“प्राकृतिक संसाधनों का कम से कम मात्रा में भरपूर उपयोगी संसाधन संरक्षण है।”**

प्राकृतिक संसाधन मानव जीवन के अस्तित्व के लिए महत्वपूर्ण मूल आधार हैं। अतः उनका संरक्षण कितना जरूरी है, यह बताने की बात नहीं है, लेकिन वर्तमान में प्राकृतिक संसाधनों का जिस तरह से उपयोग हो रहा है उसमें भविष्य की पीढ़ियों को आगे क्या प्राप्त होगा? प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण के संदर्भ में निम्न उद्देश्य अत्यन्त महत्वपूर्ण है—

1. संसाधनों का आवश्यकतानुसार ही सीमित उपयोग किया जाये, जिससे वे अधिक दिनों तक रह सकें।
2. उन्हें प्रदूषित होने से बचाया जाये, जिससे वह मनुष्यों के खराब स्वास्थ्य का कारण न बनें।

क्योंकि यह बात बहुत महत्वपूर्ण है कि प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण केवल उसके उपयोग हेतु उपलब्धता के लिए ही नहीं बल्कि विश्व में पर्यावरण की गुणवत्ता में सुधार लाने और उस अनमोल खजाने के शाश्वत सत्य को संरक्षित रखने के लिए भी है। स्पष्ट है कि पर्यावरण की गुणवत्ता, मनुष्य के जीवन की गुणवत्ता का आधार है। प्रकृति में सभी की आवश्यकताओं की पूर्ति करने की क्षमता है, लेकिन किसी एक के भी लालच की नहीं।

अतः यह स्पष्ट है कि प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण और उनके उपयोग में कहीं विवाद नहीं है, अंतर केवल इतना है कि हम उतना ही प्रकृति से लें जितना आवश्यक है। उनका दोहन न करें, शोषण नहीं। प्रकृति में यह शक्ति है कि वह अपनी कमी की पूर्ति स्वयं करने में सक्षम है।

प्राकृतिक संसाधनों का प्रबंधन: हमें अपने प्राकृतिक संसाधन के उपयोग को नियोजित कर इसका प्रबंधन करना होगा जिससे वर्तमान आवश्यकताओं की पूर्ति भी हो और भविष्य के लिए संरक्षित भी किया जा सके और पारिस्थितिकीय (Ecology) संतुलन बना रहे। इसके लिए निम्नांकित उपाय किए जा सकते हैं—

1. **वैकल्पिक संसाधनों पर जोर:** जिन संसाधनों से प्रदूषण अधिक होता है उनके वैकल्पिक संसाधनों पर जोर दिया जाना चाहिए। जैसे, जहां-जहां संभव हो कोयले का उपयोग न करके प्राकृतिक गैस का उपयोग करना चाहिए।
2. **संसाधनों का नवीकरण:** इसके अंतर्गत कचरे को अलग-अलग करके पुनर्चक्रण करना चाहिए। साथ ही उद्योगों पर अनिवार्य रूप से प्रदूषण नियंत्रण के उपकरण लगाने पर सख्ती कि जानी चाहिए।
3. **संसाधनों का समुचित उपयोग:** वर्तमान में जिस प्रकार भौतिक सुख सुविधाओं को प्राप्त करने की होड़ मची हुई है इससे संसाधन का बहुत दुरुपयोग हो रहा है। जिस प्रकार कुछ लोग जरूरत से ज्यादा संसाधनों का उपयोग अपने जीवनयापन के लिए करते हैं उसी प्रकार सभी मनुष्य ऐसा करने लगे तो पृथ्वी की इस जनसंख्या की आवश्यकता की पूर्ति के लिए चार पृथ्वी की जरूरत पड़ेगी। इस

विषय पर गांधीजी ने कहा था कि “हमारे पास हर व्यक्ति की आवश्यकता की पूर्ति के लिए बहुत कुछ है, लेकिन किसी एक के लालच की संतुष्टि के लिए अपर्याप्त है।”

4. जल संसाधन के संरक्षण के लिए वर्षा के जल का उचित संग्रहण करना आवश्यक है। यह भूस्तरीय जल की स्थिति को सुधारने के लिए भी आवश्यक है।
5. नदी, तालाब, कुएं आदि को हर प्रकार के प्रदूषण से मुक्त रखना चाहिए। इन्हें मल-मूत्र, गंदगी, रसायनिक पदार्थों या अन्य किसी भी प्रकार से प्रदूषित करने वालों के लिए कठोर दंड का प्रावधान होना चाहिए।
6. वनों की अंधाधुंध कटाई पर रोक लगाई जानी चाहिए। वृक्षारोपण कार्यक्रम वृहद पैमाने पर चलाया जाना चाहिये तथा नये लगाये पौधों का पूर्ण सुरक्षा प्रदान करना चाहिए।
7. ढलवा भूमि पर मिट्टी के बहाव को रोकने के लिये अधिकाधिक वृक्ष लगाना चाहिए। अधिक संख्या में वृक्षारोपण न केवल भू-संपदा का संरक्षण करेगा वरन् मूल्यवान् क्षेत्रीय खनिजों को भी पानी के साथ बह जाने से रोकेगा।
8. वाहनों तथा कारखानों की चिमनियों से निकलने वाले धुएं से वायु-संसाधन को दूषित होने से बचाने के लिए कड़े नियम बनाना चाहिए।
9. प्राकृतिक संसाधनों एवं पर्यावरण संरक्षण हेतु जनचेतना उत्पन्न करना चाहिए।
10. उपरोक्त वर्णित उपायों के अलावा वैकल्पिक संसाधनों का उपयोग, बढ़ती हुई जनसंख्या पर रोक लगाना आदि ऐसे सुरक्षात्मक उपाय हैं जो प्राकृतिक संसाधनों पर मंडराते हुए विनाश के खतरों को कम करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं।

सारांश— संसाधनों के बिना विकास संभव नहीं है। हालांकि अंधाधुंध खपत और संसाधनों का अत्यधिक उपयोग कई सामाजिक, आर्थिक और पर्यावरणीय समस्याएं उत्पन्न करता है। इसलिए, संसाधन संरक्षण बहुत महत्वपूर्ण है। विभिन्न स्तरों पर विभिन्न जन नेताओं, विचारकों, वैज्ञानिकों आदि द्वारा संरक्षण के प्रयास किए गए हैं। यह एक जटिल प्रणाली है जिससे हम उपयोग के लिए कई प्रकार के प्राकृतिक संसाधन प्राप्त करते हैं हम अपने आर्थिक और सामाजिक विकास को सुनिश्चित करने के लिए इन संसाधनों का सावधानीपूर्वक उपयोग करना चाहिए। प्राकृतिक संसाधनों में भूमि, जल, वन, खनिज और ऊर्जा संसाधनों के संरक्षण की बहुत आवश्यक है। इसलिए इन संसाधनों के संरक्षण पर अधिक से अधिक ध्यान देना चाहिए। यदि इन संसाधनों को नष्ट कर दिया गया तो आने वाली पीढ़ियों के लिए गंभीर संकट खड़ा हो जाएगा। प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण बहुत महत्वपूर्ण है क्योंकि ये संसाधन बहुत तेजी से समाप्त हो रहे हैं। प्राकृतिक संसाधनों की कमी का पर्यावरण पर बुरा प्रभाव पड़ता है, जो बदले में मानव जीवन को नुकसान पहुंचाता है।

संदर्भ :

1. पर्यावरण अध्ययन— डॉ. एस.एम. सक्सेना तथा डॉ. (श्रीमती) सीमा मोहन.
2. सिन्हा, मेघा (2007), “पर्यावरण प्रदूषण” वंदना पब्लिकेशन, नई दिल्ली.
3. गोयल, एम.के. (2009), “पर्यावरण प्रबंधन”, अग्रवाल पब्लिकेशन, आगरा—2.
4. उपाध्याय, रानू (2015), “प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण में समाज की भूमिका”, इन्टरनेशनल जरनल ऑफ रिसर्च ग्रंथालय.
5. सिंह, अनिता एवं सिंह, रागिनी (2015), “प्राकृतिक संसाधन एवं उनका संरक्षण”, इन्टरनेशनल जरनल ऑफ रिसर्च ग्रंथालय.

नैतिक मूल्यों के संरक्षण हेतु आवश्यक उपायों का अध्ययन

डॉ. ममता गोयल (गौनेकर)

सहायक प्राध्यापक (गृह विज्ञान)

शासकीय कन्या महाविद्यालय, खरगोन (म.प्र.)

डॉ. विजय गौनेकर

सह-प्राध्यापक (भूगोल)

एम. जे. पी. व्ही. ए. एस. सी. कॉलेज, धड़गांव नंदुरबार (महाराष्ट्र)

सारांश -

नैतिक मूल्य समाज के सांस्कृतिक और सामाजिक ढांचे का अभिन्न हिस्सा होते हैं। ये समाज की संरचना को सुदृढ़ करने के साथ-साथ व्यक्ति की आचार-व्यवहार की दिशा को भी निर्धारित करते हैं। वर्तमान समय में तेजी से बदलते सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक परिवेश के कारण नैतिक मूल्यों में गिरावट देखने को मिल रही है। इस शोध पत्र में नैतिक मूल्यों के संरक्षण के उपायों का अध्ययन किया गया है। इसमें उन कारणों का विश्लेषण किया गया है, जो नैतिक मूल्यों की गिरावट के लिए जिम्मेदार हैं, साथ ही यह भी बताया गया है कि किस प्रकार शिक्षा, परिवार, समाज और सरकार मिलकर इन मूल्यों के संरक्षण में योगदान कर सकते हैं।

शब्दकूजी - नैतिक मूल्य, समाज में नैतिक मूल्यों की उपयोगिता, संरक्षण -

प्रस्तावना -

नैतिक मूल्य, जो व्यक्तित्व, समाज और संस्कृति की नींव होते हैं, समय के साथ विभिन्न सामाजिक और सांस्कृतिक परिवर्तनों के कारण कमजोर होते जा रहे हैं। यह हमारे जीवन में सकारात्मक आचरण, सहानुभूति और समर्पण को बढ़ावा देने के लिए आवश्यक होते हैं। इसलिए यह जरूरी है कि हम नैतिक मूल्यों के संरक्षण हेतु ठोस कदम उठाएं।

नैतिक मूल्यों की अवधारणा -

नैतिक मूल्य किसी समाज के आधारभूत सिद्धांत होते हैं, जो लोगों के आचरण और व्यवहार को दिशा देते हैं। ये मूल्य सही और गलत, अच्छे और बुरे के बीच भेद करने की क्षमता विकसित करते हैं। यह व्यक्ति के आंतरिक आदर्श और मान्यताओं का प्रतिनिधित्व करते हैं।

उद्देश्य- उक्त शोध आलेख के माध्यम से वर्तमान समय में नैतिक मूल्यों की स्थिति, संरक्षण हेतु आवश्यक उपायों का अध्ययन करना।

नैतिक मूल्यों में गिरावट के कारण -

प्रौद्योगिकी का प्रभाव- इंटरनेट और सोशल मीडिया के बढ़ते प्रभाव ने व्यक्तियों को अनैतिक व्यवहार की ओर प्रेरित किया है।

शिक्षा का अभाव - सही नैतिक शिक्षा का अभाव बच्चों और युवा पीढ़ी को समाज के प्रति जिम्मेदार नागरिक बनने से रोकता है।

परिवार की भूमिका में कमी - पारिवारिक संरचनाओं में बदलाव और पारंपरिक मूल्यों की कमी ने बच्चों की नैतिक शिक्षा को प्रभावित किया है।

आर्थिक और राजनीतिक अस्थिरता - सामाजिक और राजनीतिक अस्थिरता ने समाज के नैतिक आधार को कमजोर किया है।

नैतिक मूल्यों के संरक्षण हेतु उपाय - नैतिक मूल्यों के संरक्षण के लिए विभिन्न उपाय किए जा सकते हैं। यह मूल्य समाज की स्थिरता और व्यक्तिगत विकास के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण होते हैं। निम्नलिखित उपाय नैतिक मूल्यों के संरक्षण के लिए प्रभावी हो सकते हैं।

शिक्षा का महत्व - नैतिक शिक्षा को पाठ्यक्रम में शामिल करना और बच्चों को प्रारंभिक अवस्था से ही नैतिकता का महत्व समझाना।

परिवार का योगदान - परिवार में बच्चों को अच्छे संस्कार और नैतिक शिक्षा देना। माता-पिता को बच्चों के आदर्श बनने की आवश्यकता है।

समाज और समुदाय की भूमिका - समाज में सांस्कृतिक और धार्मिक कार्यक्रमों के माध्यम से नैतिक मूल्यों का प्रचार-प्रसार करना।

संस्कार आधारित कार्यक्रम - स्कूलों और कॉलेजों में नैतिकता पर आधारित कार्यशालाएँ और सत्र आयोजित करना।

सरकारी हस्तक्षेप - सरकार को नैतिक शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए नीति बनानी चाहिए और मीडिया द्वारा नैतिक मूल्यों को बढ़ावा देने का प्रयास करना चाहिए।

शिक्षा और जागरूकता-

नैतिक शिक्षा को विद्यालयों, कॉलेजों और अन्य शिक्षा संस्थानों में अनिवार्य रूप से शामिल किया जाना चाहिए। विद्यार्थियों को नैतिक मूल्यों के महत्व और उनके जीवन में उपयोगिता के बारे में बताया जाना चाहिए।

परिवार का योगदान-

परिवार समाज की पहली पाठशाला है, जहां बच्चों को नैतिक शिक्षा दी जाती है। माता-पिता और परिवार के अन्य सदस्य बच्चों को अच्छे संस्कार और आदर्शों से परिचित कराएं ताकि वे सच्चाई, ईमानदारी और जिम्मेदारी के साथ जीवन जी सकें।

धार्मिक और सांस्कृतिक कार्यक्रम-

विभिन्न धार्मिक और सांस्कृतिक गतिविधियां समाज में नैतिक मूल्यों को बढ़ावा देती हैं। धर्म और संस्कृति के माध्यम से व्यक्ति को अच्छे आचरण और व्यवहार की प्रेरणा मिलती है।

मीडिया और सोशल मीडिया का जिम्मेदार उपयोग-

मीडिया का महत्वपूर्ण कर्तव्य है कि वह सकारात्मक और नैतिक संदेशों को फैलाए। सोशल मीडिया पर भी नैतिकता और दायित्व का पालन करते हुए विचारों का आदान-प्रदान करना चाहिए।

विविध संगठनों की भूमिका-

एनजीओ और अन्य समाजसेवी संस्थाओं को नैतिक मूल्यों के प्रचार-प्रसार के लिए विभिन्न कार्यक्रम आयोजित करने चाहिए।

कानूनी प्रावधानों का पालन-

सरकार और प्रशासन को ऐसे कानून बनाने चाहिए जो समाज में नैतिक मूल्यों का उल्लंघन करने वालों के खिलाफ सख्त कार्रवाई करें।

प्रेरक व्यक्तित्वों का आदर्श-

समाज में सकारात्मक प्रेरक व्यक्तित्वों की मौजूदगी से नैतिक मूल्यों को बढ़ावा मिलता है। इन व्यक्तित्वों की जीवनशैली को प्रस्तुत करके समाज में अच्छे उदाहरण प्रस्तुत किए जा सकते हैं।

संवेदनशीलता और सहानुभूति का विकास-

समाज में सहानुभूति और संवेदनशीलता का विकास करना भी आवश्यक है, ताकि लोग एक-दूसरे के सुख-दुःख में साझीदार बन सकें और नैतिकता को समझ सकें।

निष्कर्ष -

नैतिक मूल्यों का संरक्षण समाज के समग्र विकास के लिए अत्यंत आवश्यक है। यह सुनिश्चित करने के लिए कि हमारी अगली पीढ़ी जिम्मेदार और नैतिक रूप से सशक्त नागरिक बने, हमें शिक्षा, परिवार, समाज और सरकार के सहयोग से ठोस कदम उठाने होंगे। समाज में नैतिक मूल्यों का पुनर्निर्माण और उनका संरक्षण समाज की स्थिरता और समृद्धि के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है।

संदर्भ सूची -

1. मिश्रा, के. (2015). "नैतिक शिक्षा: आवश्यकता और संभावनाएं". भारतीय शैक्षिक शोध पत्रिका, 8(2),35-42.
2. शर्मा, अ. (2017). "समाज में नैतिक मूल्यों का संकट". समकालीन भारतीय समाज, 4(1), 27-31.
3. ठाकुर, र. (2019). "नैतिक मूल्यों का संरक्षण: एक शोध". नैतिकता और समाज, 12(3), 58-62.
4. गुप्ता, म. (2021). "शिक्षा में नैतिकता: समाज की आवश्यकता". शिक्षा एवं समाज, 15(4), 48-52.
5. सिंह, र. (2022). "प्रौद्योगिकी का नैतिकता पर प्रभाव10(1), 22-25.



नैतिक चरित्र का निर्माण और राष्ट्र का उत्थान

प्रो. शैलेंद्र प्रताप लोखंडे

विभागाध्यक्ष - मनोविज्ञान

(PMCOE) शासकीय विवेकानंद महाविद्यालय, मैहर (म.प्र.)

शोध सारांश:-

नैतिक चरित्र एक व्यक्ति के आचरण, व्यवहार और निर्णयों का संग्रह है, जो नैतिक मूल्यों और सिद्धांतों पर आधारित होता है। यह एक व्यक्ति की आंतरिक प्रकृति और व्यक्तित्व का प्रतिबिंब है, जो उसके दैनिक जीवन में उसके विचारों, शब्दों और कार्यों में परिलक्षित होता है।

नैतिक चरित्र के कुछ महत्वपूर्ण पहलू हैं: -

- ❖ सत्यनिष्ठा - सच्चाई और ईमानदारी का पालन करना।
- ❖ न्याय - न्याय और समानता का पालन करना।
- ❖ करुणा - दूसरों के प्रति दया और सहानुभूति रखना।
- ❖ जिम्मेदारी - अपने कार्यों और निर्णयों की जिम्मेदारी लेना।
- ❖ आत्म-नियंत्रण - अपने विचारों, शब्दों और कार्यों पर नियंत्रण रखना।

नैतिक चरित्र का विकास एक जीवन भर की प्रक्रिया है, जिसमें हमें अपने विचारों, शब्दों और कार्यों का निरंतर मूल्यांकन और सुधार करना होता है।

सत्यनिष्ठा एक नैतिक गुण है, जिसमें व्यक्ति सच्चाई और ईमानदारी का पालन करता है। यह एक ऐसा गुण है, जो व्यक्ति को अपने विचारों, शब्दों और कार्यों में सच्चा और ईमानदार बनाता है।

सत्यनिष्ठा के कुछ महत्वपूर्ण पहलू हैं: -

- ❖ सच्चाई - अपने शब्दों और कार्यों में सच्चाई का पालन करना।
- ❖ ईमानदारी - अपने विचारों और कार्यों में ईमानदारी का पालन करना।
- ❖ पारदर्शिता - अपने कार्यों और निर्णयों में पारदर्शिता का पालन करना।
- ❖ निष्पक्षता - अपने निर्णयों और कार्यों में निष्पक्षता का पालन करना।

सत्यनिष्ठा के लाभ: -

- ❖ विश्वास - सत्यनिष्ठा से व्यक्ति को दूसरों का विश्वास मिलता है।
- ❖ सम्मान - सत्यनिष्ठा से व्यक्ति को दूसरों का सम्मान मिलता है।
- ❖ आत्म-संतुष्टि - सत्यनिष्ठा से व्यक्ति को आत्म-संतुष्टि मिलती है।
- ❖ नैतिक विकास - सत्यनिष्ठा से व्यक्ति का नैतिक विकास होता है।

न्याय पूर्ण नैतिक गुण एक ऐसा गुण है, जिसमें व्यक्ति न्याय और समानता का पालन करता है। यह एक ऐसा गुण है, जो व्यक्ति को दूसरों के अधिकारों और हितों का सम्मान करने और उनके साथ न्यायपूर्ण व्यवहार करने के लिए प्रेरित करता है।

न्याय पूर्ण नैतिक गुण के कुछ महत्वपूर्ण पहलू हैं: -

- ❖ समानता - सभी व्यक्तियों के साथ समानता का व्यवहार करना।
- ❖ निष्पक्षता - अपने निर्णयों और कार्यों में निष्पक्षता का पालन करना।
- ❖ न्याय - दूसरों के अधिकारों और हितों का सम्मान करना और उनके साथ न्यायपूर्ण व्यवहार करना।
- ❖ जिम्मेदारी - अपने कार्यों और निर्णयों की जिम्मेदारी लेना।

न्याय पूर्ण नैतिक गुण के लाभ: -

- ❖ समाज में स्थिरता - न्याय पूर्ण नैतिक गुण से समाज में स्थिरता और शांति बनी रहती है।
- ❖ व्यक्तिगत सम्मान - न्याय पूर्ण नैतिक गुण से व्यक्ति को दूसरों का सम्मान मिलता है।
- ❖ आत्म-संतुष्टि - न्याय पूर्ण नैतिक गुण से व्यक्ति को आत्म-संतुष्टि मिलती है।
- ❖ नैतिक विकास - न्याय पूर्ण नैतिक गुण से व्यक्ति का नैतिक विकास होता है।

करुणा एक ऐसा नैतिक गुण है, जिसमें व्यक्ति दूसरों के दुख और पीड़ा को समझता है और उनकी मदद करने के लिए तैयार रहता है। यह एक ऐसा गुण है, जो व्यक्ति को दूसरों के प्रति सहानुभूति और दया रखने के लिए प्रेरित करता है।

करुणा के कुछ महत्वपूर्ण पहलू हैं: -

- ❖ सहानुभूति - दूसरों के दुख और पीड़ा को समझना और उनके साथ सहानुभूति रखना।
- ❖ दया - दूसरों के प्रति दया और करुणा रखना।
- ❖ सहायता - दूसरों की मदद करने के लिए तैयार रहना।
- ❖ निष्पक्षता - अपनी सहायता और समर्थन देने में निष्पक्षता का पालन करना।

करुणा के लाभ: -

- ❖ सामाजिक संबंधों में सुधार - करुणा से सामाजिक संबंधों में सुधार होता है।
- ❖ व्यक्तिगत विकास - करुणा से व्यक्तिगत विकास होता है।

- ❖ **आत्म-संतुष्टि** - करुणा से आत्म-संतुष्टि मिलती है।
- ❖ **नैतिक विकास** - करुणा से नैतिक विकास होता है।

जिम्मेदारी एक ऐसा नैतिक गुण है, जिसमें व्यक्ति अपने कार्यों और निर्णयों की जिम्मेदारी लेता है। यह एक ऐसा गुण है, जो व्यक्ति को अपने कार्यों के परिणामों के लिए उत्तरदायी बनाता है और उसे अपने कार्यों को सही तरीके से करने के लिए प्रेरित करता है।

जिम्मेदारी के कुछ महत्वपूर्ण पहलू हैं: -

- ❖ **उत्तरदायित्व** - अपने कार्यों और निर्णयों की जिम्मेदारी लेना।
- ❖ **निष्ठा** - अपने कार्यों को सही तरीके से करने के लिए प्रयास करना।
- ❖ **पारदर्शिता** - अपने कार्यों और निर्णयों के बारे में खुलकर और ईमानदारी से बात करना।
- ❖ **स्वीकृति** - अपने कार्यों के परिणामों को स्वीकार करना और उनसे सीखना।

जिम्मेदारी के लाभ: -

- ❖ **आत्म-सम्मान** - जिम्मेदारी से आत्म-सम्मान बढ़ता है।
- ❖ **विश्वास** - जिम्मेदारी से दूसरों का विश्वास बढ़ता है।
- ❖ **नैतिक विकास** - जिम्मेदारी से नैतिक विकास होता है।
- ❖ **सामाजिक संबंधों में सुधार** - जिम्मेदारी से सामाजिक संबंधों में सुधार होता है।

आत्म-नियंत्रण एक ऐसा नैतिक गुण है, जिसमें व्यक्ति अपने विचारों, भावनाओं और कार्यों पर नियंत्रण रखता है। यह एक ऐसा गुण है, जो व्यक्ति को अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने और अपने जीवन को सकारात्मक दिशा में ले जाने में मदद करता है।

आत्म-नियंत्रण के कुछ महत्वपूर्ण पहलू हैं: -

- ❖ **विचारों पर नियंत्रण** - अपने विचारों को सकारात्मक और रचनात्मक बनाए रखना।
- ❖ **भावनाओं पर नियंत्रण** - अपनी भावनाओं को नियंत्रित करना और उन्हें सकारात्मक दिशा में ले जाना।
- ❖ **कार्यों पर नियंत्रण** - अपने कार्यों को सही तरीके से करना और उन्हें समय पर पूरा करना।
- ❖ **आत्म-विश्लेषण** - अपने विचारों, भावनाओं और कार्यों का विश्लेषण करना और उनमें सुधार करना।

आत्म-नियंत्रण के लाभ: -

- ❖ **आत्म-सम्मान** - आत्म-नियंत्रण से आत्म-सम्मान बढ़ता है।
- ❖ **नैतिक विकास** - आत्म-नियंत्रण से नैतिक विकास होता है।
- ❖ **सकारात्मक सोच** - आत्म-नियंत्रण से सकारात्मक सोच बढ़ती है।
- ❖ **जीवन में सफलता** - आत्म-नियंत्रण से जीवन में सफलता प्राप्त होती है।

चरित्र निर्माण एक जीवन भर की प्रक्रिया है, जिसमें व्यक्ति के विचारों, भावनाओं और कार्यों का विकास होता है। यह प्रक्रिया व्यक्ति को एक अच्छा और नैतिक व्यक्ति बनाने में मदद करती है।

चरित्र निर्माण के कुछ महत्वपूर्ण चरण हैं: -

- ❖ **आत्म-ज्ञान** - अपने विचारों, भावनाओं और कार्यों को समझना।
- ❖ **आत्म-विश्लेषण** - अपने विचारों, भावनाओं और कार्यों का विश्लेषण करना।
- ❖ **नैतिक मूल्यों का अध्ययन** - नैतिक मूल्यों और सिद्धांतों का अध्ययन करना।
- ❖ **आचरण और व्यवहार में सुधार** - अपने आचरण और व्यवहार में सुधार करना।
- ❖ **अनुशासन और आत्म-नियंत्रण** - अनुशासन और आत्म-नियंत्रण का विकास करना।
- ❖ **सकारात्मक सोच और दृष्टिकोण** - सकारात्मक सोच और दृष्टिकोण का विकास करना।
- ❖ **नैतिक निर्णय लेना** - नैतिक निर्णय लेने की क्षमता का विकास करना।

चरित्र निर्माण के लाभ: -

- ❖ **आत्म-सम्मान** - चरित्र निर्माण से आत्म-सम्मान बढ़ता है।
- ❖ **नैतिक विकास** - चरित्र निर्माण से नैतिक विकास होता है।
- ❖ **सकारात्मक सोच** - चरित्र निर्माण से सकारात्मक सोच बढ़ती है।
- ❖ **जीवन में सफलता** - चरित्र निर्माण से जीवन में सफलता प्राप्त होती है।

राष्ट्र का उत्थान कई कारकों पर निर्भर करता है, जिनमें से कुछ प्रमुख बिंदु हैं: -

- ❖ **राष्ट्रीय चेतना का विकास** - राष्ट्र के प्रति जागरूकता और प्रेम की भावना का विकास करना।
- ❖ **शिक्षा और जागरूकता** - शिक्षा के माध्यम से लोगों को राष्ट्र के प्रति जिम्मेदारी और कर्तव्य के बारे में जागरूक करना।
- ❖ **सामाजिक एकता और समरसता** - समाज में एकता और समरसता का विकास करना, जिससे राष्ट्र की एकता और अखंडता बनी रहे।
- ❖ **आर्थिक विकास** - राष्ट्र के आर्थिक विकास के लिए आवश्यक कदम उठाना, जैसे कि उद्योगों का विकास, कृषि का विकास और बुनियादी ढांचे का निर्माण।
- ❖ **राजनीतिक स्थिरता** - राजनीतिक स्थिरता का विकास करना, जिससे राष्ट्र की एकता और अखंडता बनी रहे।
- ❖ **सांस्कृतिक विरासत का संरक्षण** - राष्ट्र की सांस्कृतिक विरासत का संरक्षण करना, जिससे राष्ट्र की पहचान और आत्मा बनी रहे।

नैतिक चरित्र और राष्ट्र उत्थान के संदर्भ में कई महत्वपूर्ण संदर्भ साहित्य हैं: -

- ❖ **भारतीय संस्कृति और नैतिकता** - इस पुस्तक में भारतीय संस्कृति और नैतिकता के बीच के संबंधों का विश्लेषण किया गया है।
- ❖ **नैतिक चरित्र और राष्ट्र उत्थान** - इस पुस्तक में नैतिक चरित्र और राष्ट्र उत्थान के बीच के संबंधों का विश्लेषण किया गया है।
- ❖ **भारतीय नैतिकता और दर्शन** - इस पुस्तक में भारतीय नैतिकता और दर्शन के मूल सिद्धांतों का विश्लेषण किया गया है।
- ❖ **नैतिक चरित्र और राष्ट्र उत्थान एक विश्लेषण** - इस शोध पत्र में नैतिक चरित्र और राष्ट्र उत्थान के बीच के संबंधों का विश्लेषण किया गया है।
- ❖ **भारतीय संस्कृति और नैतिकता का प्रभाव राष्ट्र उत्थान पर** - इस शोध पत्र में भारतीय संस्कृति और नैतिकता के प्रभाव का विश्लेषण किया गया है।
- ❖ **नैतिक चरित्र का महत्व राष्ट्र उत्थान में** - इस शोध पत्र में नैतिक चरित्र के महत्व का विश्लेषण किया गया है।

ऑनलाइन संसाधन: -

- ❖ **विकिपीडिया** - विकिपीडिया पर नैतिक चरित्र और राष्ट्र उत्थान के बारे में विस्तृत जानकारी उपलब्ध है।
- ❖ **रिसर्चगेट** - रिसर्चगेट पर नैतिक चरित्र और राष्ट्र उत्थान के बारे में शोध पत्र और लेख उपलब्ध हैं।
- ❖ **एकेडेमिक्स** - एकेडेमिक्स पर नैतिक चरित्र और राष्ट्र उत्थान के बारे में शोध पत्र और लेख उपलब्ध हैं।

संदर्भ ग्रंथ: -

1. "A History of Indian Philosophy" - सुरेन्द्रनाथ दासगुप्ता द्वारा रचित।
2. "The Wonder That Was India" - ए.एल. बाशम द्वारा रचित।
3. "Indian Philosophy" - सर्वपल्ली राधाकृष्णन द्वारा रचित।
4. "The Art and Architecture of India" - बेनेडिक्ट आर. ओ. थ्रिस्टन द्वारा रचित।
5. "Ayurveda: The Science of Self-Healing" - डॉ. वसंत लाड द्वारा रचित।
6. Kitzes, J., Wackernagel, M., Loh, J., et al. (2008). Shrink and share: humanity's present and future footprint. Philosophical Transactions of the Royal Society 363, 467-475.

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का विश्लेषणात्मक अध्ययन (उच्च शिक्षा के लिए खास)- भारत देश के उत्थान में

मयंक कुमार जैन

सहायक प्राध्यापक (पत्रकारिता एवं जन-संचार विभाग)

मंगलायतन यूनिवर्सिटी, अलीगढ़ (उत्तर प्रदेश)

सारांश-

इस शोध पत्र में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के निर्माण के उद्देश्यों, प्रमुख बिंदु लागू करने के तरीके, भविष्य में होने वाले परिणामों का वैचारिक विश्लेषण किया गया है। भारत बहुत समय से विश्व गुरु है। इसकी तूती ने अपनी उच्च शिक्षा (जैसे नालंदा तक्षशिला) से पूरे विश्व में बोलने का साहस किया। विदेशी विद्यार्थी यहाँ पढ़ने आए। शिक्षा स्थल वह जगह है जहाँ देश का निर्माण और विनाश दोनों हो सकते हैं। आजादी के बाद से शिक्षा को बदलाव का एकमात्र साधन माना गया है। शिक्षा में हर बार नवीनतम उपयोग करके विकास लक्ष्यों को प्राप्त करने की कोशिश की जाती है। इस क्षेत्र में होने वाले प्रयोग शायद ही किसी अन्य स्थान पर होते होंगे। प्राथमिक शिक्षा से लेकर उच्च शिक्षा पर कई बदलाव किए गए हैं, लेकिन हर बार लगता है कि कुछ कम हो गया है। 2020 की नवीनतम राष्ट्रीय शिक्षा नीति में इस अध्ययन को पूरा करने का प्रयास किया गया है। 29 जुलाई 2020 को कैबिनेट ने प्रधानमंत्री माननीय श्री नरेन्द्र मोदी जी की अध्यक्षता में भारत की नवीनतम राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 को मंजूरी दी। स्वतंत्र भारत की तीसरी व २१वीं सदी की पहली 'शिक्षा नीति' है 'राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020'।

शब्दावली: समावेशी शिक्षा, जीईआर प्रमुख सिद्धांत, वोकेशनल कोर्स, राष्ट्रीय शैक्षिक तकनीक फोरम और राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 -

प्रस्तावना- किसी भी देश के सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक, प्रशासनिक, बौद्धिक और व्यावसायिक बदलाव का टूल प्रस्तावना शिक्षा है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति, जो 1986 से लागू हुई थी, जैसे रुका हुआ पानी अपनी उपयोगिता खो देता है। वर्तमान केन्द्रीय सरकार ने बदलते परिदृश्य के साथ प्रभावशाली शिक्षा नीति को बदलने के लिए 2016 से ही नई शिक्षा नीति को लागू करने की तैयारी शुरू कर दी थी। 2019 में, प्रसिद्ध वैज्ञानिक और इसरो के पूर्व प्रमुख वैज्ञानिक, पद्म विभूषण डॉ. के कस्तूरीरंगन ने नौ सदस्यीय समिति बनाई, जो 2020 की राष्ट्रीय शिक्षा नीति को कैबिनेट को प्रस्तुत करेगी। तत्कालीन मानव संसाधन विकास मंत्रालय ने भी इसे आम भारतीयों से सुझाव मांगने के लिए सार्वजनिक डोमेन में डाला। 2020 की राष्ट्रीय शिक्षा नीति स्वतंत्र भारत की तीसरी और २१वीं शताब्दी की पहली शिक्षा नीति है। 6 से 14 वर्ष तक के

बच्चों के लिए निःशुल्क और अनिवार्य शिक्षा व्यवस्था का उल्लेख भारतीय संविधान के नीति निर्देशक तत्व में है। शिक्षा का अधिकार 2009 और राइट टू एजुकेशन एक्ट 2009-2010 ने देश के सरकारी स्कूलों में 6 से 14 वर्ष की आयु समूहों के बच्चों को निःशुल्क शिक्षा प्रदान की। इसके अलावा, निजी स्कूलों को आर्थिक रूप से कमजोर (EWS) बच्चों के लिए अपनी कुल सीटों का एक चौथाई (1/4) सुरक्षित रखने का अधिकार मिला। स्वतंत्रता के बाद भारत की पहली शिक्षा नीति, 1968, शिक्षाविद डॉ. डी. एस. कोठारी की अध्यक्षता में गठित एक आयोग के सिद्धांतों पर आधारित थी। 1985 में शिक्षा की चुनौतियों दस्तावेज की सराहना के बाद भारत सरकार ने 1986 में दूसरी नई शिक्षा नीति, 1986, लागू की इसमें एक समान शैक्षणिक ढांचे को पूरे देश में लागू किया गया था।

प्रमुख बिन्दु- एक नजर में-

1. मुख्य मुद्दा इसलिए, समिति को पूर्व इसरो प्रमुख डॉ. के. कस्तमरीरंगन के नाम पर "कस्तूरीरंगन समिति" नाम दिया गया है।
2. समिति जून 2017 में गठित हुई। नीति का ड्राफ्ट समिति ने मई 2019 में कैबिनेट को प्रस्तुत किया था, जो 29 जुलाई 2020 को प्रधानमंत्री की अध्यक्षता में मंत्रीमंडल द्वारा स्वीकृत किया गया था।
3. नई शिक्षा नीति का लक्ष्य है कि वर्ष 2030 तक विद्यार्थियों के प्रवेश का सकल अनुपात (Gross Enrolment Ratio, या GER) को सौ प्रतिशत करने का।
4. इस नीति ने अब शिक्षा क्षेत्र में सकल घरेलू उत्पाद (GDP) के छह प्रतिशत के बराबर निवेश का लक्ष्य रखा है।
5. यह मानव संसाधन विकास मंत्रालय से शिक्षा मंत्रालय में बदल गया है।
6. राष्ट्रीय शैक्षणिक टेक्नोलॉजी फोरम (NEFT) को बनाया जा रहा है, जो ई-शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए वर्चुअल लैब बना रहा है।
7. नई शिक्षा नीति में कहा गया है कि छात्रों को दसवीं से बारहवीं तक कॉलेज और बोर्ड के ग्रेजुएशन स्तर में कला, सामाजिक विज्ञान और विज्ञान के अलावा अन्य विषयों को भी चुनना होगा।

साहित्य की समीक्षा- संक्षेप में, इस अध्ययन से प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से संबंधित पिछले अध्ययनों की एक समीक्षा दी गई है। इसमें 2020 की नवीनतम शिक्षा नीति और संबंधित अध्ययनों पर किए गए कामों की सूची है।

भारतीय राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का विश्लेषण, इसके उद्देश्यों को प्राप्त करने की दिशा में, पी. एस. ऐथल और शुभ्रज्योत्सना ऐथल का शोध पत्र है। गुणवत्ता, आकर्षण और सामर्थ्य में सुधार के लिए नवीन नीतियों को बनाकर और निजी क्षेत्र के लिए उच्च शिक्षा को खोलकर आपूर्ति बढ़ाने और बनाये रखने के लिए सख्त नियंत्रण के साथ, भारत की राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 इस उद्देश्य को प्राप्त करने की

दिशा में आगे बढ़ रही है। NEAP-2020 और 2030 तक अपने उद्देश्यों को पूरा करने के लिए हर उच्च शिक्षा संस्थान में गुणवत्ता और स्कालॉशिप, योग्यता आधारित प्रवेश, अनुसंधान आधारित निरंतर प्रदर्शन, निकायों को नियंत्रित करने में योग्यता आधारित सिद्ध नेताओं और प्रौद्योगिकी-आधारित प्रगति की स्व-घोषणा के आधार पर द्विवार्षिक मान्यता के माध्यम से गुणवत्ता की सख्त संबद्ध कॉलेजों के वर्तमान नामकरण के साथ, सभी उच्च शिक्षा संस्थान बहु-अनुशासनात्मक स्वायत्त कॉलेजों या उनके नाम पर डिग्री देने वाले विश्वविद्यालयों के घटक कॉलेजों में बदल जाएंगे। राष्ट्रीय अनुसंधान फाउण्डेशन एक निष्पक्ष संस्था होगी, जो बुनियादी विज्ञान, अनुप्रयोग विज्ञान और सामाजिक विज्ञान और मानयिकी के क्षेत्रों में नवीन अनुसंधान परियोजनाओं के लिए धन देगी।

अजय कुरियन और सुदीप बी. चंद्रमना के अनुसार, बहुत से लोगों ने 2020 की नई शिक्षा नीति की घोषणा को अप्रत्याशित समझा। नई शिक्षा नीति 2020 ने कुछ बदलावों की सिफारिश की, जो बहुत से शिक्षाविदों ने पहले नहीं देखे थे। यह लेख मुख्य रूप से नई शिक्षा नीति 2020 और उच्च शिक्षा पर इसके प्रभाव पर केंद्रित है, हालांकि शिक्षा नीति ने स्कूलों और कॉलेजों दोनों को प्रभावित किया है। यह पत्र भी नई शिक्षा नीति की प्रमुख विशेषताओं को रेखांकित करता है और उनका मौजूदा शिक्षा प्रणाली पर क्या प्रभाव होता है। नई शिक्षा नीति में रियल-टाइम मूल्यांकन प्रणाली और परामर्शी निगरानी और समीक्षा व्यवस्था की घोषणा की गई है। यह शिक्षा प्रणाली को पाठ्यक्रम को बदलने के लिए हर दशक एक नई शिक्षा नीति की उम्मीद करने के बजाय खुद को लगातार सुधार करने की क्षमता देगा। यह निश्चित रूप से एक महत्वपूर्ण उपलब्धि होगी। 2020 में उच्च शिक्षा के लिए नई शिक्षा नीति महत्वपूर्ण होगी। वास्तव में, इसे पथप्रदर्शक बनाने के लिए प्रभावी और समयबद्ध कार्यान्वयन की आवश्यकता होगी।

उद्देश्य व विजन- समग्र विकास का लक्ष्य:-

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में शिक्षा की पहुंच, समानता, गुणवत्ता युक्त वहनीय शिक्षा और उत्तरदायित्व जैसे मुद्दों पर विशेष बल दिया गया है। इस शिक्षा नीति में "शिक्षा का अधिकार कानून (RTE) का दायरा बढ़ाकर 6 से 14 वर्ष के स्थान पर 3 से 18 वर्ष आयु तक के बच्चों के लिए निःशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा का दायित्व सरकार का हो गया है।

स्कूली शिक्षा में परिवर्तन के माध्यम से नींव मजबूत करने का प्रयास: वर्तमान में, शिक्षा नीति-2020 में पद्धति 102 के शैक्षिक मॉडल में बदलाव किया गया है। इसके बजाय, 5334 प्रणाली/प्रारूप आधार पर पाठ्यक्रम को विभाजित किया गया है। इसका फॉर्मेट इस तरह से प्रस्तावित है।

वर्ष अवधि	चरण	आयु	क्षा स्तर
5 वर्ष	फाउण्डेशन स्टेज	3 से 6 वर्ष	ऑगनबाडी
		6 से 8 वर्ष	नर्सरी (प्री प्राइमरी)
3 वर्ष	प्राथमिक स्तर	8 से 11 वर्ष	कक्षा 3 से 5
3 वर्ष	माध्यमिक स्तर	11 से 14 वर्ष	कक्षा 6 से 8
4 वर्ष	हाई स्कूल एवं हायर सेकेंड्री स्कूल स्तर	14 से 18 वर्ष	कक्षा 9 से 12

- पाँचवी कक्षा तक मातृभाषा, स्थानीय या क्षेत्रीय भाषा के माध्यम से पढ़ाई करने पर जोर दिया गया है।
- साथ ही कक्षा आठ और उसके बाद की शिक्षा में दो मातृभाषा को प्राथमिकता देने का सुझाव दिया गया है। वोकेशनल कोर्स छठी कक्षा से शुरू होंगे, इसके लिए इच्छुक छात्र छठी कक्षा से इंटर्नशिप करेंगे।
- पाठ्यक्रम में संगीत, योग, नृत्य, अभिनय, हस्तशिल्प आदि शामिल होंगे।
- "अर्ली चाइल्डहुड" नीति के तहत पहले सरकारी स्कूलों में बच्चा छह वर्ष की आयु से पढ़ने लगा। लेकिन अब ऑगनबाडी के माध्यम से तीन वर्ष से ही (Early Childhood Care and Education) शिक्षा शुरू होगी।
- छात्रों को पहले कक्षा 11 से विषय चुनने की अनुमति थी, लेकिन अब वे सिर्फ कक्षा 9 से विषय चुन सकेंगे।
- बच्चों को कक्षा 9 से 12 तक की पढ़ाई में किसी विषय के प्रति गहरी समझ दी जाएगी और उनकी विश्लेषणात्मक क्षमता को बढ़ाया जाएगा, जिससे वे जीवन में बड़े लक्ष्य निर्धारित कर सकेंगे।
- 10वीं और 12वीं की बोर्ड परीक्षाओं में बदलाव कर अब वर्ष में दो बार (सेमेस्टर प्रणाली द्वारा) सबजेक्टिव और ऑब्जेक्टिव फॉर्मेट में परीक्षा होगी।
- शिक्षा नीति में मिड-डे मील और सुबह का नाश्ता भी शामिल है।

उच्च शिक्षा: प्रधान बिंदु-युवा शक्ति का विकास -

नियामक निकाय विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (UGC), अखिल भारतीय तकनीकी शिक्षा परिषद (AICTE) और नेशनल कॉउंसिल फॉर टेक्नीकल एजुकेशन (NCTE) से मिलकर बनाया जाएगा। अभी सेंट्रल यूनिवर्सिटी, डीम्ड यूनिवर्सिटी और स्टैंडअलोन इंस्टिट्यूट्स अलग-अलग नियमों का पालन करते हैं। 2020 की नई शिक्षा नीति में सभी के लिए समान नियम होंगे। देश भर में सभी उच्च शिक्षा संस्थानों के लिए एकमात्र संस्था, भारतीय उच्च शिक्षा परिषद (HECL) निकाय बनाया जाएगा।

एकेडमिक बैंक ऑफ क्रेडिट- विभिन्न उच्च शिक्षा संस्थानों में प्राप्त अंकों या क्रेडिट को डिजिटल रूप में सुरक्षित रखेगा और छात्रों को उनके प्रदर्शन के आधार पर प्रमाण-पत्र देगा।

- नेशनल रिसर्च फाउंडेशन (NRF) को देश भर में शोध और अनुसंधान को बढ़ावा देने का प्रमुख निकाय बनाया जाएगा। शोध उपाधि के लिए एम.फिल. डिग्री पाठ्यक्रम पूरा हो चुका है।
- आगामी वर्षों में विश्वविद्यालयों में नई सीटें जोड़ी जाएंगी।

अंतरराष्ट्रीयकरण- भारत के सर्वश्रेष्ठ विश्वविद्यालयों को दूसरे देशों में परिसरों को खोलने के लिए प्रोत्साहित किया जाएगा और विश्व के शीर्ष 100 विश्वविद्यालयों को भारत में काम करने की अनुमति दी जाएगी।

शिक्षकों से सम्बंधित सुधार

- इस शिक्षा नीति में "राष्ट्रीय नियंत्रण कार्यक्रम" प्रस्तावित किया जाएगा, जिसका उद्देश्य शिक्षकों को सुधारना होगा।

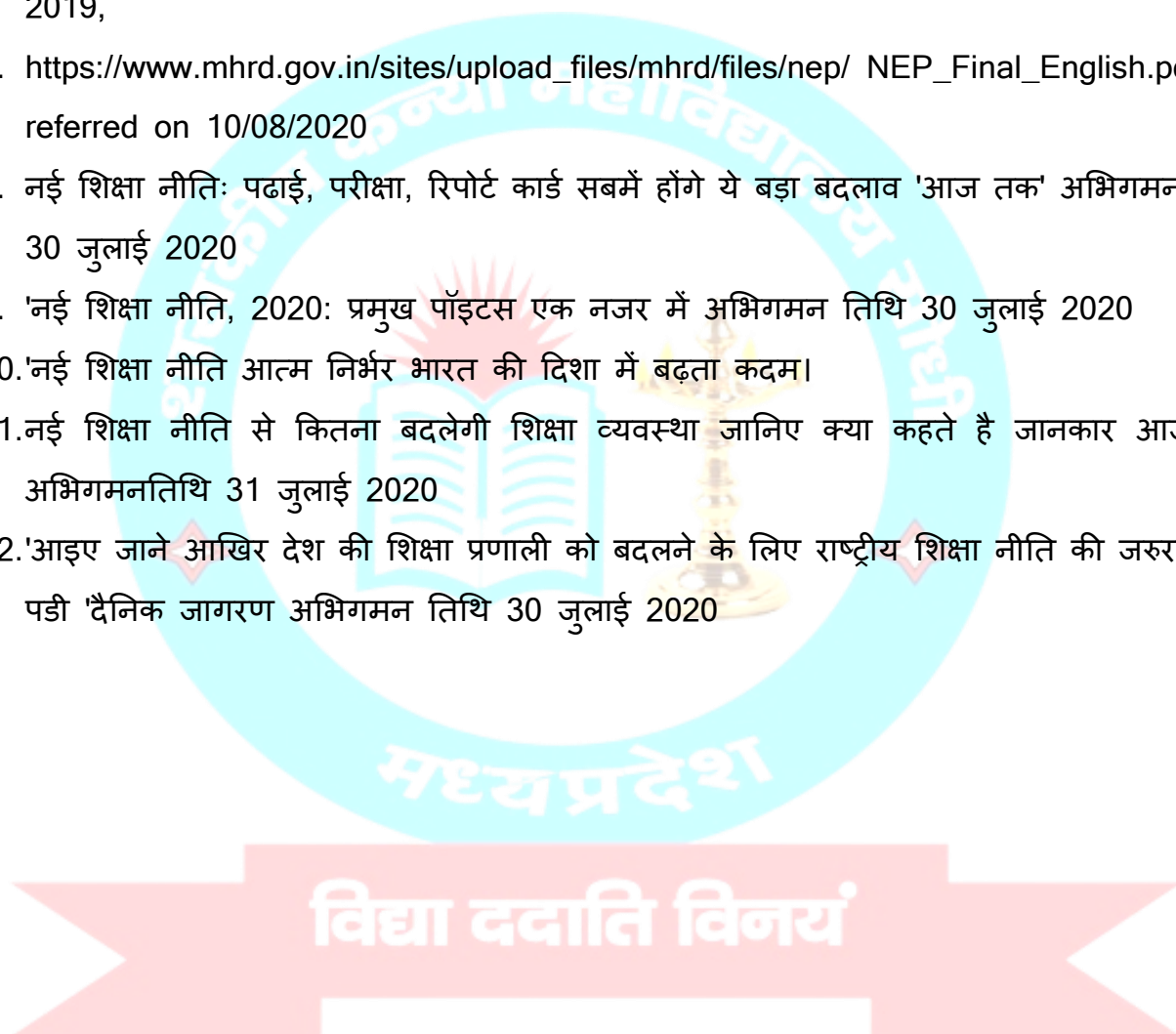
- अब शिक्षकों की भर्ती पारदर्शी होगी और पदोन्नति योग्यता पर आधारित होगी (शैक्षणिक प्रशासन और समय - समय पर कार्य प्रदर्शन का मूल्यांकन)। राष्ट्रीय शिक्षक परिषद राष्ट्रीय प्रोफेशनल मानक बनाएगी।
- साल में पचास घंटे के सतत व्यावसायिक विकास कार्यक्रम में प्रत्येक शिक्षक स्वेच्छा से भाग लेगा। इस कार्यक्रम का उद्देश्य पेशे से संबंधित आनुधिक विचार, नवाचार और खुद को सुधार करना है।
- प्रत्येक स्कूल में शिक्षक-छात्र अनुपात 30 से कम होना चाहिए और सामाजिक आर्थिक रूप से वंचित बच्चों की अधिकता वाले क्षेत्रों में यह अनुपात 25 से कम होना चाहिए।
- शिक्षकों को गैर-शिक्षण गतिविधियों (जटिल प्रशासनिक कार्य, Midday Mill) में शामिल करने की सलाह दी गई है।
- स्कूली उच्च शिक्षा संस्थानों में गुणवत्ता को सुधारने के लिए धीरे-धीरे शिक्षामित्र, एडाहाक और गेस्ट टीचर की व्यवस्था को समाप्त कर स्वामी शिक्षक नियुक्त करेंगे।

निष्कर्ष- शिक्षा और शिक्षा प्रणाली को किसी भी देश का भविष्य बताया जाता है। शिक्षा समाज, विकास की बैकबोन, या रीढ़, निर्धारित करती है। वर्तमान में लागू शिक्षा नीति 2020 वास्तव में केंद्र सरकार की दूरदर्शिता प्रतिबद्धता और राज्य के प्रति समाज के दायित्वों के स्पष्ट दृष्टिकोण को दिखाती है। यह भी उतना ही सच है की एक अच्छा दस्तावेज होना, उनके सभी लोगो को नहीं बताता है। वास्तव में इसके धरातल स्तर पर लागू करने का तरीका समयबद्ध परीक्षण, समर्पण और उद्देश्यों को समझने की क्षमता पर निर्भर करेगा। शिक्षा नीति को सही ढंग से लागू करने के लिए, केंद्र और राज्य सरकारों को यह भी सुनिश्चित करना होगा की स्थानीय भाषाओं में पर्याप्त और गुणवत्तापूर्ण शिक्षा सामग्री भी उपलब्ध होगी। इस शिक्षा नीति को प्राथमिक स्कूलों से लेकर उच्च शिक्षण संस्थानों तक के महंगे और एलीट संस्थानों को भी लागू करना होगा। किसी भी नीति या व्यवस्था में आवश्यकतानुसार सुधार और बदलाव करना आर्थिक रूप से लाभदायक होता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची:

1. https://www.education.gov.in/sites/upload_files/mhrd/files/NEP_Final_English_0.pdf
2. https://en.wikipedia.org/wiki/National_Education_Policy_2020Puri, Natasha (30 August 2019). A Review of the National Education Policy of the Government of India - The Need for Data and Dynamism in the 21st Century. SSRN.
3. Vedhathiri, Thanikachalam (January 2020), "Critical Assessment of Draft Indian National Education Policy 2019 with Respect to National Institutes of Technical Teachers Training and Research", Journal of Engineering Education, 33

4. https://mgmu.ac.in/wp-content/uploads/NEP-Indias-New-Education-Policy_2020-final.pdf
5. [http://s3-ap-southeast-1.amazonaws.com/ijmer/pdf/volume10/volume10-issue2\(5\)/33.pdf](http://s3-ap-southeast-1.amazonaws.com/ijmer/pdf/volume10/volume10-issue2(5)/33.pdf)
6. Kumar, K. (2005). Quality of Education at the Beginning of the 21st Century: Lessons from India. Indian Educational Review 2. Draft National Education Policy 2019,
7. https://www.mhrd.gov.in/sites/upload_files/mhrd/files/nep/NEP_Final_English.pdf referred on 10/08/2020
8. नई शिक्षा नीति: पढाई, परीक्षा, रिपोर्ट कार्ड सबमें होंगे ये बड़ा बदलाव 'आज तक' अभिगमन तिथि 30 जुलाई 2020
9. 'नई शिक्षा नीति, 2020: प्रमुख पॉइंट्स एक नजर में अभिगमन तिथि 30 जुलाई 2020
10. 'नई शिक्षा नीति आत्म निर्भर भारत की दिशा में बढ़ता कदम।
11. नई शिक्षा नीति से कितना बदलेगी शिक्षा व्यवस्था जानिए क्या कहते हैं जानकार आज तक अभिगमनतिथि 31 जुलाई 2020
12. 'आइए जाने आखिर देश की शिक्षा प्रणाली को बदलने के लिए राष्ट्रीय शिक्षा नीति की जरूरत क्यों पड़ी 'दैनिक जागरण अभिगमन तिथि 30 जुलाई 2020



राष्ट्रीय महत्व के पर्यावरणीय मुद्दे

ENVIRONMENTAL ISSUES OF NATIONAL IMPORTANCE

डॉ. मगनलाल एस. मोलिया

प्रोफेसर (शिक्षा विभाग)

सौराष्ट्र विश्वविद्यालय, कलावाड़ रोड (राजकोट)

सारांश-

राष्ट्रीय महत्व के पर्यावरणीय मुद्दों पर प्रस्तुत शोधपत्र 1950 में, दुनिया की आबादी 2.5 बिलियन लोगों की थी। परिणामस्वरूप, वैश्विक स्तर पर गंभीर नई पर्यावरणीय समस्याएँ उभरी हैं। इन समस्याओं में वैश्विक जलवायु परिवर्तन, दुनिया भर में जैव विविधता, वन और आर्द्रभूमि का नुकसान विषाक्त पदार्थों का लंबी दूरी तक परिवहन तटीय महासागर की गुणवत्ता में गिरावट और दुनिया के मीठे पानी और पारिस्थितिक तंत्र का क्षरण शामिल हैं। ये नए खतरे मानव जाति के लिए महत्वपूर्ण नए नैतिक प्रश्न उठाते हैं। फिर भी उभरती वैश्विक पर्यावरणीय समस्याओं के कुछ सबसे स्पष्ट नैतिक आयाम ज्यादातर लोगों द्वारा केवल धुंधले ढंग से देखे जाते हैं, शायद ही कभी वे सार्वजनिक बहस का हिस्सा होते हैं। तकनीकी शक्ति जो मनुष्य के पास अब उन लोगों को प्रतिकूल रूप से प्रभावित करने के लिए है, जिसे वे कभी नहीं मिलेंगे, ऐसी नैतिक प्रणालियों के लिए एक चुनौती है। पर्यावरणीय मुद्दे हैं जैव विविधता, प्रजातियों की संरचना, और पारिस्थितिकी तंत्र का कामकाज, जैव-रासायनिक चक्र के पारिस्थितिक पहलू जलवायु परिवर्तन के पारिस्थितिक प्रभाव, संक्रामक रोगों की पारिस्थितिकी और विकास, आक्रामक प्रजातियाँ और भूमि उपयोग और आवास परिवर्तन। कई अन्य गंभीर वैश्विक पर्यावरणीय समस्याएँ हैं, जैसे पृथ्वी पर लगभग 40 से 50 प्रतिशत भूमि अपरिवर्तनीय रूप से बदल गई है (भूमि कवर में परिवर्तन के माध्यम से) या मानव क्रिया द्वारा खराब हो गई।

मुख्य शब्द: पर्यावरणीय मुद्दे, राष्ट्रीय महत्व -

परिचय- 1950 में दुनिया की आबादी 2.5 बिलियन थी। वर्ष 2050 तक इसके नौ से दस बिलियन के बीच हो जाने की उम्मीद है। जनसंख्या वृद्धि के इस नाटकीय दौर में, ग्रह पर मानव प्रभाव काफी बढ़ गया है, न केवल हमारी संख्या में भारी वृद्धि के कारण, बल्कि गहरी खुदाई करने, तेजी से काटने, बड़े निर्माण करने और ऑटोमोबाइल, ट्रकों और विमानों में अधिक तेज़ी से लंबी दूरी तय करने की नई तकनीकी शक्ति के कारण भी परिणामस्वरूप, वैश्विक स्तर पर गंभीर नई पर्यावरणीय समस्याएँ उभरी हैं। इन समस्याओं

में वैश्विक जलवायु परिवर्तन, जैव विविधता, वन और आर्द्रभूमि का विश्वव्यापी नुकसान, विषाक्त पदार्थों का लंबी दूरी तक परिवहन, तटीय महासागर की गुणवत्ता में गिरावट, और दुनिया के मीठे पानी और पारिस्थितिक तंत्र का क्षरण शामिल हैं। ये नए खतरे मानव जाति के लिए महत्वपूर्ण नए नैतिक प्रश्न उठाते हैं। फिर भी उभरती वैश्विक पर्यावरणीय समस्याओं के कुछ सबसे स्पष्ट नैतिक आयाम भी अधिकांश लोगों द्वारा केवल धुंधले रूप से देखे जाते हैं। 1999 में न्यूयॉर्क टाइम्स में जलवायु परिवर्तन पर एक लेख में जिसका शीर्षक था "ग्रह के दर्द के प्रति उदासीन" बिल मैककिबेन ने आश्चर्य व्यक्त करते हुए लिखा कि वैश्विक तापमान वृद्धि के नैतिक आयामों को अधिक व्यापक रूप से क्यों नहीं समझा गया। उन्होंने लिखा अधिकांश नैतिक प्रणालियाँ और हमारी सहज नैतिक संवेदनशीलता उन लोगों के प्रति हमारी ज़िम्मेदारियों पर केंद्रित हैं जो हमारे नज़दीक हैं और हमारे कार्यों से सीधे प्रभावित हो सकते हैं। मनुष्यों के पास अब जो तकनीकी शक्ति है, जिससे वे उन लोगों को प्रतिकूल रूप से प्रभावित कर सकते हैं। जिनसे वे कभी नहीं मिलेंगे, ऐसी नैतिक प्रणालियों के लिए एक चुनौती है, फिर भी वैश्विक पर्यावरणीय समस्याएँ बहुत गंभीर नैतिक मुद्दे उठाती हैं। उदाहरण के लिए, एक वैश्विक जलवायु परिवर्तन ग्रह पर सबसे गरीब लोगों को नुकसान पहुँचाएगा। भविष्य की पीढ़ियों के लिए जीवन की गुणवत्ता को गंभीर रूप से कम करेगा और दुनिया भर के पौधों और जानवरों को खतरे में डालेगा। यह निबंध कुछ उभरती हुई पर्यावरणीय समस्याओं जैसे जलवायु परिवर्तन और घटती जैव विविधता पर नज़र डालेगा, ताकि इन मामलों के बारे में सार्वजनिक बहस में अक्सर छिपे कुछ अधिक महत्वपूर्ण नैतिक मुद्दों की पहचान की जा सके। जैसा कि माइकल मैकलेरॉय ने बताया है, इन समस्याओं का सार्वजनिक विश्लेषण अक्सर वैज्ञानिक और आर्थिक चिंताओं तक सीमित होता है, फिर भी पर्यावरणीय समस्याओं के नैतिक पहलुओं को सार्वजनिक चर्चाओं में और अधिक केंद्रीय बनने की आवश्यकता है। एक कारण से नैतिक पहलुओं पर विचार न करने का मतलब है कि ऐसे निर्णय लिए जाएँगे जो अनजाने में अन्यायपूर्ण या अनैतिक होंगे विकसित दुनिया की वर्तमान पीढ़ी भविष्य की पीढ़ियों और गरीब लोगों के हितों के साथ अन्यायपूर्ण व्यवहार करेगी, जिनकी पर्यावरण नीति में कोई भूमिका नहीं है। जलवायु परिवर्तन की समस्या को इतनी अच्छी तरह से समझने के लिए कि गहरी नैतिक चिंता पैदा हो, हमें उन चीजों को समझना चाहिए जो नंगी आँखों से तुरंत स्पष्ट नहीं होती हैं, जैसे कि संयुक्त राज्य अमेरिका में जीवाश्म ईंधन के जलने से दूर के लोगों पर क्या प्रभाव पड़ सकता है और इससे भी अधिक दूर और अमूर्त भावी पीढ़ी पर।

पर्यावरण संबंधी मुद्दे: हालाँकि कुछ महाद्वीपीय व्यापक पर्यावरण निगरानी कार्यक्रम हैं वैश्विक ऊर्जा और जल चक्र प्रयोग, राष्ट्रीय वायुमंडलीय जमाव कार्यक्रम/राष्ट्रीय रुझान नेटवर्क, मध्यम-रिज़ॉल्यूशन इमेजिंग स्पेक्ट्रोरेडियोमीटर, इत्यादि। ये कार्यक्रम शायद ही कभी भौतिक पर्यावरणीय परिवर्तनों को जैविक प्रक्रियाओं से जोड़ते हैं। इस विस्तारित पैमाने पर पर्यावरणीय समस्याओं के स्रोतों का पर्याप्त रूप से अध्ययन करने और उनके समाधान खोजने के लिए, भौतिक और भू-रासायनिक प्रक्रियाओं की जानकारी को जैविक

अध्ययनों द्वारा पूरक किया जाना चाहिए। चुनौतियों में बेहतर अवलोकन, केंद्रित प्रयोग और निम्नलिखित दबाव वाले पर्यावरणीय मुद्दों के यांत्रिक सिद्धांत के विकास और परीक्षण के माध्यम से बढ़ी हुई समझ विकसित करना शामिल है।

- जैव विविधता, प्रजातियों की संरचना और पारिस्थितिकी तंत्र का कामकाज जैव विविधता में कमी और प्रजातियों की संरचना में परिवर्तन जीवमंडल के अधिकांश मानव उपयोगों के साथ होते हैं। जैव विविधता का नुकसान पारिस्थितिकी तंत्र के कामकाज और समाज के लिए मूल्यवान पारिस्थितिकी तंत्र सेवाओं को प्रभावित कर सकता है।
- जैव-रासायनिक चक्र के पारिस्थितिक पहलू मनुष्य जीवन के मूल तत्वों (कार्बन, नाइट्रोजन, फास्फोरस और सल्फर) के प्रमुख आपूर्तिकर्ताओं के रूप में प्राकृतिक प्रक्रियाओं पर हावी हो रहे हैं।
- जलवायु परिवर्तन के पारिस्थितिकीय निहितार्थ। मानव-प्रेरित जलवायु वार्मिंग और परिवर्तनशीलता व्यक्तिगत प्रजातियों, सामुदायिक संरचना और पारिस्थितिकी तंत्र के कामकाज को दृढ़ता से प्रभावित करती है। जलवायु-संचालित जैविक प्रभाव अक्सर केवल क्षेत्रीय-महाद्वीपीय पैमाने पर ही देखे जा सकते हैं। पारिस्थितिकी तंत्र प्रक्रियाओं में क्षेत्रीय परिवर्तन वैश्विक जल और कार्बन चक्रों को प्रभावित करते हैं।
- संक्रामक रोगों की पारिस्थितिकी और विकास। मनुष्यों में उभरने वाले अधिकांश संक्रामक रोग या तो मच्छरों या टिक्स जैसे वैक्टर का उपयोग करते हैं, या वे जूमेरिक रोग हैं जो वन्यजीवों से फैलते हैं। इसके लिए जोखिम में स्थानिक भिन्नताओं, रोग भंडारों की जनसंख्या गतिशीलता, व्यक्तिगत व्यवहार पर रोगजनकों के प्रभावों, मेजबान-परजीवी अंतः क्रियाओं के आणविक आधार और अन्य रोगजनकों और पर्यावरणीय खतरों के साथ अंतः क्रियाओं के ज्ञान की आवश्यकता होगी।
- आक्रामक प्रजातियाँ संयुक्त राज्य अमेरिका में लगभग हर पारिस्थितिकी तंत्र को प्रभावित करती हैं और पर्याप्त आर्थिक और जैविक क्षति का कारण बन सकती हैं।
- भूमि उपयोग और आवास परिवर्तन वनों की कटाई, उपनगरीकरण, सड़क निर्माण, कृषि और अन्य मानव भूमि-उपयोग गतिविधियाँ पारिस्थितिकी तंत्र में परिवर्तन का कारण बनती हैं। ये परिवर्तन जल, ऊर्जा और भौतिक संतुलन को परिवर्तित करते हैं तथा जैविक समुदाय की तनाव और अशांति के प्रति प्रतिक्रिया करने और उससे उबरने की क्षमता को भी प्रभावित करते हैं।

इन छह पर्यावरणीय चुनौतियों में से प्रत्येक मानव सामाजिक और आर्थिक प्रणालियों के साथ-साथ राष्ट्र के पारिस्थितिकी तंत्रों पर प्रभाव का स्रोत है। पर्यावरणीय स्थिरता और जीवन-यापन प्राकृतिक संसाधनों के उपयोग और अन्य मानवीय व्यवहारों पर बहुत अधिक निर्भर करता है। NSF ने अपने NEON प्रस्ताव में माना है कि वैज्ञानिक NEON के उपयोगकर्ता समुदाय के केवल एक हिस्से का प्रतिनिधित्व करते हैं और यह कल्पना करता है कि किंडरगार्टन से लेकर स्नातकोत्तर स्तर तक के छात्र और शिक्षक शैक्षणिक

गतिविधियों के लिए NEON जानकारी और शोध के लिए NEON सुविधाओं का उपयोग करेंगे। इसलिए समिति NEON के लिए एक प्रमुख शैक्षिक और आउटरीच भूमिका का समर्थन करती है। दूसरा समस्याएँ बहुकारणीय हैं और जैविक और शारीरिक रूप से जटिल बड़े पैमाने की प्रणालियों में अंतर्निहित हैं। उदाहरण के लिए, जलवायु परिवर्तनशीलता और परिवर्तन पारिस्थितिक तंत्र की संरचना और कार्यप्रणाली को संशोधित करते हैं। अंत में पर्यावरणीय चुनौतियों का सफलतापूर्वक समाधान करने के लिए पारिस्थितिकी तंत्रों का तुलनात्मक विश्लेषण करना होगा, जो प्रमुख पारिस्थितिक प्रक्रियाओं और गुणों के दीर्घकालिक समय श्रृंखला अवलोकनों के संदर्भ में किया जाएगा और स्थानीय, क्षेत्रीय और महाद्वीपीय पैमानों पर परिवर्तनशीलता के प्रसार पर बहुस्तरीय शोध और निगरानी की आवश्यकता होगी। तकनीकी प्रगति अब बड़े पैमाने पर शोध के लिए राष्ट्रीय जैविक नेटवर्क के विकास की सुविधा प्रदान करती है, जैसे कि NEON प्रस्ताव में वर्णित है। यदि हमें राष्ट्र के सामने आने वाली बड़ी पर्यावरणीय चुनौतियों का समाधान करना है, तो एक क्षेत्र या राष्ट्र में दोहराए जाने वाले अच्छी तरह से नियंत्रित बहु-कारक प्रयोग और विस्तृत व्यापक-पैमाने पर अवलोकन संबंधी अध्ययन आवश्यक हैं। प्रयोग को दीर्घकालिक अवलोकनों और कुछ बड़े पैमाने पर दीर्घकालिक निगरानी द्वारा पूरक किया जाना चाहिए जो रुझानों को प्रदर्शित करेगा और पर्यावरणीय परिवर्तनों के लिए संकेत प्रदान करेगा। जलवायु त्वरक एक शब्द है, जिसका उपयोग समिति नियंत्रित पर्यावरणीय स्थितियों वाले एक बड़े कक्ष का वर्णन करने के लिए करती है। कक्ष में पर्यावरणीय स्थिति को जलवायु परिवर्तन की नकल करने और उसे तेज करने के लिए हेरफेर किया जा सकता है - इसलिए इसका नाम है। इस तरह के हेरफेर से पारिस्थितिकी तंत्र के तेजी से जलवायु परिवर्तन के प्रति लचीलेपन पर अंतर्दृष्टि मिल सकती है। इसी तरह एक “नाइट्रोजन-निक्षेपण त्वरक” शोधकर्ताओं को नियंत्रित परिस्थितियों में नाइट्रोजन निक्षेपण में तेजी लाने की अनुमति देगा। एक जलवायु त्वरक या नाइट्रोजन-निक्षेपण त्वरक के लिए सुविधाओं और बुनियादी ढांचे में बड़े निवेश की आवश्यकता होगी।

जलवायु परिवर्तन की समस्या:-

जैसा कि माइकल मैकलेरॉय ने समझाया है, प्राकृतिक ताकतें और मानवीय गतिविधियाँ दोनों वैश्विक जलवायु को प्रभावित कर रही हैं। प्राकृतिक ग्रीनहाउस गैसों में जल वाष्प, कार्बन डाइऑक्साइड, ओजोन और अन्य ट्रेस गैसों शामिल हैं। कुछ ग्रीनहाउस गैसों का उत्सर्जन मानवीय गतिविधियों का परिणाम है और ये एक बड़ा हुआ ग्रीनहाउस प्रभाव पैदा करते हैं। इन मानवजनित (मानव-प्रेरित) ग्रीनहाउस गैसों में कार्बन डाइऑक्साइड, मीथेन, नाइट्रस-ऑक्साइड और ओजोन-क्षयकारी पदार्थ शामिल हैं। मानवीय गतिविधियों ने वायुमंडल की रासायनिक संरचना को बदल दिया है परिणामस्वरूप पृथ्वी की जलवायु बदल रही है। उदाहरण के लिए बांग्लादेश लगभग 120 मिलियन लोगों का घनी आबादी वाला देश है जो गंगा, ब्रह्मपुत्र और मेघना नदियों के जटिल डेल्टा क्षेत्र में स्थित है। देश की रहने योग्य भूमि का लगभग 7 प्रतिशत (लगभग 6 मिलियन लोगों के साथ) समुद्र तल से 1 मीटर से कम है और लगभग 25 प्रतिशत (लगभग

30 मिलियन लोगों के साथ) 3-मीटर समोच्च से नीचे है। बांग्लादेश पहले से ही तूफानी लहरों से होने वाले नुकसान के लिए बेहद संवेदनशील है। माना जाता है कि नवंबर 1970 और अप्रैल 1991 में आए तूफान ने बहुत ज़्यादा लोगों की जान ली थी। ऐसे क्षेत्रों में विनाशकारी बाढ़ के प्रति संवेदनशीलता बढ़ाने के अलावा, जलवायु परिवर्तन से उष्णकटिबंधीय तूफानों के हानिकारक होने का खतरा भी बढ़ जाता है। सबसे गरीब देशों में से कई की पारिस्थितिकी प्रणाली सबसे ज़्यादा जोखिम में हैं। मानव-प्रेरित जलवायु परिवर्तन कई पारिस्थितिकी और सामाजिक-आर्थिक प्रणालियों पर एक महत्वपूर्ण अतिरिक्त तनाव का प्रतिनिधित्व करता है जो पहले से ही प्रदूषण, संसाधनों की बढ़ती माँग और कोई स्थायी प्रबंधन प्रथाओं से प्रभावित हैं। मानव स्वास्थ्य और सामाजिक-आर्थिक प्रणालियों की संवेदनशीलता - और कुछ हद तक पारिस्थितिकी तंत्र - आर्थिक परिस्थितियों और संस्थागत बुनियादी ढांचे पर निर्भर करता है। इसका मतलब है कि विकासशील देशों में प्रणालियाँ आमतौर पर ज़्यादा कमज़ोर होती हैं, जहाँ आर्थिक और संस्थागत परिस्थितियाँ कम अनुकूल होती हैं। जलवायु परिवर्तन के प्रभाव दुनिया भर में समान रूप से वितरित नहीं होते हैं। वास्तविक तापमान अंतर संभवतः स्थान के अनुसार बहुत भिन्न होंगे ध्रुवों के पास के क्षेत्रों की तुलना में उष्णकटिबंधीय क्षेत्रों में अनुमानित वृद्धि बहुत कम होगी। कुछ क्षेत्रों में वर्षा में कमी की उम्मीद है, जबकि अन्य में वर्षा में वृद्धि होने की उम्मीद है। जलवायु मॉडल दर्शाते हैं कि दुनिया भर के सबसे गरीब लोग जलवायु परिवर्तन के प्रति सबसे अधिक संवेदनशील हैं। ऐसा निम्नलिखित कारणों से है गरीबों की खाद्य आपूर्ति विशेष रूप से ग्लोबल वार्मिंग से जोखिम में है। सबसे गरीब देशों में से कई अफ्रीका, एशिया और मध्य और दक्षिण अमेरिका के शुष्क क्षेत्रों में हैं। तापमान और वर्षा में अपेक्षाकृत छोटे परिवर्तन, वाष्पोत्सर्जन और मिट्टी की नमी पर गैर-रेखीय प्रभावों के साथ अपवाह में अपेक्षाकृत बड़े परिवर्तन का परिणाम हो सकता है। विशेष रूप से शुष्क और अर्ध-शुष्क क्षेत्रों में दुनिया के सबसे गरीब लोगों में से कई - विशेष रूप से उपोष्णकटिबंधीय और उष्णकटिबंधीय क्षेत्रों में रहने वाले और अर्ध-शुष्क और शुष्क क्षेत्रों में अलग-थलग कृषि प्रणालियों पर निर्भर रहने वाले - भूख बढ़ने के सबसे अधिक जोखिम में हैं। अगली सदी के दौरान वैश्विक खाद्य आपूर्ति जलवायु और गैर-जलवायु दोनों कारकों के कारण अनुमानित खपत को पूरा करने के लिए अपर्याप्त हो सकती है। दुनिया भर में गरीबों का स्वास्थ्य ग्लोबल वार्मिंग से सबसे अधिक जोखिम में है। जलवायु परिवर्तन से सबसे गरीब देशों में जीवन का महत्वपूर्ण नुकसान होने की उम्मीद है। प्रत्यक्ष स्वास्थ्य प्रभावों में कुछ क्षेत्रों में गर्मी की लहरों की तीव्रता और अवधि में अनुमानित वृद्धि के कारण हृदय-श्वसन मृत्यु दर और बीमारी में वृद्धि शामिल है। जलवायु परिवर्तन के अप्रत्यक्ष प्रभाव जो प्रबल होने की उम्मीद है उनमें वेक्टर जनित संक्रामक रोगों (जैसे मलेरिया, डेंगू, पीला बुखार और कुछ वायरल इंसेफेलाइटिस) के संचरण में संभावित वृद्धि शामिल है, जो वेक्टर जीवों के लिए भौगोलिक सीमा और मौसम के विस्तार के परिणामस्वरूप होता है। मॉडल अनुमान लगाते हैं कि मलेरिया की घटनाओं में 50-80 मिलियन अतिरिक्त वार्षिक मामले बढ़ सकते हैं जो अनुमानित वैश्विक पृष्ठभूमि कुल 500 मिलियन

मामलों के सापेक्ष है। गैर-रिएक्टर जनित संक्रामक रोगों में कुछ वृद्धि - जैसे कि साल्मोनेलोसिस, हैजा और जिआर्डियासिस - उच्च तापमान और बढ़ी हुई बाढ़ के परिणामस्वरूप भी हो सकती है। ताजे पानी और पौष्टिक भोजन की सीमित आपूर्ति साथ ही वायु प्रदूषण की वृद्धि मानव स्वास्थ्य पर भी परिणाम डालेगी। सबसे गरीब देश तूफान, बाढ़ और बढ़ते समुद्र के स्तर के प्रति सबसे अधिक संवेदनशील हैं। अनुमान है कि वर्तमान में प्रति वर्ष लगभग 46 मिलियन लोग तूफानी लहरों के कारण बाढ़ के जोखिम में हैं। सुरक्षा उपायों के अभाव में और अनुमानित जनसंख्या वृद्धि को ध्यान में रखे बिना 50 सेंटीमीटर समुद्र-स्तर की वृद्धि से यह संख्या लगभग 92 मिलियन हो जाएगी। 1 मीटर समुद्र-स्तर की वृद्धि से यह संख्या लगभग 118 मिलियन हो जाएगी। 1 मीटर प्रक्षेपण का उपयोग करने वाले अध्ययनों से छोटे द्वीपों और डेल्टाओं के लिए एक विशेष जोखिम दिखाई देता है। कुछ छोटे द्वीप राष्ट्र और अन्य देश अधिक असुरक्षित होंगे, क्योंकि उनकी मौजूदा समुद्री और तटीय रक्षा प्रणालियाँ कम अच्छी तरह से स्थापित हैं।

ग्लोबल वार्मिंग द्वारा उठाए गए नैतिक मुद्दे -

मानव-प्रेरित जलवायु परिवर्तन द्वारा कई नैतिक प्रश्न उठाए गए हैं।

क्योटो में UNFCCC में संयुक्त राज्य अमेरिका ने कार्बन कटौती में संपत्ति अधिकारों का व्यापार करने के लिए विभिन्न बाजार-आधारित तंत्रों को सफलतापूर्वक बढ़ावा दिया। हालाँकि 1997 में क्योटो में इन व्यापार तंत्रों के सामान्य ढाँचे पर सहमति बन गई थी, लेकिन कई विवरण अभी भी विवादास्पद हैं। फिर भी संयुक्त राज्य अमेरिका घरेलू कार्रवाई करने से पहले एक अंतर्राष्ट्रीय व्यापार व्यवस्था के लागू होने तक प्रतीक्षा करने पर जोर देता है। ऐसी व्यवस्था स्थापित करने के लिए, बड़ी संख्या में जटिल मुद्दों पर काम करने की आवश्यकता होगी। उन परियोजनाओं से धोखाधड़ी से कैसे बचें जो वास्तव में ग्रीनहाउस गैसों को कम नहीं करती हैं। जलवायु परिवर्तन कार्यक्रमों के बिना होने वाले सुधार के लिए क्रेडिट देने से कैसे बचें, यह कैसे तय किया जाए कि संयुक्त राज्य अमेरिका जैसे अमीर देश को गरीब देशों से क्रेडिट खरीदकर अपनी सभी कानूनी रूप से आवश्यक कटौती हासिल करने की अनुमति दी जानी चाहिए जो उन्हें बेचेंगे। कार्बन स्रोतों के लिए एक अंतर्राष्ट्रीय आधार रेखा कैसे विकसित की जाए, कार्बन में कटौती हुई है या नहीं इसका ट्रैक कैसे रखें जंगलों और कृषि में कार्बन पृथक्करण परियोजनाओं के लिए क्रेडिट कैसे मापें। जब यह स्पष्ट नहीं है कि ऐसी परियोजनाओं से कार्बन में स्थायी रूप से क्या कमी आएगी। यह देखते हुए कि संयुक्त राज्य अमेरिका वर्तमान में सबसे अधिक ग्रीनहाउस गैसों का उत्सर्जन करने वाला देश है। उत्सर्जन को कम करने के अमेरिकी कार्यवाही के लिए व्यापार नियमों पर सार्वभौमिक समझौते को एक पूर्व शर्त बनाना उसके लिए नैतिक रूप से संदिग्ध है। 1997 में क्योटो में, संयुक्त राज्य अमेरिका 1990 के स्तर से 7 प्रतिशत की कटौती पर सहमत हुआ था। उस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए, दुनिया के सभी देशों को 1990 के उत्सर्जन के स्तर से 50 से 80 प्रतिशत तक उत्सर्जन कम करने की आवश्यकता होगी। ऐतिहासिक और संचयी उत्सर्जन, वर्तमान कुल और प्रति व्यक्ति उत्सर्जन और धन, ऊर्जा संरचनाओं और

संसाधन बंदोबस्ती जैसे कारकों में भिन्नताओं को देखते हुए जवाब में क्लिंटन प्रशासन ने घोषणा कि वह विकासशील देशों से उत्सर्जन कम करने के लिए मजबूत प्रतिबद्धता प्राप्त होने तक क्योटो प्रोटोकॉल पर सीनेट की पुष्टि नहीं मांगेगा। दुनिया की आबादी के ४ से ५ प्रतिशत के साथ यह दुनिया के २२ प्रतिशत ग्रीनहाउस गैसों का उत्सर्जन करता है। संयुक्त राज्य अमेरिका जैसे विकसित देशों के ऐतिहासिक योगदान और प्रति व्यक्ति उत्सर्जन में वर्तमान असंतुलन को देखते हुए जो लोग विकसित देशों द्वारा तत्काल कार्रवाई के लिए तर्क देते हैं, वे समानता के आधार पर अपना तर्क देते हैं। यह स्थिति एक महत्वपूर्ण नैतिक प्रश्न खड़ा करती है। क्या जलवायु परिवर्तन के समय और परिमाण के बारे में वैज्ञानिक अनिश्चितता कार्रवाई न करने का एक वैध बहाना है? जो लोग तर्क देते हैं कि देशों का अब कार्रवाई करने का नैतिक दायित्व है, वे अपनी स्थिति के लिए कई अच्छे कारण सूचीबद्ध कर सकते हैं, देरी के अपने जोखिम हैं। जितने अधिक दिन तक देश कार्रवाई करने का इंतजार करेंगे, दुनिया के सबसे गरीब लोगों पर प्रभाव असंगत हैं। संभावना प्रबल है कि सभी अनिश्चितताओं को समाप्त करने से पहले गंभीर और अपरिवर्तनीय क्षति का अनुभव किया जाएगा और बहुत कठोर जलवायु आश्चर्यों की वास्तविक क्षमता अक्सर उद्धृत भविष्यवाणियों द्वारा संकेतित की तुलना में बहुत अधिक है, जो जलवायु परिवर्तन के रैखिक प्रतिक्रियाओं की धारणाओं पर निर्भर करती हैं। जलवायु परिवर्तन की समस्या को हल करने के लिए, सरकारों को अंततः इस बात पर सहमत होना होगा कि वायुमंडल में ग्रीनहाउस गैसों को किस स्तर पर स्थिर किया जाए। जलवायु परिवर्तन पर संयुक्त राष्ट्र फ्रेमवर्क कन्वेंशन (यूएनएफसीसीसी) के तहत, सरकारें ग्रीनहाउस गैसों को एक ऐसे स्तर पर स्थिर करने के लिए कार्रवाई करने पर सहमत हुई हैं जो "जलवायु प्रणाली के साथ खतरनाक मानवजनित हस्तक्षेप को रोकता है।" उदाहरण के लिए हम जानते हैं कि किस प्रकार प्राकृतिक रूप से उत्पन्न होने वाली ग्रीनहाउस गैसों ग्रह को गर्म करती हैं। किस प्रकार ये ग्रीनहाउस गैसों अवरक्त विकिरण को अवशोषित करती हैं, मनुष्य वायुमंडल में बड़ी मात्रा में ग्रीनहाउस गैसों छोड़ रहे हैं। ग्रीनहाउस गैसों मानव द्वारा उपयोग के अनुपात में वायुमंडल में एकत्रित हो रही हैं, तथा ऐतिहासिक अभिलेखों में ग्रीनहाउस गैसों के स्तर और तापमान के बीच सदैव एक मजबूत सह-संबंध रहा है।

जैव विविधता के नुकसान की समस्या:- सबसे आशावादी वैज्ञानिक अनुमान बताते हैं कि वर्तमान में सभी प्रजातियों के लिए कमी दर एक दिन में एक से तीन प्रजातियों तक है। मानव संख्या और तकनीकी शक्ति में वृद्धि के साथ प्रजातियों के विलुप्त होने की दर में नाटकीय रूप से वृद्धि हुई है। जैव विविधता का विश्लेषण आमतौर पर तीन अलग-अलग स्तरों पर किया जाता है। आनुवंशिक विविधता, प्रजाति विविधता और पारिस्थितिकी तंत्र विविधता। 1900 और 1980 के बीच अन्य 75 स्तनधारी और पक्षी विलुप्त हो गए और नुकसान की दर बढ़कर एक प्रजाति प्रति वर्ष हो गई। वैज्ञानिक निवास स्थान के नुकसान की ज्ञात दरों से अनुमान लगाकर और निवास स्थान खो चुके समान पारिस्थितिकी तंत्रों में ज्ञात प्रजातियों के

नुकसान से इनकी तुलना करके प्रजातियों के नुकसान की दर का अनुमान लगाते हैं। प्रजातियों के विलुप्त होने की वास्तविक दरें ज्ञात नहीं हैं, क्योंकि अपेक्षाकृत कम प्रजातियों की पहचान की गई है।

जैव विविधता की रक्षा में निहित नैतिक समस्याएँ -

जैव विविधता की रक्षा करना हमारा कर्तव्य है। जैव विविधता का नुकसान पौधों और जानवरों की रक्षा करने की मानवीय जिम्मेदारी के नैतिक प्रश्न को उठाता है। कई जगहों पर गरीब लोग भोजन उगाने के लिए जंगलों को साफ करके जैव विविधता को खतरे में डालते हैं। परिणामस्वरूप, यदि अमीर देश गरीब देशों की सहायता नहीं करते हैं, तो दुनिया की जैव विविधता का एक बड़ा हिस्सा नष्ट हो जाएगा। हालाँकि अमीर देशों ने गरीब देशों में जैव विविधता की रक्षा के लिए सीमित धनराशि प्रदान की है, लेकिन अमीर देश अक्सर इस बात से इनकार करते हैं कि जैव विविधता की रक्षा के लिए उनकी कोई विशेष जिम्मेदारी है।

अन्य उभरती वैश्विक पर्यावरणीय समस्याओं की समस्याएँ-

कई अन्य गंभीर वैश्विक पर्यावरणीय समस्याएँ हैं:-

- पृथ्वी पर लगभग 40 से 50 प्रतिशत भूमि अपरिवर्तनीय रूप से परिवर्तित हो गई है (भूमि आवरण में परिवर्तन के माध्यम से) या मानवीय क्रियाकलापों द्वारा क्षीण हो गई है।
- दुनिया भर के तटीय क्षेत्रों में समुद्री पारिस्थितिकी तंत्र शहरीकरण और इसके द्वारा उत्पन्न जलीय प्रदूषण के कारण गंभीर रूप से खतरे में हैं। दुनिया भर में प्रवाल भित्तियों का हाल ही में हुआ नुकसान विशेष चिंता का विषय है। मनुष्य मछली भंडार का अत्यधिक दोहन करके समुद्री खाद्य आपूर्ति को भी खतरे में डाल रहे हैं।
- प्राकृतिक वन प्रति वर्ष 14 मिलियन हेक्टेयर की दर से गायब होते जा रहे हैं।
- दुनिया की ताज़ी पानी की आपूर्ति अत्यधिक उपयोग, बढ़ती आबादी और प्रदूषण के कारण बहुत खतरे में है। लगभग एक अरब लोगों के पास पीने के लिए पर्याप्त पानी नहीं है और घटती ताज़ी पानी की आपूर्ति विशेष रूप से उन गरीब लोगों के लिए खतरा है जो शुष्क भूमि पर फ़सल उगाने की कोशिश कर रहे हैं।
- दुनिया भर में इस बात के प्रमाण बढ़ रहे हैं कि लंबी दूरी के वायु प्रदूषण के कारण पारिस्थितिकी तंत्र और मानव स्वास्थ्य को खतरा है। रसायनों के एक वर्ग के बारे में विशेष चिंता है, जिसे आम तौर पर लगातार कार्बनिक प्रदूषक (POP) कहा जाता है। POPs अंतरराष्ट्रीय स्तर पर ध्यान आकर्षित कर रहे हैं, क्योंकि वे मनुष्यों और जानवरों के लिए विषाक्त हैं। पर्यावरण में आसानी से विघटित नहीं होते हैं, जैव संचय की प्रवृत्ति रखते हैं और अक्सर ठोस से गैसीय अवस्था में बदल जाते हैं और इस तरह पर्यावरण में फिर से जमा होने से पहले हवा में लंबी दूरी तय करते हैं। वैज्ञानिक प्रमाण बढ़ रहे हैं कि कुछ POP वन्यजीवों और मनुष्यों में कई तरह की आनुवंशिक,

प्रजनन और व्यवहार संबंधी असामान्यताएँ पैदा करते हैं और मनुष्यों में कैंसर और तंत्रिका संबंधी कमियों की बढ़ती घटनाओं से जुड़े हो सकते हैं।

- ये पर्यावरणीय समस्याएं मानव-प्रेरित जलवायु परिवर्तन और जैव विविधता के नुकसान की समस्याओं की तरह जानवरों और पौधों को मानवीय व्यवहार से होने वाले विनाश से बचाने के हमारे मानवीय कर्तव्य और विकासशील दुनिया के प्रति विकसित दुनिया की जिम्मेदारियों के नैतिक प्रश्न को उठाती हैं। इसके अलावा विषाक्त समुद्री और ताजे पानी की समस्याओं को कम करने की लागत विकासशील देशों के लिए बहुत अधिक भारी है।

निष्कर्ष- 1950 में दुनिया की आबादी 2.5 बिलियन थी। परिणामस्वरूप, वैश्विक स्तर पर गंभीर नई पर्यावरणीय समस्याएँ उभरी हैं। इन समस्याओं में वैश्विक जलवायु परिवर्तन; जैव विविधता, वन और आर्द्रभूमि का विश्वव्यापी नुकसान विषाक्त, पदार्थों का लंबी दूरी तक परिवहन, तटीय महासागर की गुणवत्ता में गिरावट और दुनिया के मीठे पानी और पारिस्थितिक तंत्र का क्षरण शामिल हैं। ये नए खतरे मानव जाति के लिए महत्वपूर्ण नए नैतिक प्रश्न उठाते हैं। फिर भी उभरती वैश्विक पर्यावरणीय समस्याओं के कुछ सबसे स्पष्ट नैतिक आयाम भी अधिकांश लोगों द्वारा धुंधले रूप से देखे जाते हैं शायद ही कभी वे सार्वजनिक बहस का हिस्सा होते हैं। तकनीकी शक्ति जो अब मनुष्यों के पास उन लोगों को प्रतिकूल रूप से प्रभावित करने की है, जिनसे वे कभी नहीं मिलेंगे ऐसी नैतिक प्रणालियों के लिए एक चुनौती है। पर्यावरणीय मुद्दे जैव विविधता, प्रजातियों की संरचना और पारिस्थितिकी तंत्र की कार्यप्रणाली, जैव-रासायनिक चक्र के पारिस्थितिक पहलू, जलवायु परिवर्तन के पारिस्थितिक निहितार्थ, संक्रामक रोगों की पारिस्थितिकी और विकास आक्रामक प्रजातियाँ और भूमि उपयोग और आवास परिवर्तन हैं। कई अन्य गंभीर वैश्विक पर्यावरणीय समस्याएँ हैं, जैसे कि पृथ्वी पर लगभग 40 से 50 प्रतिशत भूमि अपरिवर्तनीय रूप से परिवर्तित हो गई है (भूमि कवर में परिवर्तन के माध्यम से) या मानवीय क्रियाकलापों द्वारा क्षीण हो गई है। नैतिक जिम्मेदारियाँ मनुष्य मछली भंडार का अत्यधिक दोहन करके समुद्री खाद्य आपूर्ति को भी खतरे में डाल रहे हैं और दुनिया की ताजा पानी की आपूर्ति अत्यधिक उपयोग, आबादी के विस्तार और प्रदूषण से बहुत खतरे में है। लंबी दूरी के वायु प्रदूषण के कारण पारिस्थितिकी तंत्र और मानव स्वास्थ्य के लिए खतरों के विश्वव्यापी प्रमाण बढ़ रहे हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ:-

1. Bunker, S. (1984). Modes of extraction, unequal exchange, and the progressive underdevelopment of an extreme periphery: the Brazilian Amazon, 1600–1980. *American Journal of Sociology* 89, 1017–1064.
2. Burns, T., Davis, B. & Kick, E. (1997). Position in the world-system and national emissions of green-house gases. *Journal of World-Systems Research* 3, 432–466.
3. Dunlap, R.E. & Catton, W.R. Jr. (2002). Which functions of the environment do we study? A comparison of environmental and natural resource sociology. *Society and Natural Resources* 15, 239–249.

4. Dunlap, R.E. & York, R. (2008). The globalization of environmental concern and the limits of the post-materialist explanation: evidence from four cross-national surveys. *Sociological Quarterly* 49, 529–563.
5. Dunlap, R.E., Gallup, G.H. Jr. & Gallup, A.M. (1993). Of global concern: results of the health of the planet survey. *Environment* 35 (November), 7–15, 33–39.
6. Frank, D.J., Hironaka, A. & Schofer, E. (2000). The nation-state and the natural environment over the twentieth century. *American Sociological Review* 65, 96–116.
7. Frey, R.S. (2003). The transfer of core-based hazardous production processes to the export processing zones of the periphery: the Maquiladora centers in northern Mexico. *Journal of World-Systems Research* 9, 317–354.
8. Haberl, H., Wackernagel, M., Krausmann, F., et al. (2004). Ecological footprints and human appropriation of net primary production: a comparison. *Land Use Policy* 21, 279–288.
9. Hornborg, A. (2006). Footprints in the cotton fields: the industrial revolution as time-space appropriation and environmental load displacement. *Ecological Economics* 59, 74–81.
10. Jorgenson, A. & Clark, B. (2009). The economy, military, and ecologically unequal relationships in comparative perspective, 1975–2000. *Social Problems* 56, 621–646.
11. Jorgenson, A. & Kuykendall, K. (2008). Globalization, foreign investment dependence, and agriculture production: a cross-national study of pesticide and fertilizer use intensity in less-developed countries, 1990–2000. *Social Forces* 87, 1–34.
12. Jorgenson, A. (2006). Unequal ecological exchange and environmental degradation: a theoretical proposition and cross-national study of deforestation, 1990–2000. *Rural Sociology* 71, 685–712.
13. Jorgenson, A., Dick, C. & Mahutga, M. (2007). Foreign investment dependence and the environment: an ecostructural approach. *Social Problems* 54, 371–394.
14. Jorgenson, A., Dick, C. & Shandra, J. (2011) World economy, world society, and environmental harms in less-developed countries. *Sociological Inquiry* 81, 53–87.
15. Kitzes, J., Wackernagel, M., Loh, J., et al. (2008). Shrink and share: humanity's present and future footprint. *Philosophical Transactions of the Royal Society* 363, 467–475.
16. Pellow, D. (2007). *Resisting Global Toxins: Transnational Movements for Environmental Justice*. MIT Press, Cambridge, MA.
17. Rice, J. (2007). Ecological unequal exchange: inter-national trade and uneven utilization of environmental space in the world system. *Social Forces* 85, 1369–1392.
18. Shandra, J., Leckband, C. & London, B. (2009). Forest exports and ecologically unequal exchange: a cross-national analysis of deforestation. *Organization & Environment* 22, 293–310.
19. York, R. & Rosa, E.A. (2003). Key challenges to ecological modernization theory. *Organization & Environment* 16, 273–288.
20. York, R., Rosa, E.A. & Dietz, T. (2003). Footprints on the earth: the environmental consequences of modernity. *American Sociological Review* 68, 279–300.

नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति और भारत का भविष्य

प्रो. सुरेखा बड़ोले

सहायक प्राध्यापक (गृहविज्ञान)

शासकीय कमला नेहरु महिला महाविद्यालय, दमोह (म.प्र.)

सारांश-

भारत की नई शिक्षा नीति (एनईपी) देश की शिक्षा प्रणाली में सुधार की दिशा में एक महत्वपूर्ण और परिवर्तनकारी कदम है। इस व्यापक नीति का उद्देश्य बच्चों को शिक्षित करने और भविष्य के लिए तैयार करने के तरीके में सकारात्मक बदलाव लाना है। शिक्षा मंत्रालय ने अगले 25 वर्षों में भारत को कुशल जनशक्ति का वैश्विक केंद्र बनाने के लिए नई शिक्षा नीति लागू की है जिसे "अमृत काल" कहा गया है। नई शिक्षा नीति स्टूडेंट्स के लिए बहुत ही महत्वपूर्ण है नई शिक्षा नीति भारत में शिक्षा को बदलने पर ध्यान केंद्रित करती है, जो भारत को एक समतामूलक और जीवंत ज्ञान समाज में बदलने में सीधे योगदान देती है। यह शिक्षा नीति सभी को उच्च गुणवत्ता वाली शिक्षा प्रदान करेगी, जिससे भारत वैश्विक ज्ञान महाशक्ति बन जाएगा। नई शिक्षा नीति का लक्ष्य प्री-स्कूल से लेकर हाई स्कूल तक सभी को शिक्षा उपलब्ध कराना है। यह नीति शिक्षा में 100: GRE, सकल नामांकन अनुपात हासिल करने के लिए महत्वपूर्ण है और इसे 2030 तक पूरा करने लक्ष्य है। इसी प्रकार इसका उद्देश्य वर्ष 2040 तक सभी कॉलेजों और विश्वविद्यालयों को बहु-विषयक बनाना है।

न्यू एजुकेशन नीति का दृष्टिकोण आगे आने वाले समय के हिसाब से तय किया गया है। यह कोई रहस्य नहीं है कि नई शिक्षा नीति छात्रों के लिए महत्वपूर्ण है, लेकिन उनके लिए इसका क्या मतलब है यह समझना जरूरी है। न्यू एजुकेशन पॉलिसी सीखने-सिखाने की प्रक्रिया में बदलाव के लिए पहचानी जा रही है। छात्र अब तथ्यों और आंकड़ों को याद करके स्कूल में आगे नहीं बढ़ पाएंगे। इसके बजाय उन्हें जो कुछ भी सीखा है, उसे व्यावहारिक तरीके से लागू करना होगा ताकि वे अपनी समझ को प्रदर्शित कर सकें। यह एक बड़ा बदलाव है, छात्रों और शिक्षकों को इसे समायोजित करने में कुछ समय लगेगा।

न्यू एजुकेशन पालिसी से स्टूडेंट्स बेहतर परिणाम हासिल कर सकेंगे और वास्तविक दुनिया की चुनौतियों के लिए तैयार होंगे। नई शिक्षा नीति में कई ऐसे बदलाव भी शामिल हैं जो शिक्षकों को सीधे तौर पर हैं। उदाहरण के लिए नीति में यह प्रावधान है कि सरकारी स्कूलों में पढ़ाने के लिए सभी शिक्षकों के पास स्नातक की डिग्री होनी चाहिए। इसके अतिरिक्त शिक्षकों को नियमित आधार पर व्यावसायिक

विकास पाठ्यक्रम पूरा करना होगा। उन्हें एक सुरक्षित और स्वागत करने वाला वातावरण बनाने में सक्षम होना होगा, जहां सभी छात्र भाग लेने में सहज महसूस करें।

प्रस्तावना- शिक्षा अब हर किसी की मूलभूत आवश्यकता और अधिकार है। अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने और एक न्यायपूर्ण समाज विकसित करने में मदद करने के लिए हमें शिक्षा की आवश्यकता है। इसी तरह शिक्षा किसी राष्ट्र के राष्ट्रीय विकास में एक बड़ी भूमिका निभाती है। जैसा कि हम विश्व स्तर पर ज्ञान के मामले में एक बड़े बदलाव का सामना कर रहे हैं तो हमें नई शिक्षा नीति को सही से समझना होगा और उसके उद्देश्य जानने चाहिए।

NEP की फुल फार्म क्या है ?

NEP की फुल फार्म National Education Policy है।

5+3+3+4 का मतलब क्या है ?

New Education Policy के अंतर्गत 5+3+3+4 पैटर्न फॉलो किया जाएगा। इसमें 12 साल की स्कूल शिक्षा होगी और 3 साल की प्री-स्कूल शिक्षा होगी।

नई एजुकेशन पॉलिसी का उद्देश्य ?

इस नई नीति का उद्देश्य प्री-स्कूल से लेकर माध्यमिक स्तर तक शिक्षा को सार्वभौमिक बनाना है। यह स्कूली शिक्षा में 100: GRE सकल नामांकन अनुपात के साथ ऐसा करने की योजना है। योजना 2030 तक इसे हासिल करने की है।

नई एजुकेशन पॉलिसी के फायदे और नुकसान -

नई एजुकेशन पॉलिसी सभी छात्रों को दो बार परीक्षा देने की अनुमति देगी। इसके अलावा यह एक स्वतंत्र प्राधिकरण सार्वजनिक और निजी दोनों स्कूलों को विनियमित करने के लिए है। शिक्षा की गतिविधियों के बीच कोई कठोर विभाजन भी नहीं होगा। व्यावसायिक शिक्षा छठी कक्षा से इंटरशिप के साथ शुरू होगी। अगर नई शिक्षा नीति के नुकसानों की बात की जाए तो वर्तमान प्रारंभिक शिक्षा पर नजर डालें तो हम कहीं न कहीं एजुकेशन की फील्ड स्किल्ड प्रोफेशनल्स की कमी देखी गई है और इसे ध्यान में रखते हुए राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 प्रारंभिक शिक्षा के लिए जो व्यवस्था है, उसे लागू करने में व्यावहारिक समस्याओं को उजागर कर सकती है।

नई एजुकेशन पॉलिसी की आवश्यकता -

2020 में नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति लागू होने तक भारतीय शिक्षा प्रणाली में कुछ सुधारों की जरूरत थी। जैसे पहले किसी भी कान्सेप्ट को समझने की तुलना में याद करने को अधिक प्राथमिकता दी जाती थी। इसके अलावा कई बोर्ड की मौजूदगी एक बड़ी समस्या थी, प्रत्येक बोर्ड में अलग-अलग कौशल के लिए अलग-अलग एजुकेशन सिस्टम था। ऐसा देखा गया है कि पिछले वर्षों में पारंपरिक विषयों को सीखने या उनमें महारत हासिल करने पर ज़्यादा ज़ोर दिया गया और व्यावसायिक कौशल विकसित करने पर कम।

नई शिक्षा नीति में भारतीय शिक्षा प्रणाली की सभी कमियों और सीमाओं का ध्यान रखा गया। इसके अलावा नीति का उद्देश्य व्यावसायिक और औपचारिक शिक्षा के बीच की खाई को बांटना है।

नई एजुकेशन पॉलिसी का दृष्टिकोण -

➤ अब 3 वर्ष की आयु से स्कूली शिक्षा -

नई शिक्षा नीति में अनिवार्य स्कूली शिक्षा को 6 से 14 वर्ष की आयु वर्ग से बढ़ाकर 3 से 18 वर्ष कर दिया गया है। एनईपी में स्कूली पाठ्यक्रम में 3 से 6 वर्ष की आयु के बच्चों के लिए तीन साल की पहले से मान्यता प्राप्त प्री-स्कूलिंग शामिल है। नई प्रणाली में 12 साल की औपचारिक शिक्षा और तीन साल की आंगनवाड़ी/प्री-स्कूल शिक्षा शामिल होगी।

➤ किसी भी विषय को चुन सकते हैं -

एनईपी-2020 के तहत कला और विज्ञान या अन्य विषयक गतिविधियों या व्यावसायिक और शैक्षणिक कार्यक्रमों के बीच कोई अंतर नहीं होगा। छात्र विभिन्न स्ट्रीम में से किसी भी विषय को चुन सकते हैं। इंटर्नशिप को व्यावसायिक शिक्षा में शामिल किया जाएगा, जो छठी कक्षा से शुरू होगी।

➤ शिक्षा में तकनीकी नवाचार एनईपी का आधार -

शैक्षणिक अनुभव को बढ़ाने में प्रौद्योगिकी के उपयोग से संबंधित विचारों के मुक्त आदान-प्रदान की पेशकश करने के लिए एक स्वायत्त निकाय राष्ट्रीय शैक्षिक प्रौद्योगिकी मंच (NETF) की शुरुआत की जाएगी। प्रौद्योगिकी के इस एकीकरण से कक्षा प्रक्रियाओं में सुधार होने की उम्मीद है।

➤ पुरानी एजुकेशन पॉलिसी और नई एजुकेशन पॉलिसी में अंतर -

ऐसा माना जाता है कि न्यू एजुकेशन पालिसी भारत की पुरानी शिक्षा नीति में बदलाव का महत्वपूर्ण कदम है। यहां हम दोनों नीतियों के बीच कुछ प्रमुख अंतर दे रहे हैं।

समग्र शिक्षा - नई शिक्षा नीति छात्रों के सामाजिक, भावनात्मक, शारीरिक और संज्ञानात्मक विकास पर ध्यान केंद्रित करके बच्चे के समग्र विकास पर जोर देती है। जबकि पुरानी शिक्षा प्रणाली मुख्य रूप से केवल परीक्षा पास करने और प्रमाणपत्र प्राप्त करने पर केंद्रित थी।

शुरुआती शिक्षा - एनईपी 2020 प्रारंभिक शिक्षा के महत्व को पहचानती है और इसका उद्देश्य 8 वर्ष की आयु तक के सभी बच्चों के लिए गुणवत्तापूर्ण प्रारंभिक बचपन देखभाल और शिक्षा तक पहुंच प्रदान करना है। ऐसा माना गया है कि पुरानी नीति में प्रारंभिक शिक्षा पर ज़्यादा ध्यान नहीं दिया गया था।

व्यावसायिक शिक्षा - राष्ट्रीय शिक्षा नीति व्यावसायिक शिक्षा को मुख्यधारा की शिक्षा में शामिल करने, कौशल विकास और उद्यमिता को बढ़ावा देने पर जोर देती है। पुरानी शिक्षा प्रणाली डिग्री तो देती थी, लेकिन कौशल नहीं। नई शिक्षा नीति ने साक्षरता को बढ़ावा देने के बजाय कार्यबल के कौशल और क्षमताओं को विकसित करने पर अपना जोर बदल दिया है।

स्कूल संरचना - राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में स्कूली शिक्षा संरचना में बदलाव का प्रस्ताव है। पुरानी 102 प्रणाली को एक नई 5334 प्रणाली द्वारा प्रतिस्थापित किया जाएगा, जहाँ शिक्षा के पहले पाँच वर्ष आधारभूत चरण पर केंद्रित होंगे, उसके बाद तीन वर्ष की प्रारंभिक शिक्षा और तीन वर्ष की माध्यमिक शिक्षा होगी। अंत में चार वर्ष की माध्यमिक शिक्षा होगी, जिसमें व्यावसायिक प्रशिक्षण और बहु-विषयक शिक्षा पर जोर दिया जाएगा।

नई शिक्षा नीति 2020 के अनुसार एक अच्छा शिक्षण संस्थान -

सभी शिक्षार्थियों के लिए एक स्वागतयोग्य और सहायक वातावरण बनाने के महत्व पर जोर दिया गया है, जहाँ वे मूल्यवान और देखभाल महसूस करते हैं। इसलिए नीति सीखने के अनुभवों की एक विस्तृत श्रृंखला को प्रोत्साहित करती है और यह सुनिश्चित करती है कि प्रत्येक छात्र के लिए अच्छा भौतिक बुनियादी ढांचा और उपयुक्त संसाधन सुलभ हों।

शैक्षणिक उत्कृष्टता के लिए यह प्रतिबद्धता विषय चयन को सुव्यवस्थित करने। क्षेत्रीय ई-सामग्री को सक्षम करने, सीखने के अंतराल को बांटने वैचारिक समझ को बढ़ाने, मूलभूत साक्षरता और संख्यात्मकता प्राप्त करने समग्र विकास को बढ़ावा देने। अंततः छात्रों को उन कौशल और ज्ञान से लैस करने का लक्ष्य रखती है, जिनकी उन्हें 21वीं सदी में सफल होने के लिए आवश्यकता है।

नई शिक्षा नीति 2020 की आवश्यकता एवं NEP 2020 में बदलाव पर चर्चा -

नई शिक्षा नीति 2020 के तहत स्कूल से लेकर उच्च शिक्षा तक कई बदलाव किए जा रहे हैं। इस नीति का मकसद देश की शिक्षा प्रणाली को आधुनिक ज़रूरतों के मुताबिक बनाना है। इस नीति के तहत डिजिटल शिक्षा को बढ़ावा दिया जाएगा और स्किल डेवलपमेंट पर ज़्यादा ध्यान दिया जाएगा।

नई शिक्षा नीति 2020 के तहत किए जाने वाले बदलाव:-

- 10वीं और 12वीं की बोर्ड परीक्षाएं साल में दो बार होंगी।
- 11वीं और 12वीं के छात्रों को दो भाषाएं पढ़नी होंगी, जिनमें से एक भारतीय भाषा होगी। किताबों का सिलेबस कम किया जाएगा और उनकी कीमतें भी कम की जाएंगी।
- स्कूल बोर्ड कोर्स पूरा होने पर ऑन डिमांड एग्जाम कराने की मांग की जा सकती है। कॉलेजों को ज़्यादा आज़ादी दी जाएगी।
- कॉलेजों में नवाचार, उत्कृष्टता और समावेशिता को बढ़ावा दिया जाएगा।
- कॉलेजों में स्वायत्तता को बढ़ाने के लिए एंटरप्राइज़ रिसोर्स प्लानिंग (ERP) सॉफ्टवेयर लागू किया जाएगा।
- कॉलेजों में विकल्प-आधारित क्रेडिट प्रणाली (CBCS) को शुरू किया जाएगा।
- प्रारंभिक उम्र से ही व्यावसायिक प्रशिक्षण और इंटर्नशिप को जोड़ा जाएगा।

शिक्षा संरचना में 10+2 से 5+3+3+4 तक बदलाव NEP 2020 का बड़ा बदलाव -

NEP 2020 में इसके उल्लेख के बाद NEP 2020 में पेश किए गए सबसे महत्वपूर्ण परिवर्तनों में से एक पारंपरिक 10+2 संरचना से अधिक विकासात्मक रूप से संरेखित 5+3+3+4 प्रणाली में बदलाव है। यह नया दृष्टिकोण अधिक आयु-उपयुक्त होने के लिए डिज़ाइन किया गया है। जो छात्रों के विकास के विभिन्न चरणों में उनकी विशिष्ट सीखने की ज़रूरतों को पूरा करता है। 5+3+3+4 स्कूली शिक्षा संरचना निम्नलिखित आयु समूहों से मेल खाती है 3 से 8 वर्ष (आधारभूत चरण), 8 से 11 वर्ष (प्रारंभिक चरण), 11 से 14 वर्ष (मध्य चरण), और 14 से 18 वर्ष (माध्यमिक चरण)।

स्कूलों और सामाजिक क्षेत्र के एडटेक कार्यक्रमों में इस ढांचे को अपनाकर आप एक व्यापक-आधारित पाठ्यक्रम को शामिल करके समग्र विकास सुनिश्चित कर सकते हैं जो वैचारिक शिक्षा, आलोचनात्मक सोच और समस्या समाधान पर जोर देता है। इसके अतिरिक्त यह दृष्टिकोण आपको बहु-विषयक शिक्षा को बढ़ावा देने की अनुमति देगा। जिससे आपके छात्र विभिन्न धाराओं में विषयों का पता लगाने में सक्षम होंगे और एक लचीला खुला शिक्षण वातावरण तैयार करेंगे।

कक्षा VI से VIII के विद्यार्थियों के लिए स्थानीय व्यावसायिक विशेषज्ञों के साथ इंटर्नशिप का प्रावधान:-

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में कम उम्र से ही व्यावसायिक प्रशिक्षण और इंटर्नशिप को एकीकृत करने पर जोर दिया गया है, जो कौशल-आधारित शिक्षा को मुख्यधारा के स्कूली पाठ्यक्रम के साथ मिलाने का एक महत्वपूर्ण अवसर प्रदान करता है। यह समग्र दृष्टिकोण सुनिश्चित करता है कि छात्र अपनी औपचारिक शिक्षा के साथ-साथ व्यावहारिक नौकरी के लिए तैयार कौशल विकसित करें, जिससे उनकी शिक्षा वास्तविक दुनिया की बाज़ार की ज़रूरतों के साथ अधिक संरेखित हो। छात्रों को व्यावसायिक कौशल से लैस करके नीति न केवल उनकी रोज़गार क्षमता को बढ़ाती है, बल्कि उद्यमशीलता और स्व-रोज़गार को भी बढ़ावा देती है। जिससे मानव पूंजी के विकास में योगदान मिलता है और देश की आर्थिक प्रगति को बढ़ावा मिलता है।

वर्चुअल लैब का विकास:- SDG4 को प्राप्त करने की दिशा में एक NEP 2020 कदम -

जैसा कि हमने राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) 2020 की चौथी वर्षगांठ मनाई, नीति ने सतत विकास लक्ष्य 4 एसडीजी 4 को प्राप्त करने पर जोर दिया। इसलिए राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अनुसार इस दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल DIKSHA प्लेटफॉर्म के माध्यम से सुलभ वर्चुअल लैब का निर्माण है जो वर्तमान में 280 से अधिक ऑपरेशनल लैब की मेजबानी करता है। ये वर्चुअल लैब छात्रों को व्यावहारिक हाथों से सीखने के अनुभवों तक समान पहुंच प्रदान करते हैं, जिससे वे किसी भी समय और कहीं भी प्रयोग कर सकते हैं। केवल प्रयोग करने से परे ही नहीं हमारे लिए वास्तविक दुनिया के परिदृश्यों का अनुकरण करना महत्वपूर्ण है। छात्र प्रयोग कर सकते हैं और विभिन्न चर के आधार पर विभिन्न परिणामों का विश्लेषण कर सकते हैं। यह स्कूलों और सामाजिक क्षेत्र/एनजीओ शैक्षिक कार्यक्रमों के लिए सिमुलेशन

और गतिविधि-आधारित वीडियो सामग्री के एकीकरण को प्राथमिकता देना महत्वपूर्ण बनाता है, ताकि छात्रों को भविष्य के लिए तैयार करने वाले सार्थक हाथों से सीखने के अवसरों का लाभ मिल सके।

उपसंहार- नई शिक्षा नीति 2020 पर निबंध को समाप्त करते हुए हम कह सकते हैं कि यह नीति हमारे समाज और देश के समग्र विकास में मदद करने के लिए एक आवश्यक पहल है। हालांकि इस नीति का कार्यान्वयन इसकी सफलता को बहुत हद तक निर्धारित करेगा।

भारत वास्तव में इस शिक्षा नीति की जरूरत के साथ शिक्षा के क्षेत्र में एक बेहतर स्थिति प्राप्त कर सकता है। इसलिए राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अनुसार इस दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल DIKSHA प्लेटफॉर्म के माध्यम से सुलभ वर्चुअल लैब का निर्माण है, जो वर्तमान में 280 से अधिक ऑपरेशनल लैब की मेजबानी करता है। ये वर्चुअल लैब छात्रों को व्यावहारिक हाथों से सीखने के अनुभवों तक समान पहुंच प्रदान करते हैं, जिससे वे किसी भी समय और कहीं भी प्रयोग कर सकते हैं। केवल प्रयोग करने से परे ही नहीं हमारे लिए वास्तविक दुनिया के परिदृश्यों का अनुकरण करना महत्वपूर्ण है। जो भारत के सुनहरे भविष्य का निर्माण करेगा।

संदर्भसूची -

1. Aithal, P. S.; Aithal, Shubhrajyotsna (2019). "Analysis of Higher Education in Indian National Education Policy Proposal 2019 and Its Implementation Challenges". International Journal of Applied Engineering and Management Letters. 3 (2): 1-35. SSRN 3417517
2. Nandini, ed. (29 July 2020). "New Education Policy 2020 Highlights: School and higher education to see major changes". Hindustan Times.
3. Jebaraj, Priscilla (2 August 2020). "The Hindu Explains | What has the National Education Policy 2020 proposed?" The Hindu. ISSN 0971-751X
4. Chopra, Ritika (2 August 2020). "Explained: Reading the new National Education Policy 2020". The Indian Express.
5. Rohatgi, Anubha, ed. (7 August 2020). "Highlights | NEP will play role in reducing gap between research and education in India: PM Modi". Hindustan Times.
6. Krishna, Atul (29 July 2020). "NEP 2020 Highlights: School And Higher Education". NDTV.
7. Naidu, M. Venkaiah (8 August 2020). "The New Education Policy 2020 is set to be a landmark in India's history of education". Times of India Blog.
8. https://static.pib.gov.in/WriteReadData/userfiles/NEP_Final_Englis_h_0.pdf

9. <https://www.orfonline.org/expert-speak/national-education-policy-2020-policy-times/>
10. <https://www.highereducationdigest.com/the-impact-of-national-education-policy-2020-on-professional-education/>
11. <http://bweducation.businessworld.in/article/NEP-2020-Impact-On-Higher-Education-/07-08-2020-305999/>
12. <https://timesofindia.indiatimes.com/readersblog/theaitics/implications-of-the-national-education-policy-2020-on-higher-education-in-india-2-24729/>
13. <https://www.hindustantimes.com/india-news/pm-modi-s-address-at-conclave-on-transformational-reforms-in-higher-education-under-national-education-policy-highlights/story-dehOW8q8ZRrONbbFSRjg0H.html>



“गुरु शिष्य मर्यादाओं की महान परम्परा” (गुरुकुल) – एक अध्ययन

सुनैना बाली

पीएचडी स्कॉलर

शासकीय कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय

विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन (म.प्र.)

सारांश: –

शिक्षा वह है जो हमारे जीवन और हमारी मूलभूत संस्कृतियों, परम्पराओं के विकास से होती है। हम अपने जीवन में विद्यालय माता-पिता एवं अपने गुरु आदि से ज्ञान प्राप्त करते हैं। यह ज्ञान हमारे जीवन में कितना उपयोगी एवं महत्वपूर्ण है, यह हमारे जीवन में प्राप्त उपलब्धियों और उच्चतम गुणों एवं नैतिक मूल्यों आदि से पता चलता है। विद्यार्थी जीवन में उच्चतम मूल्यों एवं गुणों आदि का होना आवश्यक है। उसी प्रकार गुरुकुल शिक्षा भी महान परम्परा और भारतीय शिक्षा की सर्वोत्तम देन रही है। जिसमें गुरु शिष्य के संबंधों, मर्यादाओं और आध्यात्मिकता, ईमानदारी, सेवाभाव, सहानुभूति, करुणा सामाजिक दायित्व आदि से महान परम्पराओं के बारे में अवगत कराती है।

मुख्य शब्द :- गुरुकुल, गुरु शिष्य, परम्परा, मर्यादा।

परिचय:-

भारत में वैदिक शिक्षा के आरंभ से ही गुरुकुल शिक्षा को उच्चतम शिक्षा माना जाता रहा है। शिष्य गुरु के आश्रमों एवं गुरु के साथ रहकर विद्या अध्ययन करते थे। शिष्य गुरु के परिवार का हिस्सा माने जाते थे, गुरुकुल में प्रवेश प्रक्रिया औपचारिक रूप समारोह उपनयन या दिशा द्वारा दी जाती थी। कौशल आधारित शिक्षा के साथ वेद, पुराण आदि से सीखने का चयन जरूरी था, आध्यात्मिक पुस्तकें विद्यार्थियों को उनकी जानकारी बढ़ाने में सहायता करती थी। आर्य समाज के संस्थापक दयानन्द सरस्वती और स्वामी श्रद्धानन्द आधुनिक गुरुकुल शिक्षा प्रणाली के अग्रदूत थे। धर्मशास्त्र की शिक्षा से लेकर अस्त्र-शस्त्र आदि की शिक्षा भी दी जाती थी, योग साधना एवं यज्ञ को गुरुकुल शिक्षा का एक अभिन्न अंग माना जाता था। विद्यार्थी अपनी दिनचर्या को अनुशासन में रहकर एवं गुरु के आदर्शों का पालन करते थे। शिष्य आधुनिक दुनिया से सिखने के बजाये अपने गुरु के सानिध्य और मर्यादा में रहकर ज्ञान अर्जित करते एवं जीवन की समस्त जिज्ञासाओं, समस्याओं आदि को गुरु के साथ साझा करते थे, गुरु भी अपने शिष्य की हर समस्या, जिज्ञासाओं का उत्तर स्वयं अपने शिष्यों को समझाते और दिशा प्रदान करते थे।

भारतीय शिक्षा व्यवस्था में विद्यार्थियों को शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक व आध्यात्मिक शक्तियों के विकास की शिक्षा भी दी जाती थी।

काल पी (1990) – रवीन्द्रनाथ टैगोर तथा महर्षि अरविन्द के शैक्षिक दर्शन का तुलनात्मक अध्ययन किया। दोनों ने ही प्राचीन भारतीय वातावरण को विद्यालय के लिए महत्वपूर्ण माना है।

गुरुकुल शिक्षा प्रणाली का महत्व:- गुरुकुल शिक्षा प्रणाली प्राकृतिक वातावरण में विशिष्ट जानकारी जिसमें सहायक जानकारी दी जाती थी, इसका समाज पर कोई प्रतिकूल प्रभाव भी नहीं पड़ता था। गुरुकुल में विद्यार्थी को अपने दैनिक कार्य स्वयं ही करने होते एवं यह जीवन के लिए महत्वपूर्ण थे। विद्यार्थी स्वयं से अपनी जिम्मेदारियों और अपने कार्यों को सिखते व समझते एवं आत्मनिर्भर बनते थे। इसी तरह उन्हें जीवन निर्वाह के लिए आवश्यक कौशलों को सीखने में सहायता भी प्राप्त होती थी।

गुरु शिष्य को जीवन के महत्व और दायित्वों को समझाते एवं परिवार की जिम्मेदारियों और सामाजिक रूप से अपने कर्तव्यों को ईमानदारी और सेवाभाव के रूप में विद्यार्थियों को सकारात्मक भूमिका प्रदान करते थे।

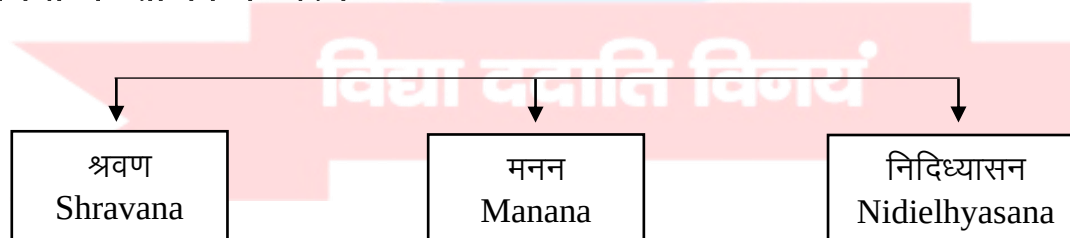
गुरुकुल के महत्व को विद्यार्थी के व्यक्तित्व विकास में सहायता, बौद्धिक विकास एवं आत्मविश्वास को बढ़ाने में विकास किया जाता था। जिससे विद्यार्थी अपने विकास के लिए सोचने, समझने, निर्णय लेने जैसे – महत्वपूर्ण योग्यताओं को स्वयं में विकसित कर सके।

गुरुकुल शिक्षा के उद्देश्य :-

1. सम्पूर्ण विकास
2. व्यक्तित्व विकास
3. प्रकृति और समाज के प्रति जागरूकता
4. पीढ़ी दर पीढ़ी ज्ञान और संस्कृति को आगे बढ़ाना
5. जीवन में स्वयं पर नियंत्रण और अनुशासन
6. अपने जीवन और दिनचर्या को गुरु के मार्ग व निर्देशों के अनुसार निर्वाह करना
7. जीवन में आध्यात्मिकता की राह पर चलना परमात्मा से स्वयं को जोड़ना

गुरुकुल शिक्षा प्रणाली न केवल कौशलों, ज्ञान प्राप्ति का साधन रही। विद्यार्थी अपनी विभिन्न प्रकार की उपलब्धियों को प्राप्त करते थे। प्राकृतिक के बीच ज्ञान का विकास जीवन के मूल्यों और शैक्षणिक उपलब्धियों को अर्जित करते थे। विद्यार्थी अपने ज्ञान को बढ़ाने और अपने गुणों का विकास करने हेतु नई-नई योजनाओं को क्रियान्वित करते थे।

विद्यार्थियों के सीखने के चरण –



- | | | | |
|-----|-------------|---|--|
| (1) | Shravana | → | Listening to truth from the teacher |
| (2) | Manana | → | Assimilating the lesson by the student himself |
| (3) | Vididhyasna | → | Complete comprehension of truth |

गुरुकुल शिक्षा प्रणाली में विद्यार्थी मौखिक और विचार (Oral and Thinking) दोनों तरीकों को शिक्षण को अर्जित करते थे।

गुरुकुल में विद्यार्थियों के मूल्यों का विकास :-

- (1) कर्मयोग
- (2) वैदिक साहित्य
- (3) सम्पूर्ण व्यक्तित्व विकास
- (4) योगशास्त्र
- (5) ध्यान
- (6) ईश्वर की प्राप्ति

गुरुकुल में विद्यार्थियों के उच्चतम मूल्यों का विकास :-

गुरुकुल में विद्यार्थियों के विशेष उच्चतम मूल्य होते थे। जिसकी सहायता से विद्यार्थियों में एक अलग गुणों का विकास, आध्यात्मिकता, शांत प्रवृत्ति, और शिक्षा के प्रति अहम रुचियों को प्रदर्शित करती थी, अपने जीवन को उच्च मार्ग पर ले जाती थी।

(1) आत्मविकास और व्यक्तिगत विकास:- आत्म एवं व्यक्तिगत विकास मानसिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक गुणों के योग से है। विद्यार्थी जिस माहौल में सिखता, समझता है तथा उसके बाह्य वातावरण मित्र सहयोग, समुदाय, दर्शन आदि विद्यार्थी के आत्मविकास और व्यक्तित्व विकास को प्रदर्शित करते हैं।

(2) सेवाभाव:- अपने से पहले दूसरों की सेवा विद्यार्थी अपने जीवन में निःस्वार्थ भाव से लोगों की सेवा और ईश्वर की सेवा में मिलिन रहते थे। उनके लिए सेवा ही ईश्वर की प्राप्ति तथा गुरु की सेवा ही सर्वोत्तम शिक्षा थी।

(3) संस्कृति और परम्परा का सम्मान:- अपनी गुरुकुल की परम्पराओं को बनाए रखने और गुरु के द्वारा दिए गए संस्कारों और सामाजिक रूप से संस्कृति दायित्व का पालन विद्यार्थी आदर्शों तथा अनुशासन में रहकर करते।

(4) गुरु शिष्य संबंध:- गुरु-शिष्य संबंधों बहुत गहरा होता था जिसे विद्यार्थियों को एक निर्देश प्रदान करता था। जिसमें शिष्य अपने गुरु के कहे अनुसार मार्ग पर चलते थे और अपने जीवन को योग्य बनाते थे। गुरु और शिष्य के संबंध में बहुत गंभीरता और गहराई होती थी।

(5) ईमानदारी:- शिष्य गुरु के आदेश का पालन करते थे। अपने कार्यों को ईमानदारी और सकारात्मक रूप से पूर्ण करते।

(6) अनुशासन:- गुरुकुल शिक्षा प्रणाली में विद्यार्थियों की नियमित दिनचर्या का अनुशासन में रहकर पालन किया जाता था। विद्यार्थी भी अनुशासन और अपने गुरु की सभी बातों को गुरु दिए गए मार्गों का अनुशासन में रहकर उपयोग करते।

(7) नैतिक मूल्य:- शिष्य गुरु के बताए नैतिक मूल्यों का पालन करते, जैसे – सामाजिक दायित्व, दया-परोपकार की भावना, बुराई तथा बुरी आदतों का त्याग, सच्चाई की राह पर चलना दूसरों की सहायता करना आदि नैतिक मूल्यों की शिक्षा गुरु के द्वारा दी जाती थी।

(8) आध्यात्मिकता:- गुरुकुल शिक्षा प्रणाली में धार्मिक अनुभव, ईश्वर की सेवा, पवित्र ग्रन्थों का ज्ञान, धार्मिक परम्पराओं का ज्ञान, वेदों का ज्ञान, मंत्रों उच्चारण आदि शिक्षा विद्यार्थियों को आध्यात्मिक रूप से दी जाती थी।

निष्कर्ष:- गुरुकुल शिक्षा प्रणाली आधुनिक शिक्षा प्रणाली के लिए अत्यन्त आवश्यक है। एक शिष्य अपने जीवन में गुरु से जितना सीखता, समझता है वह और किसी परिवेश में नहीं सीख सकता, गुरुकुल प्रणाली अनुशासन

गुरु-शिष्य मर्यादाओं का पालन करती है। जिसमें आगे चलकर हर विद्यार्थी सभी गुणों, संस्कारों, आध्यात्मिकता के गुणों को प्राप्त कर सकता है। गुरुकुल शिक्षा प्रणाली गुरु शिष्य मर्यादाओं की महान परम्परा का उल्लेख करती है। शिष्य अपने जीवन में गुरु के सानिध्य में रहकर ज्ञान अर्जित करता है। वह किसी परिवेश में नहीं कर सकता। गुरुकुल प्रणाली भारतीय शिक्षा के लिए महत्वपूर्ण है।

सन्दर्भ सूची:-

- (1) शिखा गोयल (2018) – कैसे गुरुकुल शिक्षा प्रणाली आधुनिक शिक्षा प्रणाली से अलग है।
- (2) लक्ष्मी गुप्ता – पारम्परिक भारतीय शिक्षा प्रणाली के साथ विश्वविद्यालय शैक्षणिक प्रणाली का एकीकरण।
- (3) दास गणेश (2018) – वर्तमान शिक्षा में शिक्षा की दशा का अध्ययन।
- (4) सिन्ध आकाश (2018) – प्राचीन और आधुनिक विद्यार्थी जीवन के आनन्द का अध्ययन।
- (5) डॉ. एस.के. दास (1930) – प्राचीन शिक्षा पद्धति पर पुस्तक – दा एजुकेशनल।
- (6) सिंह, मधुरिमा (2010) – मूल्यों को विशिष्ट बौद्ध दर्शन।
- (7) अग्रवाल निशा (2010) – स्वामी दयानन्द के अनुसार संवर्द्धन में शिक्षा की भूमिका-एक अध्ययन।
- (8) डॉ. देवेन्द्र सिंह चम्याल – मानवीय मूल्यों के संरक्षण एवं संवर्द्धन में शिक्षा की भूमिका- एक अध्ययन।
- (9) संजय कुमार – संज्ञानात्मक और व्यक्तित्व की तुलना योग के छात्रों के बीच आयाम (गुरुकुल) और आधुनिक शिक्षा प्रणाली।

- www.google.com
- www.sodhganga.infilibnet.ac.in

विद्या ददाति विनयं

भारतीय ज्ञान परंपरा हमारी धरोहर

विवेक कुमार पाठक

पीएचडी स्कॉलर (इतिहास)

पंडित एस. एन. शुक्ला यूनिवर्सिटी, शहडोल (म.प्र.)

सारांश-

भारतीय ज्ञान परंपरा विश्व की सबसे प्राचीन और समृद्ध परंपराओं में से एक है। यह परंपरा विभिन्न विषयों और ज्ञान के क्षेत्रों में विस्तृत है, जिसमें दर्शन, विज्ञान, गणित, साहित्य, कला, आयुर्वेद, योग, धर्म और आध्यात्मिकता शामिल हैं। इस ज्ञान परंपरा ने न केवल भारत को बल्कि पूरे विश्व को गहन और मौलिक सिद्धांत प्रदान किए हैं।

दर्शन और आध्यात्मिकता:-

भारतीय दर्शन में छह प्रमुख दर्शनों की परंपरा है:- सांख्य, योग, न्याय, वैशेषिक, मिमांसा और वेदांत। इसके अतिरिक्त, बौद्ध, जैन और सिख धर्मों ने भी गहन दार्शनिक सिद्धांत प्रस्तुत किए हैं। भगवद गीता, उपनिषद और वेदांत दर्शन भारतीय ज्ञान की प्रमुख कृतियाँ हैं।

विज्ञान और गणित:-

भारतीय गणितज्ञ आर्यभट्ट, ब्रह्मगुप्त और भास्कराचार्य ने गणित के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। शून्य की अवधारणा, दशमलव प्रणाली और अंकगणित की अनेक विधियाँ भारतीय गणितज्ञों की देन हैं।

आयुर्वेद का उद्भव और विकास -

वैदिक काल (1500 ईसा पूर्व - 500 ईसा पूर्व) -

आयुर्वेद भारतीय चिकित्सा की प्राचीन प्रणाली है, जो शरीर, मन और आत्मा की समग्र देखभाल पर आधारित है। चरक संहिता और सुश्रुत संहिता आयुर्वेद की प्रमुख ग्रंथें हैं, जिनमें रोगों के निदान और उपचार की विधियाँ विस्तार से वर्णित हैं।

आयुर्वेद भारतीय चिकित्सा की प्राचीन और समृद्ध प्रणाली है। इसका इतिहास हजारों वर्षों पुराना है और यह भारतीय सभ्यता की महत्वपूर्ण धरोहरों में से एक है। आयुर्वेद का उद्देश्य शारीरिक, मानसिक, और आत्मिक संतुलन बनाए रखना और रोगों का उपचार करना है। आयुर्वेद का उद्गम वैदिक काल में हुआ। वेदों, विशेषकर अथर्ववेद में आयुर्वेदिक ज्ञान का उल्लेख मिलता है। ऋग्वेद और यजुर्वेद में भी

चिकित्सा से संबंधित मंत्र और उपचारों का विवरण है। वैदिक ऋषियों ने प्रकृति से प्रेरणा लेकर औषधियों और उपचार विधियों का विकास किया।

आयुर्वेद के प्रमुख ग्रंथ -

1. चरक संहिता आयुर्वेद का एक प्रमुख ग्रंथ है, जिसे महर्षि चरक ने रचा था। इसमें शरीर रचना, रोग निदान, चिकित्सा पद्धतियाँ, और औषधियों के बारे में विस्तार से वर्णन किया गया है। यह ग्रंथ आंतरिक चिकित्सा (काय चिकित्सा) पर केंद्रित है।
2. सुश्रुत संहिता के लेखक महर्षि सुश्रुत माने जाते हैं। यह ग्रंथ शल्य चिकित्सा (सर्जरी) पर केंद्रित है और इसमें शल्यक्रिया, अंग विच्छेदन, और चिकित्सा उपकरणों का विवरण है। सुश्रुत को शल्य चिकित्सा का पितामह माना जाता है।
3. अष्टांग हृदय का लेखक वाग्भट है। यह ग्रंथ आयुर्वेद के आठ अंगों (अष्टांग) को समाहित करता है और चिकित्सा के विभिन्न पहलुओं पर गहन जानकारी प्रदान करता है।

आयुर्वेद के सिद्धांत -

1. त्रिदोष सिद्धांत आयुर्वेद के अनुसार, शरीर में तीन मुख्य दोष होते हैं:- वात, पित्त, और कफ। इन तीनों दोषों का संतुलन शरीर के स्वास्थ्य के लिए आवश्यक होता है। वात वायु तत्व, पित्त अग्नि तत्व, और कफ जल तत्व को नियंत्रित करते हैं।
2. धातु और मल शरीर में सात धातुएं (रस, रक्त, मांस, मेद, अस्थि, मज्जा, शुक्र) और तीन मुख्य मल (मल, मूत्र, और स्वेद) होते हैं। इनका संतुलन बनाए रखना स्वास्थ्य के लिए महत्वपूर्ण है।
3. प्रकृति और विकृति आयुर्वेद में प्रत्येक व्यक्ति की एक अद्वितीय प्रकृति होती है, जिसे 'प्रकृति' कहा जाता है। किसी भी दोष या धातु के असंतुलन से 'विकृति' उत्पन्न होती है, जो रोग का कारण बनती है।

आयुर्वेदिक उपचार -

1. औषधि और जड़ी-बूटियाँ आयुर्वेद में अनेक औषधियाँ और जड़ी-बूटियाँ उपयोग की जाती हैं। तुलसी, अदरक, हल्दी, आंवला, नीम आदि का महत्वपूर्ण स्थान है। इनका उपयोग विभिन्न रोगों के उपचार में किया जाता है।
2. पंचकर्म आयुर्वेद की एक महत्वपूर्ण उपचार पद्धति है, जिसमें शरीर को विषमुक्त करने के लिए पांच प्रक्रियाएँ (वमन, विरेचन, बस्ती, नस्य, और रक्तमोक्षण) शामिल हैं।
3. आहार और दिनचर्या आयुर्वेद में आहार और दिनचर्या का विशेष महत्व है। संतुलित आहार और नियमित दिनचर्या से स्वास्थ्य को बनाए रखा जा सकता है। आयुर्वेदिक चिकित्सा में विभिन्न प्रकार के आहार और आहार नियमों का पालन किया जाता है।

विद्या ददाति विनयं

आधुनिक युग में आयुर्वेद -

आधुनिक युग में आयुर्वेद को पुनः जागरूकता मिली है और इसे वैश्विक स्तर पर मान्यता प्राप्त हो रही है। विभिन्न आयुर्वेदिक विश्वविद्यालय, अनुसंधान संस्थान, और चिकित्सालय स्थापित किए गए हैं। आयुर्वेदिक उत्पादों और चिकित्सा पद्धतियों का उपयोग विश्व भर में हो रहा है।

आयुर्वेद भारतीय चिकित्सा का अनमोल खजाना है, जो न केवल रोगों का उपचार करता है बल्कि समग्र स्वास्थ्य और कल्याण को भी बढ़ावा देता है। इसका विज्ञान और ज्ञान हजारों वर्षों की प्राचीन परंपरा और अनुभव पर आधारित है, जो आज भी प्रासंगिक और प्रभावी है।

योग:-

योग भारत की प्राचीनतम और समृद्ध परंपराओं में से एक है। यह शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक विकास का एक संपूर्ण मार्ग है। योग का इतिहास हजारों वर्षों पुराना है और इसके सिद्धांत एवं प्रथाएं वेदों, उपनिषदों, महाभारत, भगवद गीता, पतंजलि के योगसूत्र और कई अन्य प्राचीन ग्रंथों में पाई जाती हैं।

योग का इतिहास -

वैदिक काल (1500 ईसा पूर्व - 500 ईसा पूर्व) -

योग का आरंभ वैदिक काल में हुआ। वेदों में योग के प्रारंभिक रूपों का उल्लेख मिलता है। ऋग्वेद में ध्यान और समाधि का उल्लेख है। यज्ञ और अन्य धार्मिक अनुष्ठानों के दौरान ध्यान और एकाग्रता के अभ्यास होते थे।

उपनिषद और महाभारत काल (800 ईसा पूर्व - 500 ईसा पूर्व) -

उपनिषदों में योग के तत्वों का गहन विवरण मिलता है। इसमें ध्यान, प्राणायाम, और आत्म-अनुभूति के बारे में बताया गया है। महाभारत में विशेषकर भगवद गीता में योग के विभिन्न मार्गों (ज्ञान योग, कर्म योग, और भक्ति योग) का उल्लेख है।

पतंजलि का योगसूत्र (200 ईसा पूर्व - 200 ईसवी) -

योग का सबसे महत्वपूर्ण ग्रंथ पतंजलि का योगसूत्र है। इसमें योग के अष्टांग (आठ अंग) का वर्णन किया गया है:-

1. यम (नैतिक अनुशासन)
2. नियम (आत्म-अनुशासन)
3. आसन (शारीरिक मुद्राएँ)
4. प्राणायाम (श्वास नियंत्रण)
5. प्रत्याहार (इंद्रियों का नियंत्रण)

6. धारणा (एकाग्रता)

7. ध्यान (ध्यान)

8. समाधि (आध्यात्मिक एकत्व)

मध्यकाल (500 - 1700 ईसवी) -

मध्यकालीन भारत में हठयोग का विकास हुआ। स्वामी स्वात्माराम द्वारा रचित "हठयोग प्रदीपिका" हठयोग का प्रमुख ग्रंथ है। इसमें शारीरिक मुद्राएँ, प्राणायाम और शुद्धि क्रियाओं का विस्तार से वर्णन है।

आधुनिक काल (1700 ईसवी - वर्तमान) -

आधुनिक काल में योग ने विश्वव्यापी पहचान प्राप्त की। स्वामी विवेकानंद, परमहंस योगानंद, श्री तिरुमलाई कृष्णमाचार्य, बी.के.एस. आर्यंगार और अन्य योग गुरुओं ने योग को लोकप्रिय बनाया। 20वीं शताब्दी में योग का पुनर्जागरण हुआ और यह पश्चिमी देशों में भी फैल गया।

भारत में योग का महत्व -

1. शारीरिक स्वास्थ्य योग शारीरिक स्वास्थ्य को बढ़ावा देता है। आसन और प्राणायाम शरीर को मजबूत और लचीला बनाते हैं, रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाते हैं और शरीर के विभिन्न तंत्रों (पाचन, श्वसन, संचारण) को सशक्त करते हैं।
2. मानसिक स्वास्थ्य योग मानसिक शांति और संतुलन प्रदान करता है। ध्यान और प्राणायाम मानसिक तनाव को कम करते हैं, एकाग्रता और स्मरण शक्ति को बढ़ाते हैं और मानसिक स्वास्थ्य को सुधारते हैं।
3. आध्यात्मिक विकास योग आत्मानुभूति और आत्मज्ञान का मार्ग है। यह व्यक्ति को अपने आंतरिक स्वभाव से जोड़ता है और आत्मा की खोज में सहायता करता है।
4. सामाजिक और नैतिक विकास योग नैतिक और सामाजिक अनुशासन का पालन करना सिखाता है। यम और नियम सामाजिक और नैतिक मूल्यों को सुदृढ़ करते हैं।

अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस -

21 जून को विश्वभर में "अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस" मनाया जाता है। 2014 में संयुक्त राष्ट्र महासभा ने इस दिवस को मान्यता दी। यह योग की विश्वव्यापी स्वीकृति और महत्व का प्रतीक है, योग भारतीय संस्कृति और परंपरा का अभिन्न अंग है। इसका इतिहास, सिद्धांत और प्रथाएं भारतीय जीवन के हर पहलू को प्रभावित करती हैं। आज, योग ने अपनी प्राचीन जड़ों को मजबूत रखते हुए आधुनिक जीवन में भी अपनी महत्वपूर्ण जगह बना ली है। यह न केवल भारत के लिए बल्कि पूरे विश्व के लिए एक अमूल्य धरोहर है।

योग भारतीय ज्ञान परंपरा का एक महत्वपूर्ण अंग है जो शारीरिक, मानसिक और आत्मिक विकास के लिए अनेक विधियों का समुच्चय है। पतंजलि के योगसूत्र योग दर्शन का प्रमुख ग्रंथ है, जिसमें अष्टांग योग की विधियाँ विस्तार से वर्णित हैं।

साहित्य और कला -

भारतीय साहित्य में वेद, पुराण, महाभारत, रामायण और कालिदास की कृतियाँ अद्वितीय हैं। इसके साथ ही, भारतीय संगीत, नृत्य और चित्रकला की समृद्ध परंपरा भी इस ज्ञान का हिस्सा हैं। भरतनाट्यम, कथकली, और मुथुकल विद्या जैसी कला विधाएँ विश्व प्रसिद्ध हैं।

धर्म और संस्कृति -

भारतीय धर्म और संस्कृति में विविधता और समरसता का विशेष महत्व है। हिन्दू धर्म, बौद्ध धर्म, जैन धर्म, सिख धर्म और अन्य अनेक धार्मिक परंपराएँ यहाँ सह-अस्तित्व में हैं। भारतीय त्योहार रीति-रिवाज, और संस्कार इस विविधता और समरसता को प्रतिपादित करते हैं।

भारतीय ज्ञान परंपरा हमारी धरोहर है जो हमें अपनी संस्कृति, इतिहास और सभ्यता की गहराई और व्यापकता से परिचित कराती है। यह परंपरा हमें न केवल भूतकाल से जोड़ती है बल्कि वर्तमान और भविष्य के लिए भी एक मार्गदर्शक के रूप में कार्य करती है।

भारतीय वैदिक जीवन का इतिहास अत्यंत प्राचीन और समृद्ध है। यह इतिहास चार वेदों - ऋग्वेद, सामवेद, यजुर्वेद और अथर्ववेद - पर आधारित है। वैदिक युग भारतीय सभ्यता का प्रारंभिक काल है जिसे मोटे तौर पर 1500 ईसा पूर्व से 500 ईसा पूर्व तक माना जाता है। यह काल धार्मिक, सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण है।

वैदिक साहित्य -

1. **ऋग्वेद:-** ऋग्वेद सबसे प्राचीन और महत्वपूर्ण वेद है। इसमें लगभग 1028 सूक्त हैं जो विभिन्न देवताओं की स्तुतियों से संबंधित हैं। यह वेद धार्मिक कृत्यों और अनुष्ठानों के लिए प्रमुख स्रोत है।
2. **सामवेद:-** सामवेद मुख्यतः संगीत और स्तुति से संबंधित है। इसमें ऋग्वेद के अनेक मंत्रों को संगीतबद्ध किया गया है। इसका उपयोग विशेषकर यज्ञों और अनुष्ठानों में किया जाता था।
3. **यजुर्वेद:-** यजुर्वेद यज्ञों और अनुष्ठानों के कर्मकांडों का वेद है। इसमें यज्ञों के लिए आवश्यक मंत्र और अनुष्ठानिक प्रक्रियाएं वर्णित हैं। यह वेद दो भागों में विभाजित है, कृष्ण यजुर्वेद और शुक्ल यजुर्वेद।
4. **अथर्ववेद:-** अथर्ववेद में जादू-टोने, चिकित्सा और घरेलू अनुष्ठानों के मंत्र शामिल हैं। यह वेद समाज के सामान्य जीवन से संबंधित है और इसमें स्वास्थ्य, समृद्धि और कल्याण के लिए विभिन्न अनुष्ठानिक विधियों का वर्णन है।

वैदिक समाज -

1. **सामाजिक संरचना:-** वैदिक समाज प्रारंभिक काल में सरल और समरूप था। आरंभिक वैदिक काल में कोई कठोर जाति व्यवस्था नहीं थी। समाज चार वर्णों में विभाजित था - ब्राह्मण (पुजारी), क्षत्रिय (योद्धा), वैश्य (व्यापारी), और शूद्र (सेवक)। यह विभाजन कर्म के आधार पर था जन्म के आधार पर नहीं।

2. **परिवार और विवाह:-** वैदिक समाज में परिवार को सामाजिक इकाई माना जाता था। पिता परिवार का मुखिया होता था। विवाह एक महत्वपूर्ण संस्था थी और इसे धार्मिक अनुष्ठान माना जाता था।

आर्थिक जीवन:- वैदिक काल में अर्थव्यवस्था कृषि पर आधारित थी। लोग खेती, पशुपालन और व्यापार करते थे। बार्टर प्रणाली का उपयोग किया जाता था सोना, चांदी और अन्य धातुएँ भी विनिमय के माध्यम के रूप में उपयोग की जाती थीं।

धार्मिक जीवन:- धर्म वैदिक जीवन का केंद्र था। यज्ञ और अनुष्ठान महत्वपूर्ण धार्मिक क्रियाएँ थीं अग्नि, इंद्र, वरुण, सोम आदि देवताओं की पूजा की जाती थी। यज्ञों का आयोजन समृद्धि, शांति और कल्याण के लिए किया जाता था।

सांस्कृतिक जीवन:- वैदिक समाज में शिक्षा का महत्वपूर्ण स्थान था। गुरुकुल प्रणाली के माध्यम से शिक्षा दी जाती थी। वेद, उपनिषद और अन्य धार्मिक ग्रंथों का अध्ययन किया जाता था। संगीत, नृत्य और कला का भी महत्वपूर्ण स्थान था।

भारतीय वैदिक जीवन का इतिहास न केवल भारत की सभ्यता और संस्कृति का आधार है, बल्कि यह विश्व इतिहास का भी महत्वपूर्ण हिस्सा है। यह काल हमें धार्मिक, सामाजिक और सांस्कृतिक दृष्टिकोण से मूल्यवान धरोहर प्रदान करता है।

निष्कर्ष:- भारतीय ज्ञान परंपरा हमारी धरोहर है जो हमें अपनी संस्कृति, इतिहास और सभ्यता की गहराई और व्यापकता से परिचित कराती है। यह परंपरा हमें न केवल भूतकाल से जोड़ती है, बल्कि वर्तमान और भविष्य के लिए भी एक मार्गदर्शक के रूप में कार्य करती है। भारतीय ज्ञान परंपरा का अध्ययन और पालन हमें एक संतुलित, स्वस्थ और समृद्ध जीवन जीने की प्रेरणा देता है।

आधुनिक संदर्भ पुस्तकें:-

1. "A History of Indian Philosophy" - सुरेंद्रनाथ दासगुप्ता द्वारा रचित।
2. "The Wonder That Was India" - ए.एल. बाशम द्वारा रचित।
3. "Indian Philosophy" - सर्वपल्ली राधाकृष्णन द्वारा रचित।
4. "The Art and Architecture of India" - बनेडिक्ट आर. ओ. थ्रस्टन द्वारा रचित।
5. "Ayurveda: The Science of Self-Healing" - डॉ. वसंत लाड द्वारा रचित।

सम्मान प्राप्ति के कुछ पल

अतिथि सत्कार



GPS Map

Madhuri Kothar, Madhya Pradesh, India
CV88+4HJ, NH 75, Madhuri Kothar, Sidhi, Madhya P
India
Lat 24.415339°
Long 81.866641°
23/09/23 02:54 PM

सम्मानित करते हुए कुछ पल



भारतीय ज्ञान परम्परा

अतिथि सत्कार के कुछ पल

योगासन करते हुए कुछ लम्हे



महाविद्यालय के प्रांगन में
कुछ बीते हुए यादे

